स्मृति शेष

स्मृति शेष

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

SMRITY SHES (स्मृति शेष)

Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-81-936422-3-8
दाम: 251/- (भा.रु.)

तृतीय संस्करण: 2023 (प्रथम संस्करण: 2017)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल



ई संस्करण 'स्मृति शेष'

अपन पौत्र 'रौशन कुमार मण्डल'क स्मृतिकेँ

जे 24 मार्च 2015-के परिवारमे आएल आ 30 दिसम्बर 2016-के चलि गेल

अनुक्रम:

स्मृति शेष

तीस दिसम्बर, शुक्र दिन। 2016 इस्वी। साँझक सात बजे ब्रह्मानन्द बाबा बीतैत दिनक साँझ आ ऐगला दिनक पैछला साँझमे अपन अराम-विश्राम करैबला जगहपर असगरे शोकाकुल बैसल छला। दिनुका पहिल उखड़ाहामे जे दूटा रोटी जलखैक रूपमे खेने छला, बस् ओतबे आइ दिन भरिक अहार भेटल छेलैन। नित्य एगारह बजेमे नहेनिहार आइ तीन बजेमे नहेला, जखन बच्चाक पार्थिव शरीरकेँ असमसान पहुँचौल गेल। ओना, दिनक भानस परिवारमे भऽ चुकल छेलैन, मुदा तेहेन बेर ओ घटना भेल जे ओ भानस कएल भोजन बरतनेमे पड़ल छल।

नहेला पछाइत खेबाक इच्छा ब्रह्मानन्द बाबाकेँ जरूर भेलैन मुदा भोजन रोकबा-ले तेतेक दूत-भूत मनक चारूकातसँ ऐ रूपेँ घेर लइ छेलैन जे मनक इच्छा मनेमे घुरिया-फिरिया जानि, मुदा मुहसँ निकालैक साहसे ने होइन। साहसो केना होइतैन, एक दिस परिवारमे सभसँ ऊपर–उमेरो आ खाढ़ियोमे–होइक नाते जँ वएह नइ सहि सकता तँ दोसर केना सहि सकत। मुदा सहबो तँ सहब छी, एक अन्न-पानिक सहब भेल, दोसर बात-विचारक संग सुख-दुखक। तहूमे परिवारक रूदन आ समाजक जिज्ञासु रूदनक धार बहिये रहल छेलैन।

चौकीपर बैसल ब्रह्मानन्द बाबा अपन बीतल, बीतैत आ अबैबला काल्हिक संध्या-बन्धन कऽ रहल छला, मुदा बान्हे कुबान्ह भऽ जाइन। कुबान्ह ई जे बीतल नअ घन्टा शोके-शोक, दुखे-दुखमे

बीतल छेलैन आ अबैबला बीतैत रातिक भोजनक आशा सेहो नहियेँ छेलैन। काल्हिक एहेन कठिन समय पार कऽ सकब की नहि, से मने-मन ब्रह्मानन्द बाबा विचारि रहल छला। माने ई जे राति भरिक साहित्यिक कार्यक्रममे जवाबदेहक रूपमे पार करब छेलैन। जवाबदेही एहेन जे कहीं कार्यक्रमे ने भँसिया जाए। एहेन भार निमाहैले तँ कन्हो मजगूत चाही जे भोजनेसँ शरीरकेँ भेटत, सएह हेरा गेल अछि।

गणितीय दौड़मे दुनू दिस ब्रह्मानन्द बाबाकेँ बाधा बाधित कैये रहल छेलैन। तैपर मन कुदि-कुदि अपन स्मृति दिस दौड़-दौड़ जाइन। जेकरा ब्रह्मानन्द बाबा शरीरान्त बुझि टारि कऽ बहटारए चाहै छला, वएह छिड़िया-छिड़िया मनकेँ चारूभरसँ घेर लैत रहैन।

परिवारमे ओहन घटना भेल जइमे एकटा अचेत बाल-बोधक अन्त भेल। चूक केतए भेल ई जँ परिवारक लोक नहि गुणि लेत तँ आगूक गुणाधीश गुणातीत केना भऽ सकैए। मुदा बाबाक मनमे ईहो नचैत रहैन जे अखन ऐ बातकेँ माने ऐ घटनाकेँ विचारबसँ नीक ई हएत जे तत्काल वातावरणकेँ पहिने असथिर कएल जाए। जँ विचार-विमर्शक क्रममे कोनो मारूख विचार सोझामे आबि जाए आ चामेक मुँह छी, कहीं ओ विचार मनमे छड़ैप कऽ मुँह होइत निकैल गेल, तखन तँ ओ आरो मारूख हएत! तँए नइ विचारबे बेसी नीक...।

मुदा लगले फेर बाबाक मनमे उठि गेलैन जे अनेको जिज्ञासु जिज्ञासा करए जइ घटनाक लेल आबि रहल छैथ आ घटनाक मर्म स्थलकेँ देखिए ने पाबि रहल छैथ, तखन तँ ओ अधे-छिधे जिज्ञासा ने भेल। ..असमंजसमे पड़ल ब्रह्मानन्द बाबा निश्चये ने कऽ पाबि रहल छला जे की नीक हएत। आँखिक सोझक जे घटना अछि

ओकरा जेते नीक जकाँ अखन विचारि सकै छी, ओते बसियाएलमे थोड़े हएत। तहूमे कौल्हुका काज आरो जटिल अछि। एहनो तँ भइये सकैए जे जहिना आइ परिवारक घटना भेल तहिना काल्हि समाजोमे भऽ सकैए, तखन तँ परिवारक विचारकेँ अगुयाएबो नीक नहियेँ हएत, तँए अखने विचारब बेसी नीक...।

तही बीच ब्रह्मानन्द बाबाकेँ समाजक सरोकारी बहिन, जिनकर घर बगलेमे छैन, पहुँचली। अगवास, बाड़ी-झाड़ी खेत-पथार सेहो दुनू गोरेक एक्केठाम छैन। दिन-राति पड़ोसीक रूपमे दुनू आइ सत्तैर बर्खसँ संगे जिनगी जीबैत आबि रहल छैथ। ओना बिन्दा चारि मास ब्रह्मानन्द बाबासँ जेठ छथिन, मुदा दुनूक बीच वएह 'रे-टे'बला सम्बन्ध तहियेसँ माने बच्चेसँ संगे आबि रहल छैन, जे अखनो पोता-पोतीसँ भरल घर रहितो, ओहने छैन।

अपना संग बिन्दा स्टीलक थारीमे दस-बारहटा रोटी आ बाटीमे तरकारी नेने, ई सोचि पहुँचली जे दिनुका भानस ब्रह्मानन्दक परिवारमे रान्हले रहि गेल, शोकाकुल परिवार रहने अखनो माने रातियोमे भानस नहियेँ हेतैन आ काल्हियो कखन हेतैन तेकरो ठेकान नहियेँ अछि। सियान-चेतन सहियो सकैए मुदा परिवारमे जे दूटा बुढ़ आ तीनटा छोट-छोट बच्चा अछि ओ केना सहि सकत...।

ओना ब्रह्मानन्द बाबा अपन कोठरीक केबाड़ अड़का कऽ असगरे बैसल विचारि रहल छला। तहीकाल बिन्दा केबाड़ खोलि कोठरीमे पहुँचली।

अबिते बिन्दा परोसल थाड़ी आगू बढ़बैत बजली-

"जे दिनक दोख छल से भेल, चिन्ता छोड़ह, खा लएह।"

बिन्दाक मुहसँ खसिते ब्रह्मानन्द बाबा फफैक-फफैक कऽ कानए लगला- "हमर बेल केतए गेल, हमर बेल की भेल..!"

ओना बिन्दो अनुमान केली जे 'बेल' पोताकेँ कहै छैथ।

बजली- "किछ ने भेल, जहिना आएल तहिना गेल। ई दुनियाँक रीति छिऐ, सभकेँ होइत आएल अछि, आगुओ होइत चलैत रहत।"

एक बर्ख नअ मासक रोशनक प्राणान्त पानिमे कठुआ कऽ भेल। रातियेसँ चलि अबैत शीतलहरी अपन विकराल रूप पकैड़ नेने छल।

भिनसुरका पहर। श्रमशील परिवार रहने परिवारक सभ अपन-अपन काजमे लगि चुकल छला। कियो अँगना-घर काजमे तँ कियो माल-जालक पाछू। ओ बच्चा–बेल–जाड़क सभ वस्त्र पहीरने–माने जूत्ता-मौजा आ सूती कपड़ासँ लऽ कऽ ऊनी स्वीटर, कोट, टोपी सभ किछु पहीरने–हाथमे एकटा गिलास नेने चापाकलक आगू जे पानिक खाधि छै, तइमे गिलासमे पानि लिअ गेल। ओना जाड़ रहौ कि गरमी, थाल-पानिसँ ओइ बच्चाकेँ विशेष सिनेह छेलैहे। चंगला बच्चा तँए नजैरसँ ओझल होइते छल। गिलास नेने जे आँगनसँ निकलल, से दोसरो-तेसरो देखलक। मुदा सभ दिन कोनो-ने-कोनो वस्तु नेने निकैलते छल, तँए कियो किए ओहूपर विशेष नजैर दइत। पानि लिअ खाधिमे जखन गेल, भरिसक तहीकाल ओ पिछैड़ कऽ खाधिमे चलि गेल। ओना, खाधियोकेँ बहुत गहींर नहियेँ कहल जा सकैए, मुदा एक-डेढ़ हाथक बच्चाक लेल तँ गहींरगर छेलैहे। तहूमे जहिना बर्फ जकाँ समय तहिना पानि सेहो छेलैहे। परिवारजन रहितो कियो ओइ बच्चा दिस नइ तकलक। सदिकाल खुर-खुर करिते रहैत छल। तकैक कोनो शंको ने रहइ। दिन-दिनक वृत्ति छेलइ। किछुए कालमे बच्चा जाड़सँ तेना आक्रान्त भऽ गेल जे प्राणान्त भऽ गेलइ! जखन बच्चापर नजैर गेल आ ताक-हेर शुरू भेल तखनो ब्रह्मानन्द बाबाक मन गबाही दइते रहैन जे भरिसक

कियो चोरा कऽ औनाबै दुआरे रखि नेने अछि। बच्चाक माइये खाधिसँ मुइल बच्चाकेँ निकालि आँगन आबि रखैत बजली-

"हमर रोशन..!"

ओना नीको समयमे आ अधलो समयमे तँ निसचिते मतो-पिता, भाइयो-बहिन आ ददो-दादीक नजैर ओइ बच्चापर रहिते छल मुदा पाँच दिन पहिने ब्रह्मानन्द बाबाक परिवारमे एहेन दुखद घटना भेल छेलैन जे खसैत-खसैत परिवार बँचलैन। मुदा घटनाक एहेन विकराल रूप छल जे मने नहि, केतेको गोरेक शरीरोकेँ नीक जकाँ आक्रान्त अखनो केनहि छल। होइतो अहिना छै जे परिवारे आकि समाजेमे जँ कोनो मारूख घटना घटैए तँ परिवारो आ परिवारजनकेँ सेहो झकझोरि दइते अछि। जइसँ परिवारक अनेको जरूरियात काज सभपर सँ नजैर हटिये जाइ छइ। तँए कहलो जाइ छै जे 'विपत्ति असगरे नइ अबैए, एकक संग अनेको अबिते अछि।'

रोशन आ कृष्णा दुनू सहोदर भाए, ब्रह्मानन्द बाबाक तेसर बेटाक दुनू सन्तान। कृष्णा जेठ, जे साढ़े तीन बर्खक अछि आ रोशन छोट जे एक बर्ख नअ मासक छल। रोशनक मुँहमे ऊपर छह गोट दाँत आ निच्चाँ चारिटा दाँत सेहो जनैम गेल छल। दौड़ैत चलिते छल। बोली तँ साफ नइ भेल छेलै मुदा किछु शब्द साफ जरूर भइये गेल छेलइ। कखनो 'बा' ब्रह्मानन्द बाबाकेँ कहै छेलैन, तँ कखनो सिखौलापर 'बबा' सेहो कहै छेलैन।

ब्रह्मानन्द बाबा कृष्णाकेँ सिनेहसँ 'बेल' नाओं रखने छैथ। मास दिनसँ रोशन सेहो अपनाकेँ बाबाक बेल बुझए लगल छल, तँए बाबाक मुहसँ 'बेल' निकैलते रोशन बाजि उठैत छल- "ऐँ।"

'ऐँ' कहि दौड़ कऽ लगमे आबि हाथमे जे कोनो औजार वा खाइ-पीबैबला वौस देखै छल ओ छीन लइ छेलैन। खाली वौसेटा नइ

छीनै छेलैन, संग लगि बाड़ी-झाड़ीक काज दिस सेहो विदा भऽ जाइ छेलैन।

बच्चा पेब ब्रह्मानन्द बाबाक मनमे अपन जिनगीक सार्थकता सेहो नचिते रहै छेलैन। जिनगीक सार्थकता ई जे एक समय माने एक क्षण-पल जँ एकसँ ऊपर अनेक क्रियाक संग चलए। से ब्रह्मानन्द बाबाकेँ 'बेल' पेब होइ छेलैन। कहलो जाइ छै जे उमरदारक माने बुढ़-बुढ़ानुसक प्रथम काज भेल बाल-बोधक संग रहि किछु सिखाएब। से भेटिये जाइ छेलैन।

ओना ब्रह्मानन्द बाबा खेत-पथारमे काज करैबला अपन हथियाएल औजार–हँसुआ, खुरपी, टेंगारी, कुड़हैर, हथौरी, बैसला, आड़ी इत्यादि जीवनोपयोगी औजार अपना-ले तँ रखनहि छैथ, मुदा तँए बेल-ले नइ रखने छैथ सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। भोथियाएलो आ आकारोमे छोट अनेको औजार बेल-ले सेहो रखने छैथ। बेल चलि गेल मुदा ओ औजार जे बेलक छल, ओ तँ छैन्हे। ओना किछु एहनो तँ ऐछे जे बेल अपन औजार बाबाक हाथमे धड़बैत हुनकर हाथक छीन लइ छेलैन। मुदा ओहन बाल-बोधसँ जँ काज बाधित होइक सम्भावना हएत, तखनो तँ दूटा उपाय अछिए, एकटा जे ओइ हाथियारसँ भरिगर काज धड़ा थका दिऐ वा मने फुसला कऽ बहका दिऐ। ..ब्रह्मानन्द बाबा सएह करै छला। जखने पोता हाथक औजार छीनै छेलैन कि आड़िपर बैस गमछामे बान्हल पानक पोटरी खोलि डकै छला- "के पान खाएत?"

जहिना घर-परिवारसँ हटलो गीत-नाद वा अन्य कोनो आवाज बाल-बोध जँ सुनैए तँ अपनो ओही आवाजक अनुकरण करए लगैए, तहिना बेलबो 'पान' सुनिते बाजि उठै छल- "हम।"

बेलबाकेँ राजी होइते बाबा बजै छला- "जे सभ पान खाएत ओ सभ एतए औत।"

‘एतए औत’ सुनिते बेलबा हाथक छीनल हथियार ओतै रखि दौड़ल आबि पानक वौसकेँ उनटबए-पुनटबए लगैत छल। जेना-जेना देखैत तेना-तेना करबो करैत तँए बाबा पहिने पानक पात फाड़ि एक-टुकड़ी दऽ दइ छेलखिन। जखन जरदा बेर अबै छल तखन मुन्ना लगले जर्दाक शीशी मुँहमे झाँड़ि कहै छेलखिन- “आब चलै चलू।”

‘चलै चलू’ सुनिते बेलबा अपन औजार–खुरपी–पकैड़ आड़िपर खाधि खुनए लगै छल...।

ब्रह्मानन्द बाबा चौकी पर बैसल तेते जोड़सँ फफकला जे आँगन तक कानबक आवाज पहुँच गेल। ओसार पर बैसल महिला समुदाय, जे भरि दिनक कानबक विराम नेनहि छेली आ बेलबेक चर्च करै छेली। बाल-बोध बेलबा, अचेत बेलबा, ओ केना जिनगीक मर्मकेँ बुझैत ओ केना बुझैत जे आगि-पानि जीवन दइतो अछि आ लइतो अछि। ओ केना बुझैत जे जहिना बाल-बोध-ले शीतलहरीक शीताएल पानि जनमारा अछि तहिना तँ आगियो अछि किने...।

बाबाक कानबक आवाज सुनि महिला समूहसँ एक बजली-

“भरि दिन बुड़हा कनिते रहि गेला!”

दोसर बजली- “कहुन जे पोते लागल अपनो चलि जेता! अहिना सभ दिनसँ होइत एलैए। मेला-ठेलामे जहिना बाल-बोध खेलौना कीनैए आ खेलाइत-खेलाइत रस्तेमे फोड़ि लइए, सएह बुझथुन।”

मुदा बीचमे बैसल, जे क्षने किछ पहिने मुँह बन्न केने छेली, ओ फफैक उठली- “आब, बाबाक कागत-पेन के छिनतै..!”

बेल सिर्फ ब्रह्मानन्दे बाबाक नइ छेलैन। परिवारक सबहक छल। माइक ‘रोशन’, बापक ‘लल्ला’, दादीक ‘बौआ’, बड़का भाइक ‘वौका’ इत्यादि सबहक अपन-अपन छल। सभ छल नहि,

अखनो अछि। मालक घरमे दादीक बौआ ऐं-ऐं करैत गोबर-गोंत बुढ़िया माँकेँ देखैबते अछि, बिसरत ओइ दिन जइ दिन दुनियाँकेँ बिसैर अपने विदा हेती...।

अस्मृतो तँ असमृति छी, ओ तँ कियो अपने जीता जिनगी धरिक ने गारंटी दऽ सकैए। हँ एहनो स्मृति तँ होइते अछि जे महाभारतक अभिमन्यु जकाँ बाल-बोधेक रूपमे ठाढ़ अछि। हमरो बेलक मृत्यु ओइ परिस्थितिमे भेल जइ परिस्थितिमे परिवार-समाजक बीच बेवस्थाक लड़ाइ फँसल छल। पोने दू बर्खक बेलबा किए माइक दुख बुझैत जे परिवारमे नारीक जिनगी अखन केते भुमकम जकाँ डोलि रहल अछि। मुदा बेलबो तँ बेलबा छी ओ तँ माएकेँ कहबे करत किने जे माए हम अचेत छेलौं जीवन-मरण नइ बुझलौं, तूँ सचेत हो जे भविसमे एहेन नइ हौउ।

विस्मित ब्रह्मानन्द बाबाकेँ देखि बिन्दा बजली- "खेलौना बनि आएल छल आ खेलौने जकाँ चलि गेल, तइले एते दुख-पीड़ा केलासँ की हेतह?"

चारि मास जेठ बहिनक बात सुनि ब्रह्मानन्द बाबा बजला-

"हमर बेलबा खेलौना नइ छल, ओ तँ दुनियाँक खेलक खेलाड़ी छल।"

तैबीच ब्रह्मानन्द बाबाक पत्नी कृष्णाकेँ हाथ पकड़ने पहुँचली। कृष्णाक मनमे अपन प्रश्न छल आ किशोरीक मनमे अपन विचार छेलैन। तैबीच बिन्दा तरकारी-रोटी सजल थारी किशोरी दिस बढ़ौली। किशोरी हाथसँ पकैड़ लेलैन। पकड़िते ब्रह्मानन्द बाबा बजला- "पहिने बाल-बोधकेँ दियौ।"

निच्चाँमे थारी रखि किशोरी एकटा रोटी आ तरकारी कृष्णा दिस बढ़ौली। ओना देखा-देखी कृष्णो घटनाक पछाइत अन्न नइ

खेने छल, माने भात-रोटी नै खेने छल। मुदा बिस्कुट आ दोकानक चटपटौआ विन्यास खा मनकेँ थीर तँ रखनहि छल। हाथमे रोटी लइसँ पहिने कृष्णा बाजल- “बाबा, अपन रोशन बौआ झंझारपुर डॉक्टर ऐठाम गेल अछि किने?”

कृष्णाक बात सुनि ब्रह्मानन्द बाबाक छाती दहैल गेलैन। केना अबोध बच्चाक प्रश्नकेँ काटता! ओहो तँ बच्चाक ओ दृश्य–पिताक हाथमे झाँपल बच्चा मोटर साइकिलसँ डॉक्टर ऐठाम लऽ गेल छल–देखने रहए, तेकर पछाइत धिया-पुताक संग खेलेमे लगि गेल छल...।

ब्रह्मानन्द बाबाकेँ मनमे उठलैन- अपना संग बच्चोकेँ दुख-सन्ताप देब नीक नहि, बजला- “हँ, रोशन बौआ झंझारपुर डॉक्टर ऐठाम गेल अछि। खाधिमे बौआ डुमि गेल छेलै किने..!”

अपन प्रश्नक उत्तर पेब बड़का बेलबा माने कृष्णा हाथमे रोटी लऽ खाए लगल। कृष्णाकेँ खाइत देखि किशोरी ब्रह्मानन्द बाबाकेँ कहली- “घरक गारजन भऽ अहीं कनबै तखन और लोक चुप रहत। अहाँ मन थीर करू।”

थीर होइते ब्रह्मानन्द बाबाक मनमे उठलैन- सुग्गा उड़ि गेल। आब केकरा पाकल लताम आ बैरक झाड़ परक पाकल तिलकोर देब..!

❑

शब्द संख्या : 1941, तिथि : 6 जनवरी 2017

मनकेँ फुसलबै छी

माघ मासक भोर। पनरह दिन पहिनहिसँ अबैत शीतलहरी पनरह बर्खक जबान जकाँ अपन जुआनी सोलहन्नी प्रदर्शित कऽ रहल अछि। गाछपर सँ टप-टप ओसक पलाइत पालाक रूप दुनियाँकेँ, चारू कातक वायुमण्डलकेँ दुधिया बना देने अछि। गाछ-बिरीछपर चिड़ैयो-चुनमुनीक बोलती जाड़े कठुआ कऽ कठिया गेल अछि।

ओना आजुक माघ आ आइसँ पनरह बर्ख पूर्वक माघमे, जाड़ मास रहितो जीवन शैली बदलने बेवहारमे किछु अन्तर अनबे केलक अछि। मुदा जड़कल्लामे कमी आएल अछि, सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

जीवन शैलीमे अन्तर ई आएल अछि जे पहिने समाजक अधिकांश परिवारकेँ जाड़क अनुकूल वस्त्र नइ छल जइसँ अपन रक्षा नार-पुआर आ घूरक अगियासीसँ करैत आबि रहल छल, जे आब घूरक बदला हीटर आ नार-पुआरक बदला ऊनी वस्त्रक संग सीरक-कम्मर सेहो आबि गेल अछि।

गोइठा-करसीक घूरकेँ मन्नु बाबा कड़चीक टुकड़ी आ निघेँससँ पजाइर रहल छला। तही बीच ओछाइनपर सँ उठि, बिनु जूत्ते-मोजा आ बिनु पेन्ट–कोट आ टोपी पहीरने बेलबा दौड़ल बाबा लग आबि बाजल- “बाबा, जाड़ होइए।”

तैबीच वस्त्राभूषण करबा-ले बेलबाक माए पाछूए-सँ बेलबाकेँ

पकैड़, कोरामे उठा आँगन दिस बढ़ली। कोरामे जाइते बेलबा कानए लगल। ओना घूर पजैर गेल छल, आगिक लहकी उठि चुकल छल, जे बेलबो देखैत रहए, जेकरा ओ जाड़ भगबैबला बुझैत अछि, ओना वस्त्राभूषणो जाड़े भगबैबला छी मुदा तैयो बेलबाक मन उड़ैक कारणक पाछू दूटा कारक भेल। पहिल कारक छल मन्नु बाबाक ऊपर जिनगीक भरोस आ दोसर कारण छल आगिक धधड़ाक लहकी।

होइतो अहिना छै जे कोनो गाछपर चढ़ला पछाइत ऊपरसँ निच्चाँ देखलापर जँ कोनो लभगर वौस देखि उतड़ैले चाहैए आ उतरैकाल गाछपर चढ़ैक क्रिया बिसैर जाइए, तहिना बेलबोकेँ भेल।

आँगन पहुँचैत-पहुँचैत बेलबा चुप भऽ गेल। ओना माए बेलबाक मनकेँ की फूसि बाजि फूसिया लेलैन से तँ बेलबे जानत आकि बेलबाक माइए जनती, मुदा मालक थैरक घूर जे अँगनासँ सटले अछि, तैठामसँ मन्नु बाबा अकाइन कऽ सुनलैन तँ बुझि पड़लैन जे बेलबा कानब बन्न केलक। मुदा फेर भेलैन जे कपड़ा पहिरबै काल तँ जरूर कानत, ओ तखने नहि कानि सकैए जखन ओ कोनो नमहर लोभे नइ लोभाएल हुअए। मुदा जे हौउ मन्नुओ बाबाक घूर पजैर गेलैन आ बेलबो जाड़सँ लड़ैबला सिपाही जकाँ बनि-ठनि कऽ आँगनसँ घूर लग आबि गेल। सकतगर पेन्टो, मोजो आ कोटो बेलबाक देहकेँ अपना जुतिसँ बेकाबू कऽ देने छल, जइसँ घूर लग बैसैक गरे ने लगइ। तँए दू हाथ हटले बेलबा ठाढ़ भेल, बामा हाथमे फास्ट फुडक पोलिथिन रहै, जइमे सँ दहिना हाथे एकटा निकालि मुँहमे लैत बाजल- “बाबा, एकटा हिसाब पुछौं?”

बेलबाक बात सुनि मन्नु बाबा छगुन्तामे पड़ि गेला जे जइ छौड़ाकेँ धरियो पहिरैक लूरि नइ छै, ओ हिसाबक बात उठबैए..! मुदा लगले मन थमि गेलैन। थमिते दोहरा कऽ मनमे उठलैन जे जँ

हिसाबक बात बेलबा उठबए चाहैए तँ ओकरा हिसाबेसँ ने हिसाब लगाएब। ई तँ नइ ने जे बाल-बोधक मनकमनाकेँ मुड़ीए मचोड़ि दिऐ...। मन्नु बाबा बजला-

"बेल, तूँ हिसाब केतए-सँ अनलह से कहाँ कहलह?"

जेना टटके बुझल रहइ, तहिना बाबाक बात सुनिते बेलबा बाजल- "माए कहलक।"

माइक नाओं सुनिते मन्नु बाबाक मन थमलैन। थमिते उठलैन- तीन पीढ़ीक प्रश्न अछि। अपनो आ बेलबो दू सिरापर भेलौं, बीचमे तँ माए छइहे।

आँखि उठा मन्नु बाबा बेलबाक आँखिपर देलैन जे कि बेलबा धिया-पुताक खेलौना बुझि झटहा माड़लक आकि नजैरमे ओते पानियोँ छै जे पकैड़ पौत? मन घुमलैन, घुमिते नचलैन, देवीस्वरूपा भगवतीक ज्योति बेलेसँ अबैत अछि, सएह ने तँ बेलबो छी..?

जी-जाति मन्नु बाबा बेलबाकेँ कहलखिन-

"बौआ, ई दुनियाँ सबहक छी, तोरो हिसाबक हिसाब अही दुनियाँमे छह, तँए जेते ताकल हुअह तेते तक ताकिये सकै छह किने।"

मन्नु बाबाक बात बेलबा सुनियेँ रहल छल कि चटपटौआ गुल्लीमे मिरचाइयोक बीआ आ मरीचक टुकड़ी एक्के संग जीहपर पड़ि गेलइ, पड़िते बेलबा कानए लगल। मुदा बाबा-ले धैन सन, असथिरसँ बजला- "की भेलै बेलबाकेँ?"

बाबाक बातमे गीतक स्वर जकाँ बेलबाकेँ बुझि पड़लै। तइसँ कनी कानब ठमकलै। मुदा अपन दवाइ जेना बेलबा अपने बुझैत हुअए तहिना पानिक कलपर विदा भेल। संजोग नीक रहल जे बेलबाक माइयो कलेपर छेलखिन।

पानि पीब बेलबा पुन: बाबा लग पहुँच खाए लगल। तीन-चारिटा गुल्ली जखन खेलक तखन पैछला मिरचाइ-मरीचक लहर सोलहन्नी दबलै। तखन फेर बेलबा एकटा गुल्ली मुँहमे लैत बाजल-

"बाबा, हमर बात बिसैर गेलिऐ?"

पौने दू बर्खक बेलबा सन पोता लग मन्नु बाबा झूठो तँ नहियेँ बाजि सकै छला। कहलखिन- "बौआ बेल, ई दुनियेँ छी खेल। तँए जे भेल से नीके भेल। कोनो कि तोहर एकेटा हिसाब पछुआएल छह। पहिने ई बाजह जे कोन हिसाब लेबह?"

मन्नु बाबाक बातो बेलबा सुनै छल आ खेबो करै छल। तँए मन बेसी आगू-पाछू नइ घुसकैत रहइ। तहूमे पानि पीविये नेने छल, तँए कण्ठ सुखैक संभावना सेहो नहियेँ रहइ।

जहिना घर बन्हैक सभ समचा जुटि गेने घर उठैक आशा बनि जाइत तहिना ने विचारक अनुकूल परिस्थिति जुटने विचारोकेँ ठाढ़ होइक आशा सेहो बनियेँ जाइए...।

बेलबा बाजल-

"हमरो जिनगीक तँ हिसाब हेबा चाही किने?"

बेलबाक बात सुनि मन्नु बाबाक मन ठमकलैन। ठमैकते मनमे नव पोनगी देलकैन। नव पोनगीक माने अचेत जिनगीक प्रश्न आ सचेत जिनगीक प्रश्नक दूरी तँ अछिए। अचेत बेलबाकेँ ने धरिया पहिरैक, माने कोनो विचार धारण करैक लूरि नइ छै मुदा ओहो ने अही दुनियाँमे जीवित जिनगी पाओत, जेकरा अखन आगि-पानि आ हवाक बोध नइ भेल अछि, ओ केना बुझत जे जएह दाता छी वएह दानवो छी...।

मुदा लगले मन्नु बाबाकेँ भेलैन जे मनकेँ तँ फुसलाएब अछि। मुदा दू मनक बीचक ने प्रश्न अछि। जँ बेलबाकेँ फुसिया कऽ मना

लेब तँ अपन मन कहत जे बेलबा पोता छी किने, ओकरा जाबे नइ पबाएब ताबे अपन सूत–धार केना रस्तापर रहत..?

अग-दिगमे पड़ल मन्नु बाबा एक नजैर बेलबापर दैथ आ दोसर धरतीपर।

तैबीच पोलिथिनक गुल्ली लगिचा कऽ जखन एकटापर आबि गेल तखन बेलबा बाजल- "बाबा, हमर तँ बाल-बोध बात छी, तखन किए ने उत्तर दइ छी। आब हम खेलैले चलि जाएब।"

खेलैसँ पहिने जे खेलाड़ीकेँ खेलैले उत्प्रेरित करैत अछि से जँ पहिने बेलबाकेँ नहि बुझा देबइ तँ ओ आगिसँ खेलए जाएत आकि पानिसँ, तेकरो तँ ठेकान नहियेँ अछि...। पोता-बाबाक बीच जे झोंझ बाट अछि ओही बाटपर ठाढ़ भऽ मन्नु बाबा बजला- "बौआ बेल, तोरा खेलाइ-ले हम नइ रोकै छिअ। तूँ अपने अपन बात सोझरा कऽ नइ बजै छह।"

बाल-बोध बेलबा दुनियाँक की देखलक जे अपन हिस्सा लेत। माइक आँचरसँ तँ अखन निकलबे कएल अछि किने। मुदा...।

दोसर दिनक वएह भोरुका घूर, मन्नु बाबा गोइठा-करसीक संग कड़ची-निर्घेंसक घूर पजाइर रहला अछि मुदा मन कानि रहल छैन।

बेलबा दुनियाँ छोड़ि चुकल छल। मुदा बेलबाक प्रश्न तँ अखनो मन्नु बाबाक मनमे ठाढ़े छैन! केना मनकेँ फुसलौता, मुदा बिनु फुसलेनौं तँ...।

❑

शब्द संख्या : 1023, तिथि : 10 जनवरी 2017

पकिया चेला

पूस मासक शीतलहरीक आठ बजे भिनसुरका समय, सूर्य तँ धाही नइ देने मुदा अन्हराएल समय किछु फरिछा तँ गेले छल।

अपन जिनगीक लीला जीवन काका शुरू कऽ नेने छला। माने ई जे घुरारियो आ चाहो-चुल्हीक ओरियान करबे छेलैन, डेढ़ियापर बैस टेंगारीसँ जरना टोनियबै छला कि आँगनमे रोशनक कानब सुनलैन।

अखन तक रोशन माने जीवन कक्काक पोता, ओछाइने धेने छल। तेकर कारण भेल जे तीन बजे भोरमे जे पछिया हवा चलल तइकाल रोशनक नीन टुटि गेल। भाय, सुतलमे ने लोक कनी-मनी कोढ़िपनोसँ जाड़-ठाढ़केँ अनठा दइए मुदा जागल बच्चा केना अनठा देत।

माइक सुतैक समय, तैठाम माइक जगौल बेटा थोड़े छी, बेटा जगौल माए छैथ तँए मने-मन तामस तँ रोशन बेटापर उठबे केलैन, वएह तामस अपन ओछाइन छोड़ा उठा देलकैन। काजो सोझहेमे रहैन, जे जाबे बेटा सुतत नहि, जाड़-ठाढ़क समय छी, जागल रहि जाएत आ ओछाइपर सँ उठि अपन देखल दुनियाँ दिस विदा हएत आ जँ सबा हाथ ऊँच चौकीपर सँ खसत तँ हाड़ो-पाँजर तोड़िये लेत, तखन तँ आरो पहपैट हएत, तइसँ नीक जे फुसला-बहला छाती लगा पहिने ओकरा सुता देब तखन अपनो सुतब।

ओना, बीचमे माएकेँ माने श्यामाकेँ एकटा बात ठहकबो

केलैन जे जन्मौटी बच्चा, जे सालसँ ऊपरक अछि, माने टहलै-बुलै-जोकर अछि आ दू सालक बीचक अछि माने अपनेसँ चौकीपर चढ़ै-उतरै आ कुदै-जोकर नइ भऽ गेल अछि, तैबीचक अपन ओछाइन केहेन हेबा चाही? ओना, जखनेसँ बच्चा कर उनैट घुसकए-फुसकए लगैए तखनेसँ धरतीसँ उठल ओछाइनपर सेहो माएकेँ विचार करबे करक चाहिऐन।

ओना बारह बजे रातिक पछाइत पछियाक झोंक उठल। बारह बजेसँ पहिने शीतलहरी छल, जइसँ ठंढपनक साम्राज्य तँ छेलैहे, मुदा ठाढ़ ठंढ छल जे पछिया पेब गतिशील भऽ गेल, जइसँ ओढ़नाक भीतर तीर जकाँ प्रवेश करैत ठंढ रोशनकेँ दागए लगल जइसँ नीन टुटि गेलइ। ओढ़ना सेहो ठंढपनसँ शीतल भऽ गेल। जेकरा पेटसँ उष्मा निकलै छल तेकरा पेटसँ सुष्मा निकलए लगल।

एहेन समयमे पौने दू बर्खक रोशन-ले सुखक नीन आनब माइक लेल परीक्षाक घड़ी छीहे। ओना, श्यामा चतुर माए छथिए, तँए चतुरता केलैन जे घरक खिड़की सभकेँ दोहरी ओढ़ना ओढ़ा बेटाक देहक जे गर्म कपड़ा सभ सुतैकाल निकालि कऽ सिरमामे रखने छेली, ओकरा पहिरौलैन। गर्म कपड़ा पहीरते रोशन टनटनाएल।

कपड़ा पहिरा माए बेटाकेँ छातीसँ सटा सीरक ओढ़ि ओछाइनपर पड़ि रहली। ओना, पहिने जिनका नीन आएल होनि, मुदा दुनूकेँ नीन आबि गेलैन।

श्यामा भोरमे फरिच होइते ओछाइनसँ उठि गेली मुदा रोशन सुतले रहल, आठ बजे नीन टुटलै। नीन टुटिते रोशन ओछाइनपर उठि कऽ बैस रहल। मुदा संजोग नीक रहने श्यामा तखन ओछाइन लग पहुँचल छेली। ओना उठि कऽ बैसते रोशन कानब शुरू कऽ देने छल।

कनैत रोशनकेँ श्यामा कोरामे उठा अन्हार घरसँ इजोतमे आनि नेने छेली। मुदा तैयो रोशन कनिते छल।

डेढ़ियेपर सँ जीवन काका रोशनक कानब सुनै छला। ओना ई बात मनमे छेलैन्हे जे बच्चाक भोरक कानबकेँ चुप करब, माइक काज छिऐन मुदा किछु बच्चा लगराह तँ होइते अछि जे लगले चुप नइ होइए। ओना रोशन से नहि अछि, मुदा मौसमक प्रतिकूलतो आ सुति कऽ उठबोक प्रतिकूलता तँ छेलैहे। जीवन कक्काक मनमे ईहो होनि जे अपन काज छोड़ि पहिने पोताकेँ चुप करी, किएक तँ सोझामे अपन बाल-बोधकेँ कानब नीक नहि। मुदा फेर लगले भेलैन जे ई काज हमर छी आकि पुतोहुक छिऐन? तेतबे नहि, बाल-बोधक लपौड़ीमे अपन जिनगीक क्रियाकेँ पछुआएबो तँ उचित नहियेँ कहल जा सकैए।

फेर भेलैन जे हम किछु छी तँ दू सीढ़ी हटल छी तँए हमरा-ले ओ काज–माने रोशनकेँ चुप करब–उचित हएत आकि माए-ले। ओ तँ हमरा जकाँ दू सीढ़ी हटल नहि छैथ?

आँगनमे रोशन अनघोल करैत। अकैछ कऽ माए पैरमे जूता पहिरबए लगली। टोपीसँ मोजा धरि माए भोरेमे पहिरा देने छेली।

ओना, रोशनकेँ श्यामा छाती लगा दूधो धरबए चाहली मुदा ओ नइ गछलकैन। पछाइत भिनसुरका जे किछु अहार बेटा-ले रखने छेली, एका-एकी सेहो सभ निकालि-निकालि देलखिन मुदा रोशन किछु ने गछलकैन। जइसँ श्यामाक मन तरे-तर जरए लगलैन। मुदा अपन दायित्वक बोध–बेटाकेँ बोधब–तेना सिरपर चढ़ि जानि जे बकारे बन्न भऽ जाइन। ओना, मने-मन ईहो होनि जे ई काज तँ अपने छी, तँए दोसरपर जँ किछु बजबो करब सेहो केहेन हएत।

रोशनो तँ रोशने छी, जेहने लगराह अछि तेहने जिद्दी आ तहूसँ

टपल एकबोलिया अछिए।

ओना रोशन घरसँ निकैलते संगी सभकेँ ताकए लगल, माने आन-आन बेदराकेँ जे अँगनोमे अछि आ आनो-आनो अँगनाक खेलैले अबिते अछि। मुदा ओ सभ निपत्ता छल। निपत्ताक कारण छेलै जे किछु पढ़ैले चलि गेल छल आ किछु बैट-बौल खेलैले, आ किछु मालक थैरक घूर लग बैसल छल। सबहक दुनियाँ छिऐ, सभकेँ अपन-अपन जिनगियो छै आ अपन-अपन लीलो तँ छइहे।

तही बीच श्यामाकेँ एकटा जुक्ति फुरलैन। जुक्ति फुरैक कारण भेलैन बाल-बोधकेँ पाइ चिन्हब। एकटा दू टकिया सिक्का घरसँ आनि श्यामा रोशनक हाथमे थमा देलखिन।

हाथमे सिक्का अबिते रोशनक मन सीकपर चढ़ि गेल, जइसँ पैछला कानबो आ रंग-रंगक खाइ-पीबैक वौसो बिसैर गेल। जूता पहीरिये नेने छल तँए बूलै-भंगै जोकर सेहो भइये गेल छल।

एकाएक माएकेँ अक्कछ लगाएब छोड़ि रोशन सोझे अँगनासँ निकैल डेढ़ियापर पहुँचते बाबाकेँ पगहरियासँ जारन टोनियबैत देखि लगमे जा हाथक पगहरिया पकैड़ लेलकैन। ओना जीवन कक्काक नजैर रोशनक सिक्कापर नहि पहुँचल छेलैन तेकर कारण छल जे रोशन मुट्ठी मूनि पाइकेँ दबने रहए।

पगहरिया पकैड़ते रोशनकेँ जीवन काका कहलखिन- “अहाँ-ले ते टेंगारी रखने छी, लिअ जारन काटू।”

अपना विचारे तँ जीवन काका बजले छला मुदा रोशनक हाथमे पाइ एने मन दोकानक लालू-खजानापर पहुँच गेल छल।

आगूमे राखल टेंगारीकेँ रोशन नइ गछि, हाथक पगहरिये पकैड़ लेलकैन।

किछु छी तँ लोहाक हथियार छी ने पगहरिया, तहूमे बाल-बोध

पकैड़ लेलक। एक तँ ओहुना लोहाक चोटो कष्टगर होइए तैपर धरगर सेहो अछिए, तैसंग सियानक देह तँ कनी-मनी बरदासो कऽ सकैए जे बाल-बोधक तँ नहियेँ करत। दोसर ईहो होनि जे एक तँ ओहिना केते कालसँ माए लग कानल, लगले चुप भऽ हमरा लग आएल आ हमहूँ कनाइये देबै तखन तँ भरि दिन बच्चा कनिते रहत! की करक चाही से गर जीवन काकाकेँ मनमे अँटबे ने करैन। अपन विचारकेँ विश्राम दैत हारल सिपाही जकाँ जीवन काका अपन हथियार रखि देलखिन।

धरतीपर पगहरिया देखिते रोशन विहुँस गेल। विहुँसैत रोशन जीवन कक्काक हाथक आँगुर पकैड़ उठबए लगलैन।

बाबाक आँगुर पकैड़ते रोशनक हाथसँ सिक्का ससैर कऽ धरतीपर खसि पड़ल। खसिते बाबाक आँगुर छोड़ि रोशन धरतीपर सँ दू टकही उठा जीवन कक्काक हाथमे देलकैन। जीवन काका बुझि गेला जे दोकान चलैले कहैए।

ओना जीवन काका चारूकात आँखि उठा-उठा दोसर चेष्टगर बच्चाकेँ ताकए लगला जे जँ भेँट जाएत तँ ओकरा संगे रोशनकेँ दोकान पठा देब। पाइयो गनले छै आ दोकानोबला केँ बुझले छइ...।

मुदा कियो नजैरपर पड़बे ने केलैन। जइ काजे बैसल छला सेहो बन्ने भऽ गेलैन।

असमंजसमे पड़ल जीवन काकाकेँ ने आगूक काज चलैन आ ने किछु फुरबे करैन जे की केने नीक हएत।

अन्तमे जीवन कक्काक मनमे यएह एलैन जे जाबे बाल-बोध देह छोड़ि नहि खेलत ताबे अक्कछ करिते रहत। मुदा देहो केना छोड़त? ओ तँ तखने ने छोड़त जखन ओकर मन खनहन भऽ खनखनए लगतै। से तँ तखने हएत जखन ओकरा पछुअबैत किछु

काजमे सहयोग करबै।

हारि-थाकि कऽ जीवन काका डेढ़ियापर छिड़ियाएल जारनो आ टेंगारियो-पगहरियाकेँ रस्तापर सँ पहिने ठौर लगाएब बुझलैन।

जीवन कक्काक मन देखि रोशन सेहो बुझि गेल जे बाबा तैयार भऽ रहला अछि।

तैबीच पगहरिया हाथमे लैत जीवन काका उठि कऽ ठाढ़ होइत टेंगारी देखबैत रोशनकेँ कहलखिन-

“बौआ, पहिने एकरा सभकेँ सम्हारि कऽ राखू। चौकपर सँ एला पछाइत फेर एकरे ने काज हएत।”

पढ़ौल सुग्गा जकाँ जीवन कक्काक बात रोशन बुझि गेल। बुझिते टेंगारी उठा ओतै रखलक जेतए जीवन काका पगहरिया रखने छला। जारनकेँ सेहो बीच रस्तापर सँ घुसका जीवन काका रोशनक संग लालू-खजाना कीनैले विदा भेला।

डेढ़ियापर सँ आगू बढ़िते रोशन जीवन कक्काक आँगुर पकैड़ रस्तापर चढ़ल। रस्तापर चढ़िते रोशन बाबाक आँगुर छोड़ि आगू-आगू दौड़ गेल, एक-डेढ़ लग्गी आगू बढ़ि गेल। मुदा थाकि गेल आकि भ्याउ भेलै से तँ ओ जानए मुदा एकाएक ठाढ़ भऽ गेल।

जीवन काका डेढ़ लग्गी आगूमे रोशनकेँ ठाढ़ देखलैन। ओना, जीवन कक्काक हाथ-पएर नमहर छैन्हे, भेल तँ तीन-डेग एक लग्गी, पाँचे डेगमे रोशन लग पहुँच जेता। सएह करबो केलैन। ओना, रोशनो चौकक दोकान-ले अनाड़ी नहियेँ अछि जे हेराइ-भोथियाइक डर रहितै, देखल-सुनल रहबे करै जे जीवनो काका जनिते छैथ, मुदा रोशनक तँ समय अखन चलैबला अछि, ठाढ़ होइबला नहि, तँए लफैड़ कऽ आगू बढ़ि जीवन काका रोशन लग पहुँचला। लगमे पहुँचते बाबाक बिनु आँगुर पकड़ने रोशन आगू-आगू विदा भेल।

आगू-आगू रोशनकेँ चलैत देखि जीवन काका अपन डेग सेहो छोट केलैन। डेग छोट होइते मनमे उठलैन- अखन रोशन चेल्ह अछि तखन चेल्हबा बनत, पछाइत ने चेला बनि संगे चलत। अखन ओ केना बुझत जे जनम-मरणक दुख-सुख होइ छइ। अखन तँ ओ चिड़ैक गेल्ह जकाँ अछि। जे अण्डासँ निकलल अछि, जखन ओकरामे मनुक्खक रूप औतै तखन ने जीवन-मृत्युक सुख-दुखसँ परिचित हएत, से तँ अखन रोशन नइ अछि। मुदा साफे किछु ने अछि सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए, एते तँ ऐछे जे तीन बर्खक बच्चा जखन 'अ' सीख लइए तखन ओ 'अ' ओकरा मृत्युपर्यन्त मनबास केनहि रहै छइ। तहिना ने अखन रोशनो अछि। हँ! बानरक अगुआएल रूप जरूर छै, मुदा ओ तँ ओतबे जे हाथ रोपि कऽ नइ चलैए हाथ उठा कऽ चलैए।

दोकानपर पहुँचते रोशन दोकानदारक आगूमे पाइ फेक देलक मुहसँ किछु ने बाजल।

कातमे जीवन काका ठाढ़ भेल रोशनक क्रिया-कलाप देखैत रहैथ। ने किछु करबे करैथ आ ने किछु बजबे करैथ। नइ बजैक कारण छेलैन जे प्लाष्टिकक झोड़ा-झन्टीक बात नइ बुझै छैथ, तँए चुपे रहब नीक बुझलैन। ..ओना दोकानमे लोक पहिने वौस लइए पछाइत पाइक हिसाब जोड़ि दोकानदारकेँ दैत अछि, तँए कि ओहन गहिंकी ऐछे नै सेहो नहि जे पच्चीस-पचासक सौदामे नमरीए दोकानदारकेँ नइ पकड़ा दैत आ दोकानदार मने-मन वा कागतपर लिख कऽ हिसाब जोड़ि, बाँकी पाइ आपस करैत, जैठाम ने दोकानदारकेँ किछु बजैक खगता होइत आ ने गहिंकीए-केँ, जइसँ एते तँ नीक होइते छै जे ने दामक पाछू घिच्चा-घिच्ची होइत आ ने रक्का-टोकी, जइसँ कहा-सुनीक ऐगला बाटे बन्न रहैत। मुदा तेहेन गहिंकी तँ रोशन नइ अछि। ओ अछि जे दोकानमे टाँगल तीन-चारि

रंगक झोरोकेँ चिन्हैए आ ओकर सुआदो आ मोलो बुझैए। मुदा जएह पाइ छै तेहीसँ ने सबुरो छइ। ओना रोशन दोकानमे टाँगल आन-आन वस्तुक झोराकेँ झोरा नहि झन्टी बुझैए, मुदा दोकानदार तँ ओकरा बोरा कहिते अछि। खाएर जे अछि.., दू रुपैआबला भुजियाक झोरा हाथमे अबिते रोशन टनटना कऽ घरमुहाँ भेल। पाछू-पाछू जीवन काका सेहो चलला।

ओना हहौती बच्चा जकाँ ने रोशन दाँतसँ झोरा फाड़लक आ ने जीवने काकाकेँ खोलैले कहलकैन।

हाथमे नेने आगू-आगू रोशन घर दिस विदा भेल। हलसैत-फुलसैत पोताकेँ आगूमे देखि जीवनो कक्काक मन हलसए-फुलसए लगलैन।

हलसैत मनमे जीवन काकाकेँ उठलैन- यएह बाल-बोध ने सबुधि पाबि सज्ञान बनत। जेहेन बुधि भेटतै आ अंगेजत तेहने ने सचेष्ट सज्ञानी हएत। अखन तँ ओकर बुधियो आ देहो-हाथ दलदल-थलथल अछिए। मुदा किछु अछि तैयो तँ एते ऐछे जे कोनो वस्तुओ आ विचारोकेँ–जेकरा अपन अनुकूल बुझत ओकरा–अंगेजबे करत। जखने सबुधि आ सकाजकेँ अंगेजब सीखि अंगीकार करैत, अगुअबैत चलत तेहने ने ओकर भविसो आ भवितबो नीक बनैत जाएत।

विचारकेँ ऐठाम पहुँचते जीवन कक्काक मन थकथकेलैन। थकथकाइते मनमे उठलैन- जहिना परिवारमे एक नहि अनेक बेकती छैथ तहिना ने टोलो आ गामोमे छैथे, कोनो-ने-कोनो रूपमे बच्चा सभसँ जुड़ले अछि। जखन एक नहि अनेक बेकतीक संग बच्चाक जुड़ाव रहत तखने एक नहि अनेक चीज ओकर विचारो आ ढंगोमे प्रवेश करबे करत। बच्चेमे नहि, सियानो-चेतनमे एक नहि अनेको प्रवेश द्वारा अछिए...।

मुदा लगले जेना मन फरीच भऽ गेलैन तहिना जीवन कक्काक मन बाल-बोध रोशनपर गड़ि गेलैन। रोशने ने अपनो आ अपना परिवारोक कुलपूज्य बनत। 'कुलपूज्य' मनमे उठिते जीवन कक्काक विचार चनकलैन। कुलपूज्य की? कुलो तँ अनेक अछि, मनुक्खक वंशगत सीढ़ीक संग विचारगत, कार्यगत इत्यादि अनेको शाखाक उपशाखा सेहो अछि, जे मकड़जालोसँ ओझराएल जाल अछिए। मन कहलकैन- ओइ जालकेँ खोलैले आ आकि तोड़ैले तँ मकड़ी बनि चलइ पड़त। मुदा मकड़ियो बनि चलब असान अछि, बिच्चेमे मकड़जाल तेहेन अछि जे देखबे ने करबै। जँ ऊपरका आँखिसँ देखबो करबै तँ मन मनुआर्कें थोड़े बुझत आकि मानत..?

एकाएक जीवन कक्काक मन ठमैक गेलैन। ठमैकते दुनियाँक महजालसँ हटि एकजनियाँ जाल दिस बढ़ए लगला। मुदा आगूमे पोताक हाथमे भोज्य वस्तुक झोरापर नजैर पड़ि गेलैन। रोशनक हाथक झोरा देखि जीवन कक्काक अपन मन रोशनक ओइ बाल-लीलापर जा अँटैक गेलैन जेतए-सँ चेतन लीला शुरू होइए।

..टक लगौने जीवन काका रोशनक ओ जिनगी देखए लगला जे उजराएल भविस छी।

मुदा आइ रोशन कहाँ अछि। ओ तँ मात्र पौने दू बर्खक जिनगी लऽ कऽ आएल छल। बाल-बोध, जेकरा ने आगिमे जरौल गेल आ ने केतौ सारा बनत, ने नह-केश हेतइ आ ने सराध, ने छाया हेतइ आ ने बरखी! की रोशन सम्बन्ध छोड़ि देलक। ओकर जे आत्मा अपन आत्मामे विलीन भऽ गेल, ओ केना निकलत?

❑

शब्द संख्या : 1976, तिथि : 06 फरवरी 2017

कान फुटल कप

माघ मासक अन्तिम रबि। आइ सालक अन्तिम मक्कर सेहो छी। ओना पैछला साल जकाँ तँ नहि, मुदा तैयो चारि बजे भोरेसँ महादेव बाबाक जलढरी शुरू भइये गेल। तइसँ पहिने माने चारि बजेसँ पहिने, पण्डा-पुजारी अपन-अपन मन्दिरकेँ धोइ-पोछि स्नान कऽ पूजा-अर्चना कए लेलैन। पूजा-अर्चना केलाक पछाइत आमजन-ले महादेव मन्दिरक पट खुलले छोड़ि देलखिन।

ओना, जेना पहिने माने दस साल पूर्व विदेश्वर स्थान हौउ कि चण्डेश्वर स्थान आकि जागेश्वर स्थान, सभ स्थानमे मकरो आ शिवरातियोक जेहेन मेला होइ छल तेहेन तँ आब नहियेँ होइए, मुदा नइ होइए सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। तीनू स्थान पुरान अछिए। हालमे जे परसा स्थानक स्थापना भेल ओ तीनू मेलाकेँ प्रभावित केलक। ओना तीनू स्थान महादेवक छी जखन कि परसा स्थान सूर्यक छी। परसामे सूर्यक मूर्ति स्थापित अछि। मन्दिरक बगलमे जे पोखैर अछि, वएह खुनाइकाल मूर्ति भेटल, जे स्थापित भेल आ पछाइत मन्दिरो बनल। नीक मन्दिर अछिए।

दरबज्जापर बैसल जीवन काका रस्ते-रस्ते परसा धामक यात्री सभकेँ गीत गबैत जाइत देखलैन। ओना परसा स्थानमे सूर्यक मूर्ति स्थापित अछि मुदा यात्री सभ भोले बाबाक नचारी गबैत जाइत। स्त्रीगणक हिसाबे पुरुख कम, मुदा सोलहन्नी कम, सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। मोटा-मोटी दसअना-छअनाक अन्तर अछिए। दसअना स्त्रीगण आ छहअना पुरुख। ओना माघक अन्तिम रबि छी, तीन दिन

संक्रान्तिकेँ बाँकी छै, चारिम दिनसँ फागुन चढ़ि जाएत। आधा फागुन–माने अनहरिया अमावसियामे–शिवराति हएत। आन सालक माघसँ सेहो ऐ बेरक माघक रूप बदलल अछिए। आन साल जेना शीतलहरी होइ छल आ गोटे साल बरखे भऽ जाइ छल से नहि। ने केतौ असमानमे मेघे चिलियाइए आ ने शीते-पालाक जोर अछि। पनरह दिनसँ ठेहा रौद रहने माघ मासक रूपे-रेखा बदलल अछि। किरिण फुटिते लोक देहसँ चद्देर उतारि अपन-अपन काज-उद्यममे लगि जाइ छैथ।

चौकीपर बैसल जीवन कक्काक मनमे उठलैन जे जखन जाड़ ओरानियेँपर अछि तखन किए ने अपनो दुआर-दरबज्जाकेँ झाड़ि-बहारि चिक्कन-चुनमुन बना ली। कातिक माससँ घूर होइत आबि रहल अछि जइसँ छप्परोमे आ देवालो सभमे झोल-झाल लटकल अछि। तेकरा सभकेँ झाड़ि-झूड़ि चिक्कन करबेक अछि। भने आइ रबि दिन छीहे...।

ओना, रबि दिनकेँ पलखैत नोकरिहारा सभकेँ होइ छैन मुदा से नहि, जीवन काका बदलैत मौसमक खेती-पथारीसँ निचेन भऽ गेल छला। खास कऽ गरमा खेती-पथारीसँ निचेन भऽ गेल छला, माने गरमा खेती सभ लगा लेने छला आ जाड़क खेती सेहो अन्तिम अवस्थामे पहुँचिये गेल छैन। समय पकड़ेने ऐगला-पैछला दुनू खेती सम्हरले छैन।

ओना परिवारे छी, केते रंगक काज रहितो अछि आ केते नबो सिरासँ जनमबो करिते अछि, जेकरो सम्हारब रहिते अछि। मुदा सेहो हेबे करत। भेल तँ दू-तीन घन्टाक काज झाड़-झूड़सँ लऽ कऽ बाहरब-सोहरब तक। तहूमे जखन परिवारमे रहि परिवारेक लेल दिन-राति अपसियाँत रहै छी, तहीमे ने दुआरो-दरबज्जाक झाड़-

बहार चिक्कन-चुनमुन करब अछि।

जिनगीक अन्तिम पड़ावमे जीवन काका आबिए गेल छैथ। अन्तिम पड़ावक माने भेल साठि बर्खक उम्र टपि जाएब। ओना अपन जिनगीक चारिम दरबज्जा सेहो जीवन कक्काक छिऐन्हे। माने ई जे शुरूमे माटिक भीतपर खढ़क छाड़ छेलैन जे 1971 इस्वीमे–जइ बेर पाकिस्तानसँ बंगला देशक लड़ाइ भेल–सालो भरि बरखा-बुन्नी होइते रहल। सालो भरि ई भेल जे चढ़िते फागुनसँ जे बरखा शुरू भेल ओ बरखा-मौसम टपा देलक। ओना सालक तीन ॠतु एकटा ॠतु 'बरखा'क अछि। जे अखाढ़सँ शुरू होइए आ आसिन अन्त होइत-होइत हथिया नक्षत्रमे हाथ धोइत अन्त होइए। मुदा ओइबेर चढ़िते फागुनमे जे बरखा शुरू भेल ओ तेना लधलक जे सालो भरि लधनहि रहि गेल।

जीवन काका दरबज्जा छाड़ैले जे राड़ी-रटनी खढ़ रखने छला ओ जाकेमे सड़ि गेलैन। आठ कट्ठा खरहोरि जीवन काकाकेँ छेलैन, जइमे राड़ी-रटनी खढ़ होइ छेलैन। ओना पहिने डबहारी सेहो होइ छेलैन मुदा ओ उपैट गेलैन आ राड़ी-रटनी हुअ लगलैन। हलाँकि राड़ियो-रटनीमे एकटा तेहेन आफद आबि गेलैन जे नइ चाहितो जीवन काका ओकरो उपटाइये लेलैन। आफत ई जे शुरूमे तँ कम्मे-सम्म लजैनी खरहोरिमे जनमलैन मुदा जेना-जेना समय बीतैत गेल तेना-तेना ओकर विरधी होइत गेल। विरधीक कारण छल ओकर फूल-बीआ, जे साले-साल बढ़ए लगल। तैसंग लजैनीक पुरना जड़ि सेहो जीवित रहने बरखा मौसम पाबि कच्चे-बच्चे पोनैग झमटगर गाछ भइये गेल छेलैन।

ओना, अपना जनैत जीवन काका खढ़क जाककेँ बँचबैक नीक परियास केलैन, परियास ई जे जखन बरखा बन्न रहै आ रौद

उगै तखन खढ़क जाकक बोझ सभकेँ उनटा-उनटा पसारि दइ छेलखिन, मुदा सभदिना वा तेसरा दिनक बरखा भेने नइ सम्हरलैन। खढ़ सड़ि गेलैन, घरक चारपर नहि चढ़ि सकलैन। एक तँ बिनु छाड़ल घर माने नबका छाड़ नै पड़ल छल, जइमे कौआ सभ आ हवो-बिहाड़ि तेना भूर-भार आ उजाड़ो-पुजार कऽ देने छेलैन जइसँ बरखामे खूब चुआठ भऽ गेलैन। एक तँ सालो भरि बरखाक पानि घरमे लगने, उपछा-उपछी केलो पछाइत घरक धरती थलियाएले रहलैन। चारक ठाठक कोरो-बत्ती सेहो सड़िये गेलैन। आ तैपर खरहोरि सेहो लजैनियेँक भऽ गेल छेलैन। अन्तमे खरहोरि उपटा कुम्हारसँ खपरा बनबा जीवन काका दरबज्जा छाड़लैन।

1987 ई.क बाढ़िमे जीवने कक्काक कोन बात जे गामक जेतेक भीतघर छल ओ खसि पड़ल। आब तँ सहजे नव पीढ़ीक लेल भीतघर किताबक बात भइये गेल अछि। ओना, पहिने भीत घरक उपटान कोसी धारक इलाका आ कमला धारक इलाकामे भेल मुदा सत्तासीक बाढ़ि उपराइरो इलाकाक भीतघरकेँ उपटौलक।

जहिना ठेंस लगने बुधि बढ़ै छै तहिना जीवन काकाकेँ सेहो बढ़लैन। काँच माटिक दरबज्जाक भीत पानि पीब माटिक ढिमका बनि गेलैन आ पेट गड़े खसने पाकल माटिक खपरा दोसर ढिमका सेहो बनि गेलैन। खाएर जे भेलैन मुदा जखन मनुक्ख छी, जीबए चाहै छी तखन घरक ओरियान करइ पड़त किने। सएह जीवनो काकाकेँ भेलैन। कँचपक्कू पजेबाक देवाल आ सीमटीबला चदराक दरबज्जा बनौलैन। एक तँ कँचपक्कू पजेबा तैपर माटिक गिलेबाक जोड़, अठासीक भुमकमे तेते फाट-फुट भेलैन जे सदिकाल खसैक संभावना बनले रहलैन। राँइ-बाँइ तँ देवाल नहि फटलैन मुदा देवालमे तीनटा ओहन फाट भऽ गेलैन जे कखनो हवा-बिहाड़िमे घर खसि सकैत छल।

ओना ओहनो स्थिति (फाटल-फाटल देवाल) मे दोसर दरबज्जा जीवन काका नइ बना सकला। तेकर कारण छेलैन जे परिवारक आर्थिक स्थिति ओहन दबि गेल छेलैन जे घर सन जिनगीक मूलभूत खगता रहितो पुरती नइ कऽ सकला। दस बर्खक पछाइत जखन स्थिति सुधरलैन तखन चारिम खेपक दरबज्जा बनौलैन। बीतैत कातिक आ चढ़ैत अगहनसँ जे घरमे घूर–जाड़क दुआरे–करए लगला, ओहीमे जे धूआँसँ झोल-झाल लगलैन ओकरे साफ करैक विचार जीवन काका केलैन।

घरक हिसाबसँ वस्तुओ-जात भरले छैन। तहूमे सुतैक चौकी आ दुनू अलमारी तेना जगह छेक नेने छैन जे कोण-काण छोड़ि केतौ खाली जगहे ने छैन। ओहीक एक कोणमे चाह बनबैक चुल्हियो आ जारनो-काठी रखै छैथ, दोसर कोणमे जूता-चप्पल, तेसर कोणमे कपड़ा टँगैक अलगनी आ चारिम कोणमे रद्दी-फद्दी कागजो आ आनो-आनो टुटल-फुटल वस्तु-जात रखै छैथ। ओना रद्दी-फद्दी कागतक उपयोग चुल्हि पजारे काल सेहो करिते छैथ जइसँ कागत तँ कम्मो–सम्म मुदा इंक सठल पेन, फुटल कप, ठुठियाएल हँसुआ-खुरपी इत्यादि तँ रखिते छैथ।

चाह पीब जीवन काका जखन दरबज्जाक भीतर हिया कऽ देखलैन तँ ऊपरेसँ माने घरक छतेसँ झाड़-झूड़ करब नीक बुझलैन। नारियलबला झाड़ू लऽ ऊपरसँ झाड़ब शुरू केलैन। कोणमे कानो फुटल आ डण्टियो टुटल कप देखलैन तँ समोह लगि गेलैन। समोह लगिते जहिना मन कँपलैन तहिना हाथो बगा गेलैन। कप दिस बढ़ैत हाथे अँटैक गेलैन। ने आगू बढ़ि कप पकैड़ सकला आ ने हाथ पाछूए हटा सकला। मोन पड़लैन पोता रोशन...।

रोशने एक दिन भिनसरू पहरमे चाह लइले कप आँगन लऽ

जाए लगल तँ केबाड़क चौकैठमे पएर ठेक गेलइ। पौने दू बर्खक रोशनक हाथ-पएर असथिर नइ भेल छल, खसि पड़ल जइसँ कपक डण्टी टुटि गेल। कपक डण्टी टुटल मुदा कप ओहिना रहि गेल जहिना पहिने छल। खसैत रोशनकेँ देखिते हाँइ-हाँइ कऽ जीवन काका दुनू हाथे उठबैत बजला-

"रोशन बौआकेँ की भेल?"

कानैक झोंकमे तँ रोशन किछु ने बाजल मुदा जहिना थारी-लोटामे डोलैत पानि धीरे-धीरे असथिर होइत तहिना रोशनक मन सेहो असथिर हुअ लगल। थरथराइत रोशन बाजल-

"गिर...।"

रोशनक मुहमे ओते बोल कहाँ छै जे पतियानी लगा बाजत। ओ तँ पौने दुइए बर्खक अछि। तहूमे बाल-बोध व्याकरणक बात की बुझत...। जेना दर्द भेलापर काँचो तेल आ पकलो तेलसँ दर्दक हिसाबसँ मालिश कएल जाइत तहिना जीवन काका दुनू हाथसँ रोशनक हाथ-पएर ससारैत झाड़ैत-पोछैत बजला-

"बौआक दुख मेटा गेल। कहाँ किछु भेल अछि।"

'नइ किछु भेल' सुनि रोशन मुँह बन्न करैत अपन काजकेँ आगू बढ़बैत हाथक इशारासँ कप देखबैत बाजल-

"उ-उ..!"

कप उठा हाथसँ पोछि रोशनक हाथमे पकड़बैत जीवन काका बजला-

"बौआ, चाह पीत।"

कप नेने रोशन माए लग पहुँच, जेतए चारि-पाँचटा कप चाह-ले सजल छल, ओतइ अपनो कप रखि आँगुरक इशारासँ देखबैत

माएकेँ कहलक- “उ-उ..!”

कोणमे राखल डण्टी टुटल, कान फुटल कपकेँ हाथमे उठबैत जीवन काका निहारए लगला। मोन पड़लैन- जएह डण्टी तोड़लक सएह ने कानो फोड़लक। जहिया डण्टी टुटैकाल चौकैठ लग रोशन खसल रहए, ओकर पनरहे दिनक पछाइत दोहरा कऽ खसल जइसँ आधासँ ऊपर कपक कान फुटि गेल, जइसँ चाह पीबै-जोकर कप नइ रहल। भाय, कप छिऐ किने ओकर कानो नमगर-चौड़गर होइते छइ। हाथमे कप पकड़ने जीवन काका स्मृतिक बोनमे बोनैया जकाँ वौअए लगला...।

आइ रोशनकेँ ऐ घरसँ बाहर भेला मास दिन भऽ गेल। आइ जँ चेतन-सियानक मृत्यु भेल रहैत तँ पहिल छाया भऽ गेल रहितै, मुदा ओ तँ पौने दू बर्खक रोशन डेढ़ हाथ खड़ा बाल-बोध छल, ओकर केना छाया बनतै आकि छाँह बनि आरा केना लगतै। ओकरा तँ माटियो आ माटिक जीवाणुओ दुनियासँ मेटा देने हेतइ। हमहूँ तँ मेटाइये देलिऐ..!

एकाएक जीवन कक्काक मनमे व्याकुलता जगए लगलैन। मुदा आब उपाइये की अछि। एतबे ने अछि जे अपन चाह खातिर कपक डण्टियो तोड़लक आ कान फोड़ि कपकेँ निकम्मो बनौलक..!

मुदा लगले जीवन कक्काक मन आगू घुसैक गेलैन। आगू घुसैकते मन विधुएलैन। विधुआइते मुहसँ निकललैन-

“दोख तँ केकरो-ने-केकरो लगबे करत। कियो अपना सिर दोख थोड़े लिअ चाहैए, लेबो उचित केना हएत?”

विधुआएल मुहसँ जीवन कक्काक बोल तँ निकैल गेलैन मुदा विचरण करैत विचार उठलैन- जे जन्म लेलक ओकर मृत्यु हेबे करत, मुदा बीचमे तँ ओकर जीबैक औरदा छइहे...।

मन विहुस गेलैन। विहुसते विचारलैन- ऐ कपर्कें रोशनक स्मृति स्वरूप खोलियामे सजा कऽ रखि लेब। पौने दू बर्खक रोशन जेते दुनियाँ देखलक ओते तँ ओकरो साझी भइये गेल अछि ने, ओ तँ परिवारेजन ने बुझता जे जाड़ फटैत जहिना वसन्तक संग सूर्यक रोशनीमे सेहो प्रखरता अबै छै तहिना बरखाक आगमसँ रौद खसए लगैत अछि आ तहिना ने जाड़क आगमनसँ बर्खो विलीन हुअ लगैत अछि। यएह ने भेल दुनियाँक मौसम, जइमे मासूम रोशनो तँ अछिए किने।

❑

शब्द संख्या : 1595, तिथि : 09 फरवरी 2017

वर्थ डे

चैत मरनासन होइते बैशाखक आगमन भऽ गेल। ओना, जहिना मासक जन्म भेने मास मरितो अछि आ जनैमतो अछि, तहिना ने मौसमोक मासुपन होइए।

भिनसुरका समय। प्रखर मौसम रहने सूर्यक किरिणोमे प्रखरता आबिए गेल अछि। चौक-चौराहाक दोकान-दौरी जे जाड़क मासमे सिरसिराइत अबेर कऽ खुजै छल ओ जेना-जेना गरमी धबैत गेल तेना-तेना सबेर खुजए लगल, तँए आब चारि बजे सबेरगरेसँ चौकक दोकान खुजए लगैए। ओना, दोकानो-दौरीक अपन-अपन हिसाब अछि। किछु एहेन अछि जेकर गहिंकी चारि बजे भोरेसँ पहुँचए लगै छै आ किछु एहनो अछि जे आठ बजेक पछाइत खुजैए आ किछु एहनो तँ ऐछे जे दस बजेक पछाइत खुजैए।

आने जकाँ जीवन काका सेहो चारि बजे भोरे चौकपर झूठ-साँच समाचारो सुनैले आ खेती-पथारीक गपो-सप्प करैले पहुँचबे करै छैथ। मौसमो अनुकूले रहै छैन। मौसम अनुकूल ई जे जहिना बारह मासक सालमे तीनटा मौसम रहने छहटा रीतु अछि, तहिना ने दिन-रातिक बीच सेहो दूटा मौसम अछि। तैसंग दूटा समरस सेहो अछिए। एकटा भेल राति-दिनक सीमानपर 'भोरक' आ दोसर भेल दिन-रातिक सीमानपर 'साँझक'। ओना, दुनू मौसमक अपन-अपन गुण सेहो छइहे। जहिना पूर्बा हवा देहक ऊपरमे ठंढा लगैए आ देहक भीतर खौंतियबैए तहिना ने पछबा हवा ऊपरसँ खौंतियबैए आ

भीतरसँ ठंढ बनबैए। खाएर ई तँ भेल हवाक बात, साँझ-भोरक अपन हिसाब अछि। जे दुनू दू गतिये चलैए। माने ई जे जखन हवा चलैत रहत, तखन एक रंगक भेल आ जखन हवा ठाढ़ रहत तखन दोसर रंगक भेल। मुदा से नहि, एक तँ शुरूक समय, जे अंगरेजीक बीतैत मार्च आ चढ़ैत अप्रीलक भेल, आ वसन्त रीतुक अधबेसू वसन्त भेल।

चौक-चौराहाक हवा-पानि पीब जीवन काका घरपर एला। ओना माल-जालकेँ सेबेरे घरसँ निकालि बाहरक नादिमे बान्हि खाइ-पीबैले सानी-कुट्टी लगाइए गेल रहैथ, जे खा कऽ मालो-जाल अरामसँ बैस गेल छल।

घरपर अबिते जीवन काका पहिने माल-जाल देखलैन। तीनू मालकेँ बैसल पौज करैत देखि चोट्टे घुमि कऽ दरबज्जापर होइत आँगन गेला तँ देखलैन जे दछिनबरिया ओसारपर मन मारि पुतोहु बैसल छेली आ पछबरिया ओसारपर पत्नी दुनू पोती आ दूटा आन अँगनाक स्त्रीगणक संग चुपचाप बैसल छैथ आ मने-मन किछु विचारि रहल छैथ।

दुनू ओसारपर नजैर (आँखि) पड़िते जीवन काका तारतममे पड़ि गेला जे किए सभ एना ठकुआएल बैसल छैथ! अखन तँ भोरक समय छी, दिनक शुरूआतक समय, जे केतेको काज करैक समय छी, तखन किए सभ मन मारि बैसल छैथ? जँ भोरेमे लोकक काज हेरा जाए, माने नइ रहै तखन भरि दिन पानि डेंगोनाइ छोड़ि ओ करत की..?

आँगन-दरबज्जाक बीच मुँहथैरपर ठाढ़ भेल जीवन काका दछिनबरिया ओसारपर बैसल पुतोहुपर नजैर देलैन तँ देखलैन जे पुतोहुक आँखिसँ नोरक बून छिटैक रहल छैन। नोरक बून देखि मने-

मन सोचए लगला जे किछु कारण जरूर अछि। मुदा जाबे ओ किछु बजती नहि, ताबे बुझबो केना करब..?

पत्नी दिस नजैर दैत जीवन काका बजला-

“किए सभ हड़ताल केने छी?”

पत्नी तँ ‘हँ-हूँ’ किछु ने बजलैन। मुदा मिरमिराइत पुतोहुक मुहसँ निकलल-

“रोशनक आइ वर्थ डे...।”

‘रोशनक वर्थ डे’ सुनि जीवन कक्काक मनमे जोरक धक्का लगलैन। धक्काक कारण भेलैन जे तीन मास पूर्वे रोशन दुनियाँ छोड़ि चुकल छल। माने कल लगक खाधिमे जइमे कलक पानि जमा होइत अछि, ओही खाधिमे खसि रोशन जाड़े कठुआ कऽ प्राणान्त कऽ चुकल छल। शरीरक तँ अन्त भऽ गेलै मुदा जिनगीक अन्त केना मानल जाए। किछुओ दिन तँ घरवास केनहि अछि।

ओना, जहिना आन परिवारमे एक-एक बेकतीकेँ अनेको नाओंसँ पुकारल जाइ छै तहिना जीवनो कक्काक परिवारमे छैन्हे। जीवन काकाकेँ सेहो किछु गोरे ‘जीवन काका’, तँ किछु गारे ‘मन्नु बाबा’ तँ किछु गोरे ‘ब्रह्मानन्द बाबा’ सेहो कहिते छैन तहिना रोशनोकेँ कियो ‘रोशन’ तँ कियो ‘बेल’ तँ कियो ‘बेलबा’ तँ कियो ‘छोटका बौआ’ सेहो कहिते अछि।

पहिल बर्ख पुरलापर रोशनक वर्थ डे धुमधामसँ परिवारमे मनौल गेल छल, आइ दोसर साल छी। ऐ बिच्चेमे रोशन पौने दू बर्खक आयु पुरबैत दुनियाँ छोड़ि देलक।

जहिना गाम समाजक बुढ़-पुरान जीवितकेँ मर्तलोक आ मृत्युकेँ मृत्युलोक बुझबो करै छैथ आ बजबो करै छैथ तहिना जीवन काका सेहो पुतोहु दिस तकैत बजला- “रोशन स्वर्गक सुख करैए,

अपना सभ नर्कमे छी, तखन अनेरे जे घर-परिवारक काज छोड़ि सभ चिन्तित भेल बैसल छी से अनेरे ने। दिनक जे भावी छल ओ भेल। तइले अनेरे सोग-पीड़ा केने की हएत। जे धारलिऐ से केलिऐ। जानि कऽ वा अनजानमे चूक भेल हएत, से ओ माफ करत।”

ओना बजैक क्रममे जीवन काका बाजि तँ गेला मुदा अपनो मन भीतरे-भीतर कानए-कलपए लगलैन। कानए-कलपए ई लगलैन जे रोशन तँ चेतनशील छल नहि, तखन ओकर बुधि केना क्रियाशील होइतइ आ विचारैत केना जे परिवारमे अहिना कनी कम-बेसी होइते छइ। तहूमे रंग-बिरंगक लोक सेहो रहिते अछि, तँए टुटी-फुटी कनी हेबे करैए।

रंग-बिरंगक माने भेल जे एक वंशक वा एक कुल-खनदानक रहने लोकक शरीरक रंग-रूप, लम्बाइ-चौराइ किए ने एक रंग हौउ, मुदा बुधि-विचार केना एक हएत। ओ तँ भीतर-बाहर दुनूक बीचक शक्ति छी, ओ तँ उमेरोक हिसाबे आ गतिशीलतोक हिसाबे कम-बेसी हेबे करत।

जीवन कक्काक मन ठमैक गेलैन। ठमैक ई गेलैन जे रोशन तँ ने आब ऐ धरतीपर आबि माइक दूध पीबत आ ने हमरे संगे हँसुआ-खुरपी नेने बाड़ी-झाड़ीमे खसैत-पड़ैत, कनैत-खिजैत जाएत, ओ तँ आब नइ रहल, ई तँ सभकेँ बुझए पड़तैन किने..?

तैसंग ईहो ने बुझती जे रोशन देहसँ हटि गेल, मुदा देही वा शरीरीसँ थोड़े हटल। ओ आत्मास्वरूप चेतन शक्ति छी, पौने दू बर्खक रोशनक ओ शक्ति तँ अपन आत्म-स्वरूपमे मिलि गेल अछि। जइसँ पौने दू बर्ख, एक्कैस मास भऽ गेल। एक्कैस मास चौरासी सप्ताह भऽ गेल आ चौरासी सप्ताह, सात गुणे बेसी दिन भऽ गेल, इत्यादि-इत्यादि भइये गेल अछि किने, तँए स्मृति सनेस नइ देत सेहो

तँ नहियेँ कहल जा सकैए।

अनायास जीवन कक्काक निराएल आँखिक बून एक-दोसरमे सटि-सटि टघार बनि गालपर होइत टघरैत रहबे करैन, तही बीच पुतोहुओ आ पत्नियोँक आँखि चढ़लैन, आँखि चढ़िते विचारक संतरण हुअ लगलैन। तैबीच साउस–सुदामा–संतरण होइते सामंजस करैत पुतोहुकेँ कहलखिन-

“रोशन की तोरेटा छेलह जे हेरेलह आ तोरेटा दुख होइ छह, हमर पोता नइ हेराएल, बुड़हाक ‘बेल’ नइ हरेलैन! सबहक हेराएल! तँए आब सभ कियो अपन-अपन खेलौन नेने अपन-अपन जिनगीमे नइ लगबह तँ काल्हि-दिन केना चलतह।”

पत्नीक विचार सुनि जीवन कक्काक मन पघिल-पघिल कऽ गील हुअ लगलैन। बेलबाक रंग-रंगल रंग सबहक मनमे नाचए लगलैन। अँगनाक रूप बदलल। मन-चित्त दाबि सभ अपन-अपन दिनचर्या दिस बढ़ली।

आँगनसँ दरबज्जापर अबैत-अबैत जीवन कक्काक मन घुमए लगलैन। अपन घुमैत मन देखि जीवन काका सोचलैन जे या तँ ओछाइनपर पड़ि रही या नइ तँ बैसिये जाइ। किएक तँ जखन अपने मन बेसमहार भऽ जाएत तखन तँ आरो बेसी नोकसान हएत।

दरबज्जाक ओसारक दछिनबरिया चौकीपर बैसते जीवन कक्काक मन पुतोहुक मुहसँ निकलल शब्द- ‘वर्थ डे’ पर गेलैन। कहाँसँ कहितैथ जे ‘जन्म साल’ छी, जन्म दिन तँ सम्भव नहि अछि। तारीख वा तिथिकेँ दिनक मिलान नइ होइए। वा ‘साल गीरह’ छी, यएह गीरह ने गोठिया कऽ गाँठ बनैए, जेकरा ‘वर्षगाँठ’ सेहो कहै छिऐ...।

मुदा लगले जीवन कक्काक मन पाछू घुमलैन। घुमिते देखलैन

जे परिवार-परिवारक लोक टी.वी.क संग आब मोबाइलोमे वर्थ डे मनबैत, थोपड़ी बजा-बजा वर्थ डे गबैत देखैए-सुनैए। कोन माइक इच्छा नइ हेतैन जे कोखिया गुहारि हुअए। जहाँ धरि 'वर्थ डे'क प्रश्न अछि, ई शब्द छी, बेसी-सँ-बेसी पाँति भऽ सकैए, मुदा भाषा तँ भाषा छी, गंगा सदृश अछि, जइमे नीक-अधला सबहक समावेश होइते अछि। तँए पुतोहुक बात जीवन काकाकेँ अरूचिगर नहि रूचिगर लगलैन।

ओना तीनू गोरे–माने जीवन काका, जीवन कक्काक पत्नी सुदामा आ पुतोहु श्यामा–तीन दिस नजैर बढ़ौलैन, मुदा रोशनक 'वर्थ डे' किनको मनसँ सोलहन्नी नइ हटलैन। हटबो केना करितैन। जहिना जीवन कक्काक मनमे तहिना सबहक रोशन बसले छल।

भानसा-घरमे पएर दइते श्यामा चुल्हिकेँ गोड़ लगैत बजली-

"हे चुल्हि, अहीं छी आ हमहीं छी जे लालक माने रोशनक पहिल 'वर्थ डे'क दिन केना जीबैत लहलह करैत रहलौं। पहिल सालक 'वर्थ डे'मे ईबेर केत्ता कप चाह अतिथि-अभ्यागतक सेवामे लगा चुकल रही, मुदा आइ..!"

अबैत-अबैत विचारक क्षेत्रमे आबि श्यामा ठमैक गेली। ठमैकते ठकमुरा गेली। ठकमुराइते जेना जिनगीमे लगल जंग छुटि-छुटि जगलैन। जगिते मनमे उपकलैन- यएह छी जिनगी आ जिनगीक लीला। सभ जनै छी जे जे देह रूपमे जन्म लेलक ओ अन्त करबे करत। मुदा देह तँ देहेटा नइ छी, जँ सोल्होअना ओकरा माटियेक मानि लेब सेहो तँ उचित नहियेँ हएत। चलबो-फिरब आ सोचबो-विचारब दिस ने देखए पड़त।

एकाएक श्यामाक नजैर दौड़ैत रोशनकेँ दुनू हाथे पकैड़, कोरामे उठा, बीच आँगनमे ठाढ़, अपन छातीसँ लगौनेपर पड़लैन।

जखन रोशन अपन पहिल साल गिरह पैरमे मौजा-जूतासँ लऽ कऽ देहमे शर्ट-पेन्ट, माथपर टोपी लगा मनौने रहए, ओइ संग परिवारो आ कुटुमो-समाज तँ भरि दिन रोशनेक विरुदावली गबैत रहला, मुदा अपन दोसर साल गिरह रोशन कहाँ देखि पौलक! कहाँ हमहीं आकि ई चुल्हिये लहलहा रहल अछि..!

मन-चित्त समेट श्यामा जीवनक दुख-धन्धामे लगि गेली। मनमे उठलैन- पौने दू बर्खक बेटा दुनियाँ छोड़लक, की ओकरा मनमे हमहूँ-सभ बसल हेबइ? नइ! हमरा सभ जकाँ ओ कहाँ रहल? ने ओ किछु बुझि पबैत हएत आ ने चिन्ह पबैत हएत। ने ओकरा बुझैक आ ने चिन्हैक किछु शेष हेतइ। ओकर सोचै-विचारैक जगहे मेटा गेल, ओ बिसैर गेल हमरा सभकेँ..!

श्यामाक मन थरथराए लगलैन। पानि जकाँ थरथराइत मनकेँ थीर केली। मन थीर होइते मुहसँ बकार फुटलैन-

"कोखिक सन्तान छल। अपना उकिते जे जनलिऐ से तँ करबे केलिऐ। आब बेसी-सँ-बेसी एतबे ने हएत जे अपन दिलक डायरीमे, सन्तानक संख्यामे लिखि कऽ राखब। जँ से नइ राखब तँ प्रसव पीड़ाक वेदना, मातृत्वक जे विशिष्ठता छी ओ हेरा जाएत। जइसँ नारीत्वक शक्तिमे कमी औत।"

मालक घरक थैरमे सुदामा काकी गोबर उठबैले बैसबे केली कि आँगनसँ पछुअबैत रोशनक स्मृति रूप आगूमे आबि गोबरकेँ देखबैत कहलकैन-

"ई-इ-इ..!"

सुदामा दादी बुझि गेली जे नान्हिटा बच्चा गोबर उठबए कहि रहल अछि। सुदामा काकीक मनमे ठहैक एलैन जे की गोबरकेँ घृणाक नजरिये देखा रहल अछि आकि क्रिया स्वरूप?

मुदा सुदामा काकीक सभ दिनक जे काजक अभियास छैन, ओइ अनुकूल बिना मनसँ जपनौं हाथ क्रियाशील भऽ गेलैन।

जखने हाथ काजकेँ पकैड़ कजियबैत जिनगीकेँ कबजियबए लगैत अछि तखने जिनगी कबजियाइत कीर्ति दिस बढ़बे करैए, सुदामो काकीक हाथ बढ़लैन।

आगू बढ़िते मनमे उपकलैन- ई तँ दुनियाँक लीला छी, जेते दिनक खातिर आ जेते भूमिका करैक भार लऽ कऽ रोशन आएल ओ करैत गेल। मनमे उठिते सुदामाक प्रशान्त मन उदिग्न मनकेँ शान्त करैत रोकैत कहलकैन-

“करोड़ो तरेगनसँ सजल अकासमे साइयो जन्मो लैत आ टुटि-टुटि खसबो करैत, तँए कि अकासक शोभा-सुन्दरमे कमी होइए आकि विलीन होइए, नहि! ओ तँ रहबे करैए। अपनो परिवार ऐछे, तरेगने जकाँ ने बढ़बो करैए आ घटबो करैए। मुदा जैठाम बढ़ती-घटतीक समरूप रहत तैठाम घटवारि-बढ़वारि हेबे किए करत।”

प्रशान्त चित्त होइते सुदामा काकीक मन सहमलैन। सहमलैन ई जे चेतने-अचेतनेक बीच ने दुनियाँ चलि रहल अछि। जखन अही दुनियाँमे अपनो छी तखन ओहीक देखा-देखी ने अपनो चलए पड़त। अपन जिनगीक तँ यएह ने लेखा-जोखा हएत जे जइ दिन धरतीपर पएर देलौं तइ दिनक परिवार की छल, समाज की छल आ आइ की अछि। अही बीच ने कम-बेसी अछि, जइमे लोक अपन हारि-जीत बुझैए। अनेरे मनकेँ वौअबै छी...।

मुदा तैबीच पहिल गोबरक चोत सुदामा काकी उठा नेने छेली आ दोसर चोत दिस हिया कऽ देखि रहल छेली, तखने बुझि पड़लैन जे ऐसँ नमहर अछि। उठि कऽ ठाढ़ होइते मनमे उठलैन- रोशनो तँ अपने अमलदारीमे आएल। माने ई जे अपने जीता-जिनगीमे एबो

कएल आ गेबो कएल। केना कोनो दादी अपन पोताकेँ बिसैर जाएत? रोशनक दादी हमहीं ने छिऐ, पोता हमरे ने छल, की मनमे जे डायरी विधाता देलैन ओइमे एतबो जगह खाली नै अछि जे अपना रोशनकेँ अपनो मनमे लिखि राखब? पौने दू बर्खक रोशन पौने दू बर्ख जहिना सबहक संग संगी बनि संगबे जकाँ रहल तहिना ने संगबे जकाँ चलबो करत। मालक घर आबि रोशन जहिना गोबर देखबै छल, नाइद-खुट्टा देखबै छल, घूर लग बैस आगियो तपै छल, संगे-संग खेबो करै छल तहिना ने मन-मन्दिरमे बास करैत ताधैर बसैत रहत जाधैर बसै छी।

गोबर समेट कऽ उठा मालक घरसँ सुदामा काकी निकलली तँ चापाकलक चबुतरापर ठाढ़ श्यामापर नजैर पड़लैन। नजैर पड़िते आँखि उठा-उठा पुतोहु दिस देखए लगली तँ मन कहलकैन जे रोशन तँ हमर पोता भेल, असल तँ कोखिक रत्न जिनकर छेलैन हुनका मनमे की वरैस रहल छैन। लाल सागरसँ उठल वायु लाल बरखा करैत आकि काला सागरक कारी? मुदा तैकाल श्यामाक नजैर रोशनक ओ रूप देखि रहल छेलैन जे दादीक आगू-आगू खेतक खाधिमे लग पहुँच देखबै छेलैन। ओना आगू-आगू रोशनकेँ बढ़ने सुदामा दादीक भार बढ़िते छेलैन मुदा तैयो रोशनकेँ ऐ दुआरे अगुएने चलै छेली जे बाल-बोध अछि, अखन हाथ-पएर असथिर नइ भेल छै, जँ अपने अपन भार कमबै दुआरे पोताकेँ पछुअबैत चलब, सेहो तँ नीक नहियेँ हएत। एक तँ जखने ओकरा पाछू करबै तखने ओ कानत, किएक तँ आगू केतए जाएब से ओकरा बुझले नइ छै, जँ देखलो-बुझल हेतै तँ चंग मन उचैंग गेल हेतइ। तैसंग ईहो तँ ऐछे जे अपनो आँखि (नजैर) अपने आगू ने देखत, जे पाछू रहत तेकरा केना देखत। तेकरा देखैक तँ उपाय यएह ने हएत जे ओकरा आँखिक आगू अपन आँखि राखब...।

अपन बेथाकेँ श्यामा सुदामा दादीपर थोपैत बजली-

“आब ने रोशन अछि आ ने रोशनक दुनियाँ। आब के बुढ़िया दादीक हाथक आँगुर पकैड़ पाछूओ-पाछू चलत आ आगूओ-आगू देखबैत चलत..!”

पुतोहुक बात सुनि सुदामा काकी ठमैक गेली। ठमैक ई गेली जे जँ पुतोहुकेँ किछु कहबैन तँ ओ अनेरे अपन दैनंदिनक क्रिया रोकि समोहमे पड़ि जेती, तइसँ नीक जे किछु बजबे ने करब। अही अगदिगमे सुदामा काकीक मोन पड़ल छेलैन। तही काल जीवन काका दरबज्जासँ ई सोचि उठि कऽ कल दिस बढ़ला जे जहिना अपन मन बेलबाक स्मृतिमे वौड़ा रहल अछि जइसँ कोनो काजमे नजरिये ने सन्हिया रहल अछि, तहिना तँ ने पत्नियोँ आ पुतोहुओकेँ होइत छैन। भानस घरसँ आगू बढ़िते जीवन काका देखलैन जे गोबरक पथिया माथपर नेने पत्नी, खेतमे खुनल गोबरक खाधि लग ठमकल माथपर भारी नेने ठाढ़ छैथ। तहिना पुतोहुओ कलक हेन्डिल पकड़ने सासुक उत्तरक आशा देखि रहल छेली।

पत्नियोँ आ पुतोहुओकेँ देखि जीवन कक्काक मन मानि गेल छेलैन जे दुनू गोरे अपन-अपन जीवन क्रियामे लगि गेल छैथ। मुदा अपन मनक स्मृति जीवन क्रिया दिस बढ़ए नहि दैन। रंग-रंगक प्रश्न मनमे बर्खाक बुलबुला जकाँ उठैन आ लगले फुटि-फुटि विलीन होइत जाइन। मुदा बर्खोक तँ किछु बुलबुला एहनो होइते अछि जे लगले नहि फुटि पानिक टघारक संग किछु दूर धारा पकैड़ संग धरिया-धरिया बढ़ितो अछि। ओना, छी तँ पानियेँक बुलबुला जइमे स्थायित्व नहियेँ छै मुदा तैयो अपन जिनगी बँचबैत किछु दूर धरि तँ बहिते अछि।

अनायास जीवन कक्काक मन परिवारसँ सर-समाजक ओइ

असिरवादपर आबि अँटैक गेलैन जे रोशनकेँ आशीष रूपमे दैत देखने- सुनने छला। ओ विचार फुटि जीवन कक्काक मुहसँ निकललैन-

“कहाँ रोशन दीर्घजीवी भऽ सकल! कहाँ ओ अपन भविसक भवितव्य देखि सकल!”

ओना जीवन कक्काक मुहसँ निकैल तँ गेलैन मुदा लगले प्रशान्त मन शान्त करैत कहलकैन-

“ई तँ दुनियाँक खेले छी जे सभ अगिले आशा देखि जिनगीकेँ क्रियाशील बनबैए।”

प्रशान्त मनक शान्तचित्त चेतैबते जीवन कक्काक विचारक रूप बदललैन। विचारक रूप बदैलते मन कलशलैन। कलैशते नब टुस्सा जकाँ मन टुस्कियेलैन। टुस्कियाइते जहिना गाम-घरक पानि धारा बनि धार बना गंगामे मिलि गंगासागरसँ मुँह मिलैए तहिना जीवन कक्काक विचारमे सेहो एलैन। एलैन ई जे सबहक तँ बुझले-गमल, देखले-सुनल अछि जे खाली जीवनेक पोताक संग परिवारमे नहि, आनो-आन अनेको परिवारमे अहिना होइत आबि रहल अछि। एक बाबाक नहि सैयो-हजारो बाबाक पोताक अन्त अहिना भेल अछि, आगूओ हेबे करत। तइले अनेरे मनकेँ विघ्न करैत बेधै छी। जेते समय बेधैत रहत ओते तँ जिनगियेक क्रिया ने ह्रास करत। मन ठमकलैन। ठमैकते जीवन काका बुदबुदेला-

“जेतबेटा औरुदा किए ने रोशनकेँ भेटल हौउ, मुदा छल तँ ओ बेदाग, तखन किए ओकर जिनगी एतबेटा भेल?”

मनक उठल प्रश्न जीवन कक्काक मनेमे घुरिया लगलैन। मुदा उत्तर नहि भेट उत्तेजित होइत संकल्पित भेला। नहि! बेलबा हेराएल कहाँ अछि ओ तँ आँखिक सोझहेमे अछि जे खाली बेलबे नहि,

हजारो-लाखो बेला जाड़क खाधिक पानिमे खसि-खसि अन्त करबे करैए। मनमे अबिते दरबज्जापर आबि बैस रहला।

दरबज्जापर बैसल जीवन कक्काक मनमे उठलैन- रोशनकेँ पहिल 'वर्थ डे' दिन सभ कियो दीर्घजीवीक असिरवाद देलखिन, नीक भविसक शुभकामना सेहो देलखिन। मुदा रोशन अपन 'वर्थ डे' कहाँ देखि पौलक..!

जीवन कक्काक मन-मियादि उनटए लगलैन, मनकेँ चारू भागसँ अशान्ति घेर लेलकैन। जीवन-मृत्यु आगूमे आबि ठाढ़ भऽ गेलैन। पछाइत जीवन-मृत्यु स्वयं एक प्रश्न बनि शान्त केलकैन।

❑

शब्द संख्या : 2535, तिथि : 16 फरवरी 2017

जानक मोल

बेरुका उखड़ाहा, करीब सबा तीन बजे रतन भाइक पुतोहुक मोबाइलमे घण्टी टनटनेलैन। पुतोहु उठौलखिन। उठैबते आवाज एलैन-

“के रतन भाय?”

पुतोहु जवाब देलखिन-

“नइ, हम हुनकर मझिली पुतोहु।”

“रतन भाय नइ छैथ? कनी हुनकासँ गप करा दिअ।”

मोबाइल नेने पुतोहुकेँ अबैत देखि रतन भाइक मुहसँ निकललैन-

“जेते दुनियासँ खेलकट्टी कए छुट्टी लिअ चाहै छी तेते ई जिनगी रगड़ए चाहैए..!”

तैबीच पुतोहु मोबाइल हाथमे धड़ा देलकैन।

मोबाइल हाथमे अबिते रतन भाय बजला-

“अपने के बाजि रहल छी?”

मोबाइलमे कामनालालक उत्तर एलैन-

“अखने बिसैर गेलौं जे आवाजो नइ देखि-परेखि रहल छी!”

मोटा जकाँ रतन भाइक मनपर दाब पड़लैन जे एहेन उपराग केतए-सँ आबि रहल अछि। अपनाकेँ सम्हारैत बजला-

“भाय, चालिसे बर्खमे परिवारसँ अपन छुट्टी लइक विचार

मनमे भेल, मुदा माइयो जीबै छेली आ दूटा छोट बच्चो छल, तँए किछु दिन जिनगीकेँ आरो रग्गड़ उठबैक छेलाएहे। मुदा आब तँ पचास टपि गेल छी, सोलहन्नी दुनियाँ छुटि गेल अछि, बिसरलौं कहाँ, दुनियाँक बोनमे या तँ अहीं केतौ हेरा गेल हएब वा हमहीं, हेरा गेल हएब। तइले मनमे कोनो रोख-राख नइ राखू। कोनो कि मनुक्ख चरि-चकिया गाड़ी छी जे साले-साल नवीकरण करबै पड़तै। मनुक्ख तँ मनुक्ख छी, जखने बाट-घाटमे केतौ मुँह-मिलानी भेल आकि नवीकरण भइये जाइए।”

रतन भाइक मुहसँ सभ बात सुनिते कामनालालक मन हलैस कऽ कलैश गेलैन जे एक गोरेक मुँह-मिलानी तँ जिनगीक उद्धार करैए आ हमरा तँ सहजे ओहन संगीक मुँह-मिलानी भऽ रहल अछि जे लंगोटिया संगी रहने पचास बर्खक पछातियो ओहिना ताना-उतार छैथ। विचारमे विचड़ैत कामनालालक मन आरो विचलित भेलैन। विचलित होइते बजला-

“रतन भाय, हम डॉक्टर कामनालाल छी। अपन अन्दाज अछि जे कमसँ कम तीस बर्खक पछाइत दुनू भैयारीक गप-सप्प छी।”

ओना रतनलाल सेहो ठेकना कऽ देखलैन तँ बुझि पड़लैन जे कौलेजक जिनगीक पछाइत भरिसक पहिल गप-सप्प छी। खाएर किछु छी तँ छी मुदा जखन जिज्ञासा जगलैन तँ बेजा की, अपना तँ जगले अछि। जँ सिनेही संगी जीवित जिनगीमे कहियो भेटै तँ ओ शुभ शुभेक्षु अछिए...।

जहिना पुरानो नमहर गाछ कलशने आरो बेसी सुन्दरो, सघनो आ ललिचगरो लगैत तहिना रतन भायकेँ भेलैन। बजला-

“कामना भाय, भलेँ केतबो दिनक पछाइत किए ने गप-सप्प

भऽ रहल अछि मुदा जीवनक जे जीवनपन अछि ओ तँ आबिये जाइए। अपन जिनगीक हाल-चाल की अछि से कहू।”

रतनलाल आ डॉक्टर कामनालाल हाइ स्कूलक आठमामे जे संग-संग नाओं लिखौलैन ओ हाइ स्कूल बीतैत कौलेजक आइ.एस-सी. तक संगे रहला। आइ.एस-सी. केलाक पछाइत कामनालालक अपनो इच्छा आ पितोक इच्छा रहैन जे डॉक्टरी पढ़ए, से भेबो कएल। ओना समाजक आन लोकक इच्छाक विपरीत इच्छा पिताक (लालसा लालक) रहैन। मुदा फलाफल एकरंगाहे छेलैन। माने ई जे समाजक किछु अंशक अर्थात् किछु लोकक एहेन धारणा बनि गेल अछि जे ‘डॉक्टरी शिक्षा’ रुपैआ कमाइक नीक रस्ता छी। जइसँ अध्येताक महतमे घटबी एबे कएल अछि। घटबी ई आएल अछि जे कठिन मेहनत आ ज्ञान साधनाक कठिन मार्गपर चललासँ डॉक्टरी ज्ञानक परापैत होइए, जे समाजक ओहन मनुक्खक निर्माण करैए जेकरामे ईश्वरीय शक्तिक परापैत होइ छै, तँए ईश्वरीय वृत्ति अपनेला पछातिये ने ऐश्वर्यक परापैत हएत। खाएर जे अछि, चाहे ओ कारखानाक आमद स्वरूप हौउ, आकि वेपारीक वेपारक स्वरूप, मुदा जे अछि से तँ ऐछे आ सबहक सोझहोमे अछि।

हाइये स्कूलसँ रतन भायमे किछु अपन विशिष्ट धारणा पनपलैन। पिता सोझमतिया लोक रहबे करथिन। ने कहियो पत्नीकेँ ऐ बिसवासे किछु कहलखिन जे ओ अपने परिवार-समाजक प्रति निष्ठावान छैथ, अपने निष्ठेसँ जे नीक बुझती से करैत चलती। तहिना बेटा–रतनो–केँ पढ़ै-लिखैक सम्बन्धमे कहियो किछु कहलखिन। मन मानिते रहैन जे अभिभावक रूपमे जे अपन दायित्व अछि तेतबे ने, मुदा पढ़त तँ अपना विचारे अपना जिनगी-ले। तँए केकरो जिनगीमे कियो टाँग किए अड़ौत। बेसीसँ बेसी एतबे ने जे कोनो उकड़ू जगह देखलापर किछु पुछत तँ जे जनै छी से कहबै। वा

जँ उकड़ू काज दिस बढ़ैत देखबै तँ ओकरा चेतेबै जे बौआ आगू खच्चा अछि जइमे पड़लासँ मनुक्खक खिचार होइए। तैठाम जे जेहेन रहत से तेहने ने खिचैड़-खिचैड़ खीरो बनत आ खिचड़ियो बनत। भलेँ दुनूमे एक्के रंग वस्तु किए ने पड़ैत हौउ मुदा खीरमे एकमुँहरी रहने एकरूपता अछि जे खिच्चैड़मे नइ अछि। केतौ गुड़-खिच्चैड़ बनैए तँ केतौ गुँह-खिच्चैड़।

परिवार आ समाजकेँ अपन धरोहर बुझि रतन भाइक मनमे समाज अध्ययनक जिज्ञासा हाइये स्कूलसँ पनैप गेल छेलैन। जेकरा कुशल किसान जकाँ रतन भाय समय-समयपर ताम-कोर, कर-कमठौन करैत छकड़ैत-बनबैत सींचैत-पटबैत परिपक्व बनबैक दिशा पकड़लैन। ओना हाइये स्कूलसँ मनमे इच्छा जगि चुकल छेलैन जे एग्रीकल्चर ग्रेजुएट बनब।

परिवारक धरोहर जहिना सभ परिवारमे अछि तहिना रतन भाइक परिवारमे सेहो छैन्हे। जइमे हाइ स्कूल टपला पछाइत धीरे-धीरे मोनि बना सोन्हिया गेल छला।

सोन्हिया ई गेल छला जे जहिना परिवार वा समाजमे पारिवारिक वा सामाजिक बेकती पाछूसँ–परम्परासँ–अबैत जीवकोपार्जनक संग, पाबैन-तिहार, यज्ञ-जाप, कला-संस्कृति इत्यादिकेँ लोक अंगीकार कइये लैत अछि तहिना रतन भायकेँ सेहो भेलैन। दस बीघा जमीनबला परिवारमे जन्म भेल छेलैन, खेती-पथारी करैक एहेन ढंग मनमे समा गेलैन जे बी.एस-सी.मे जखन पढ़िते छला तखने मनमे जीवकोपार्जनक एहेन बिसवास जगि गेलैन जे पढ़ला पछातियो माने बी.एस-सी.क क्लास केलाक पछातियो परीक्षा दइक विचारे मनसँ हटि गेलैन। जइसँ बी.एस-सी. नइ कए सकला। ओना अपन मन बी.एस-सी.क योग्यताक बिसवास दइते

छैन मुदा आन-आन लोक आइ.एस-सीए. बुझै छैन।

ओना परिवारमे रतन भाय तेना सन्हिया कऽ अपनाकेँ क्रियाशील बना लेलैन जे पिता–मणिकान्त–क मन मानि गेलैन जे जहिना बाप-दादाक अमलदारीए-सँ परिवार हलसैत-कलशैत आबि रहल अछि तहिना आगूओ चलैत रहत।

अपन हाल-चाल सुनि डॉ. कामनालाल बजला-

"भाय, मोबाइलसँ जेतेकाल गप-सप्प करब ओते बेसी खरचो हएत, तइसँ नीक जे एक दिन एकठाम बैस दुनू भैयारी अपन-अपन बीचला जिनगीकेँ जे कौलेजक पछाइत छुटि गेल अछि, सामंजस करैत पैछला जिनगी औझुका जिनगीमे जोड़ि एकबट्ट करैत पुन: एकरसमे समेट आगू बढ़ी।"

डॉ. कामनालालक विचार रतन भायकेँ सेहो नीक लगलैन। नीक लगिते हुँहकारी भरैत बजला-

"बढ़ियाँ विचार अछि। एकटा समय निर्धारित किए ने कए ली।"

रतन भाइक सहमतिक विचार सुनि डॉ. कामनालाल बजला-

"गप-सप्प करैले पहिने जगह निर्धारित करब तखन समैयक निर्धारण करब।"

डॉ. कामनालालक विचार सुनि रतन भाय सूहकारैत बजला-

"दरबज्जापर अबैत अपेछितकेँ के नहि आबए दिअ चाहत, तँए नीक हएत जे हमरे ऐठाम आउ।"

रतन भाइक विचारसँ कामनालालक मन दलमला गेलैन। दलमला ई गेलैन जे जखन लंगोटिया संगी ऐठाम जाएब तखन पत्नी थोड़े मानती। ओहो तँ जेबे करती। तहूमे जखन बुझती जे बिआहमे

रतन भाय लोकनियाँक रूपमे बरियाती रहैथ तखन तँ जाइले आरो छाल छोड़ा देती। ओना, कामनालालक मनमे ईहो शंका होइते रहैन जे लंगोटिया संगी होइतो रतन अपन जिनगीसँ तुष्टि छैथ जखन कि अपने नइ छी! अखनो बुझि पड़िते अछि जे भरिसक दुनियाँक जालमे तेना ओझरा गेल छी, जे छुटि कऽ छुट्टा बनब कठिन अछि।

डॉ. कामनालाल बजला-

“भाय, दुनू भैयारी केतौ एकान्तमे बैस गप-सप्प करितौं, जेतए ने परिवारक कियो आ ने समाजेक कियो रहैत।”

‘एकान्त जगह’ सुनि रतन भाय बजला-

“एकान्त जगह कि केतौ हेराएल अछि, भेल तँ तेसर कियो ओइठाम नइ रहए।”

‘तेसर कियो नइ रहए’ सुनि डॉ. कामनालालक मन धड़ैक उठलैन। धड़ैक ई उठलैन जे रतन ने बालपनक संगी छी जे बीचक समैयक सम्बन्ध कमने ओहिना अछि, मुदा अपन जिनगी तँ ओहन रोगसँ रोगाइए गेल अछि जे कोनो हितो-अपेछित ऐठाम जँ टहलैयो-बुलैक खियालसँ जाइ छी तँ पत्नियो संग भऽ जाइत छैथ। तैठाम जँ पुरान संगी ऐठाम जाएब आ हुनका मनाही करबैन जे ‘नइ जाउ’ से ओ थोड़े मानती। तहूमे हमरे पेब ने ओहो डॉक्टरनी बनि प्रणाम-पाती पबै छैथ...।

असमंजसमे पड़ल डॉ. कामनालाल बजला-

“रतन भाय, नीक हएत जे अहीठाम माने हमरे ऐठाम आबी।”

‘हमरे ऐठाम’ सुनि रतन भाय स्वीकार करैत बजला-

“जेहने हम छी तेहने ने अहूँ छी। जखन दुनू गोरे एकेरंग भेलौं तखन जगहेक कोन मोल अछि। परसू बेरुपहर जरूर आएब।”

रतन भाय आ डॉ. कामनालालक गाम तीन कोस हटल अछि। जखन दुनू गोरे विद्यार्थी अवस्थामे छला तखन रस्ता–पेरा नीक नै रहितो तेते आवाजाही छेलैन जे दुनू गामक दूरी मनसँ मेटा गेल छेलैन। साइकिल पकैड़ कखनो एक-दोसर आबि जाइ छला। मुदा विद्यार्थी जीवनक पछाइत आएब-जाएब तेना बन्न भऽ गेलैन जे तीस बर्खक पछाइत भेँट भऽ रहलैन अछि। ओना, दुनू गामक बीचक जे रस्ता अछि ओ पहिने कच्ची छल जइसँ आन समयमे तँ चलैबला रहितो छल, मुदा दुनू गाममे गाए-महींस रहने बरसातमे चलै-जोकर नइ रहैत छल। मुदा से आब नइ अछि। पक्की रहऽ आकि कच्ची, सड़क चलनिहारक लेल दुनू रस्ते छी। जेहेन खगता तेहेन आबाजाही होइते अछि।

आसीन मास बीत गेल। काल्हि पूर्णिमा छल आ आइ कातिकक पहिल दिन छी। बर्खाक संभावना सेहो समाप्त भऽ गेल अछि। ओना भादवक बर्खा जे पानिक बून रूपमे झहरल, जइसँ गामेमे दहार भऽ गेल। माने बेसी बर्खा भेने बर्खोक पानि आ धारोक पानि एने इलाकेमे दहार भऽ गेल, जइसँ रतनो भाइक गामक धान आ डॉ. कामनोलालक गामक धान दहा गेल। मुदा ओ भेल भादोमे।

पछाइत जहिना बर्खा कमि गेल तहिना धारक बाढ़ियो घटि गेल, जइसँ आसीन बीतैत-बीतैत धानक चास तँ चलि गेल मुदा धास-फूसक बास बाधसँ लऽ कऽ बास धरि तेना उगि कऽ हरिया गेल जे दहाएल गाम जकाँ बुझिये ने पड़ि रहल अछि। सौंसे गामे हरियर चास जकाँ हरियरी पसैर गेल अछि, जइसँ रचनाकारक संग संगीतकारोक मन हरियरीसँ भरले छैन, भलेँ ओ अन्नक हरियरी हौउ आकि घासे-फूसक..!

ठीक तीन बजे डॉ. कामनालाल रतन भाइक आगवानी लेल अपन बैसक-खानामे आबि तैयार भऽ गेला। ओना पत्नियोँ लगेमे

रहथिन मुदा रतन भायकेँ रस्तापर अबैत देखि डॉ. कामनालाल कहलकैन-

“देखू, शहरसँ गाम आएल छी, तँए गामक चालि छोड़ि अपना चालिमे केतौ चूक ने हुअए।”

पतिक बात सुनि रोहिणी मने-मन सिकुड़ली। सिकुड़ली ई जे गाममे रहि गामक चालि केना छोड़ब! मुदा रतन भायकेँ सेहो देखि नेने छेली। अभ्यागत दरबज्जापर औता आ अपने दुनू बेकती फूसि-फासिक झगड़ा बेसाहने रहब सेहो केहेन हएत। अपन दोख कम करै दुआरे रोहिणी बजली-

“इशारोमे किछु कहि देब तखन ने..?”

डॉ. कामनालाल बजला-

“गमैया ढाठी अछि जे एकबेर साँझ एकबेर भोर लोक चाह पीबै छैथ, से नइ करब, लंगोटिया संगी रतन छिआ, तँए क्षणे-क्षण चाह जुमबैत रहब।”

‘हल्लुक भार’ सुनिते रोहिणियो आ डॉ. कामनालाल सेहो उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेलैथ।

दुनू बेकतीकेँ ठाढ़ भेल देखि रतन भाय बजला-

“संगी, पहिलुके कनियाँ छेथुन की हाल-सालक?”

डॉ. कामनालाल बजला-

“बियाही-ए छैथ किने।”

रतन भायकेँ सुतरलैन, बजला-

“दोसरो-तेसरो कनियाँकेँ तँ लोक बियाहिये कऽ अनै छैथ आकि रस्ता-पेरापर सँ केतौ उठा लइ छैथ!”

अपनाकेँ सम्हारैत डॉ. कामनालाल बजला- “संगी, अखने

बिसैर गेलौं। वएह कनियाँ छैथ जइमे अहूँ बरियाती गेल रही।”

रोहिणी भण्डार कोठरी दिस बढ़ली आ डॉ. कामनालालक संग रतन भाय बैसारमे बैसैक विचार केलैन। ओना रतन भाइक इच्छा रहैन जे दुनू संगी सोझा-सोझी बैसी, मुदा डॉ. कामनालालक अभ्यंतरमे की रहैन से तँ वएह जनता मुदा सोझा-सोझी नहि बैस बगलेमे बैसला।

तैबीच रोहिणी थर्मशसँ चाह दुनू कपमे ढारि पहुँच गेली। बैसला पछातिये चाह देखि रतन भाय बजला- “संगी, भारियो देह रहने संगिनी बड़ पनिगर छैथ!”

रतन भाइक विचारमे बोहिया डॉ. कामनालाल बजला- “से कि पत्नी कोनो रोगसँ रोगाएल फुलल छैथ ओ तँ निरोगसँ भरल-पूरल छैथ।”

ओना रोहिणी सेहो अपन चुटकीक जवाब चुट्टासँ पकैड़ दिअ चाहै छेली, मुदा रतन भाइक उजड़ाएल केश-मोछ आ दाढ़ी देखि सहैम गेली। मनो कहलकैन जे एक तँ नारी जाति छी दोसर कोनो नरक नाड़ी पकड़ब जल्दवाजीमे सम्भव नहि अछि तँए हुनकर गति-विधि देखला पछातिये माने नाड़ीक गति पकड़ला बादे ठीक-ठीक गणना भऽ सकैए, तँए चुपे रहब नीक।

तैबीच रतन भाय डॉ. कामनालालसँ पुछि देने छेलखिन-

“करीब-करीब बीस-तीस बर्खक पछाइत दुनू संगीकेँ मुँह-मिलानी भऽ रहल अछि।”

डायरी मेनटेन केनिहार डॉ. कामनालाल, तहूमे रतन भायकेँ अबैसँ पहिनहि डायरी देखि नेने छला, धाँइ-दे बजला- “तीस बर्ख सात महिना सात दिन भेल अछि।”

‘निश्तुकी दिन’ सुनि रतन भाय क्षुब्ध भऽ गेला। क्षुब्ध ई भेला

जे केना देखले दिन तीस बर्ख बीत गेल। अस्पतालमे मातो-पिताक संग एक दिन वा एक राति काटब असाध भऽ जाइए।

..मसुआइत मने रतन भाय बजला-

“संगी, तीस बर्खक दिन-रातिक गप-सप्प करब अछि। मात्र एक घन्टा रहब अछि। तँए इतिहासक क्रम संक्षेपमे हुअए।”

‘संक्षेप’ सुनिते डॉ. कामनालाल बजला-

“संगी, भरि दिन दवाइक नाओं लिखने कि ग्रामरक प्रेसी बिसैर गेल छी, जहिना-जहिना जेतबे-तेतबे अहाँ पुछब तहिना-तहिना तेतबे-तेतबे उतारा हमहूँ देब।”

रतन भाय-

“कौलेज तक तँ विद्यार्थीए रहलौं तँए ओ बालपनमे कटि गेल, पछाइत गृहस्ताश्रम कहियौ आकि काम-काजी जिनगी बँचि गेल से, तैठामसँ गप-सप्प उठाउ।”

डॉ. कामनालाल-

“संगी, की कहब,बुधिये फेल कऽ गेल!”

रतन भाय-

“लोक बिनु बुधिये परीक्षामे फेल करैए आ अहाँ अछैते बुधिये फेल कऽ गेलौं?”

रतन भाइक जिज्ञासासँ डॉ. कामनालालक मनक भारपन बढ़लैन। भारी होइत बजला-

“संगी, बड़ जतन आ मेहनतसँ पढ़लौं जे बड़का डॉक्टर बनि ओहन क्रियमान जिनगी बनाएब जइमे सभ दिन सूर्यक उदैयो हएत आ अस्तो हएत, मुदा से भऽ गेल बुढ़िया फूसि!”

डॉ. कामनालालक विचार रतन भाय नीक जकाँ बुझबे ने

केलैन। मुदा मनमे ईहो होनि जे केतबो लगक संगी किए ने होथि, मुदा संगपनाक क्रिया तँ एक नहि रहल तँए एहनो प्रश्न तँ भइये सकैए, तँए प्रश्न तेना कऽ राखी जे ओइमे ने छिलका रहै आ ने सोहले रहइ। बजला- “से की संगी?”

डॉ. कामनालाल रतन भाइक प्रश्नक रस पीब रस भरल रसिक जकाँ बजला-

“संगी, पढ़ला पछाइत मनमे उठल जे ताधैर गामेमे रहब अछि जाधैर केतौ नोकरी नइ भऽ जाइए। संयोगो बैसल जे अपनो काजक लौल जगले रहए आ भगवानोक दया भेल जे गाममे खूब आम-जामुन फड़ल।”

डॉ. कामनालालक मुहेँ ‘आम-जामुन’ सुनि रतन भाइक मन विहुसि गेलैन। जेना अद्राक मालदह आ इलाहावादी गुल-जामुन मनमे आबि गेल होनि तहिना। मुदा बीचमे किछु बाजब उचित नहि बुझि बाजब बन्ने केने रहला। मुदा अपन बजैक सुन्दर छटा बुझि आरो छँटियबैत डॉ. कामनालाल बजला-

“तेते ने आमो आ जामुनो फड़ल जे जामुन तँ पकि-पकि कऽ गाछक निच्चेमे खसि-खसि आँठीक संग परान तियागलक आ आमो तेहेन भऽ गेल जे ओहीबेर सँ किसान जन-हरवाहकेँ मरूआ रोटीक संग अमौट खेनाइ सिखौलैन।”

बिच्चेमे रतन भाय टोनलैन-

“दुनूक रंगो-रूप एक्के मिलैए।”

बजैक पराग्राफ बदलैत डॉ. कामनालाल बजला-

“संगी, नव डॉक्टर बनले रही, पाइयो कमाइक आ नामो-जशक लिलसा तँ रहबे करए। भगवान दिन फेरलैन, जहिना आम-जामुन फड़ल तहिना लोक गाछपर सँ खसबो कएल, जइसँ टुट-

फाटक पलश्तरक काज खूब बढ़ल। बुझले अछि जे अपना इलाकामे केते गाछी-कलम अछि, तहूमे हमरा गाममे तँ आरो बेसी अछिए। खूब कमेबो केलौं आ इलाकामे नामो-जश पसरल।"

रतन भाय-

"की नाम-जश?"

मुस्की मारैत डॉ. कामनालाल बजला-

"जहिना मुकुन्द बाबूकेँ बतहपनीक विशेषज्ञता प्राप्त केने लोक 'बतहा डॉक्टर' आ सुधीर बाबूकेँ 'सँप-कटियाक सँपकट्टा डॉक्टर' कहै छैन तहिना लोक हमरो 'हड़टुट्टा डॉक्टर' कहए लागल।"

डॉ. कामनालाल हास्य-व्यंग्य शैलीमे बाजिये रहल छला कि रतन भाय देवालपर टाँगल घड़ीपर नजैर देलैन, जे कामनालाल सेहो देखलैन। अपन अभ्यंतरक जे विचार रतन भायकेँ कहब छेलैन तेकरा तर पड़ैत देख, विचारकेँ मोड़ए चाहलैन। तही बीच रोहिणी चाह-पान नेने पहुँच गेली। चाहक कप हाथसँ पकड़ैत रतन भाय बजला-

"संगी, जखन दुनू गोरे लंगोटिया संगी छी तखन जेते अहाँक जिनगीमे रंग-बिरंगक घटना सभ घटल तहिना हमरो घटल आ आनो-आनोकेँ घटिते छैन। तँए नीक हएत जे दुनू गोरे अपन-अपन विचार करैत चली। मुदा एक तँ पहिल दिन रहने सभ गपो करब उचित नहि, दोसर ओते समैयो ने अखन अछि जे कोनो घटनाकेँ बुझैत-गमैत विचारैत चली। दोसर-तेसर दिन बुझल जाएत।"

रतन भाइक विचार सुनि डॉ. कामनालाल नमहर साँस छोड़लैन। नमहर साँस छुटैक कारण भेलैन जे जखन बजैक क्रममे अगुआएल छी तखन पहिने हमरे विचारक ने अन्त हएत, पछाइत ने

रतन भाइक विचार सुनब...।

अपन मनमे पानि चढ़ा धड़फड़ाइत डॉ. कामनालाल बजला-

“संगी, बैशाख-जेठ-अखाढ़ मासक समय रहै, तीन मास गाममे रहला पछाइत नोकरी भेल। ब्लौकक डॉक्टर बनि गेलौं।”

जहिना कोनो चीज प्राप्त केलाक पछाइत बध-बधाइ देल जाइए तहिना रतन भाय ‘ब्लौकक डॉक्टर’ सुनिते बजला-

“बाह! बहुत बढ़ियाँ..!”

अपना जनैत रतन भाय प्रोत्साहनक विचारसँ बाजल छला मुदा डॉ. कामनालालकेँ कठाइन लगलैन। बजला- “वएह नोकरी मारियो खुएलक आ झूट्ठो बनौलक।”

रतन भाय-

“से की?”

डॉ. कामनालाल उत्तर दैत बजला-

“वएह चूक भेल जे जिनगीमे चुकलौं। ओही चुक्तीक पुरती आब...।”

डॉ. कामनालालक विचार रतन भाय नीक जकाँ नहि बुझि बजला-

“से की?”

आशा हारि डॉ. कामनालाल कहलखिन-

“संगी, पैछला जिनगीकेँ गीजम-गीज आब कि करब, सोझे बुझि लिअ जे खूब मारि खेलौं, एक पनरहिया बिछान धेने रहलौं, पछाइत तीस बर्खक नौकरीक पछाइत भोलेन्ट्री रिटायरमेन्ट लऽ गाम आबि गेलौं।”

बीचमे रतन भाय बजला- “आब गामेमे रहब?”

अपसोच करैत डॉ. कामनालाल- “संगी, अहाँ लंगोटिया संगी छी तँए कहैमे कनियोँ लाज-संकोच नहि...।”

तइ बिच्चेमे रोहिणी जलखै नेने पहुँचली। पत्नीकेँ देखिते डॉ. कामनालाल अपन बोल अधडरेरेपर रोकि चुप भऽ गेला। मुदा रोहिणी नीक जकाँ सुनैक विचारसँ बिच्चेमे ठाढ़ भऽ गेली।

दुनू परानियोँपर रतन भाय नजरियो उठा-उठा दैथ आ मने-मन गुड़ो-चाउर फाँकए लगला।

अन्तो-अन्त डॉ. कामनालाल मुँह खोललैन-

“संगी, जानक कोनो मोल नहि रहल। जखन जाने नहि तँ जहान की?”

रतन भाय कुरसीपर सँ उठैत बजला-

“संगी, जिनगीमे एको क्षणक मोल होइए, तँए अखन एते निराश नइ हेबा चाही।”

अपसोच करैत डॉ. कामनालाल बजला-

“गामो-समाज कहाँ चाहि रहला अछि जे समाजमे सभ जीबै!”

एक डेग आगू बढ़ैत रतन भाय बजला-

“संगी, केकरो असिरवादपर कियो गामे-समाज आकि देशे-दुनियाँमे जीबैए, ओ तँ अपन बुझि लोककेँ अपने जीबैक बाट पकैड़ जीबए पड़त किने?”

ओना, रतन भाइक विचार डॉ. कामनालाल नीक नहाँति नइ बुझि पेला मुदा ‘अपन बुझि’ सुनि मन तरसलैन। तरैसते बजला-

“संगी, औझुका बैसार रीब-रीबेमे चलि गेल। जे मनमे विचारने रही से तँ नहियेँ भेल, मुदा एते तँ भइये गेल जे विचार-विमर्श करैक

रस्ता तँ खुलिये गेल।"

डॉ. कामनालालक विचार सुनि रतन भायकेँ ऐगला सम्बन्धक सूत्र भेटलैन। बजला-

"संगे-संग रहने लोक संगी पबैए आ मने-मन विचारने लोक विचारवान बनैए, तइले अनेरे किए लोक निराश हएत।"

'निराश' सुनि डॉ. कामनालाल बजला-

"से तँ आशा अछिए।"

❑

शब्द संख्या : 2782, तिथि : 23 फरवरी 2017

गामक कटान

ओना 'गाम' शब्दक अर्थ भौगोलिक नजरिये अछि। जइमे खेत-पथार बान्ह-सड़क, पोखैर झाँखैर, धार-धुर, गाछ-बिरीछ इत्यादि अछि। मुदा ऐठाम–जे चलनियोँमे अछि आ विचारोमे–गामक अर्थ गामवासी वा समाजसँ अछि। कोनो गाममे नमहर भोज भेने बेसी आने गामक पंच रहै छैथ जेकर गणना गामेक कोटिमे होइए।

भोरक पँचबजिया बस पकैड़ मधुबनी विदा भेलौं। सबेरगरे ऐ दुआरे विदा भेलौं जे कोर्टमे खाली हाजरीए-टा नइ देब छल जे अबेरो गेलासँ सम्हैर जाइत, बहसपर केस चढ़ल अछि तँए आन-आन ऑफिसक नक़लो लेनाइ आ ओकीलो साहैबसँ राय-विचार केनाइ छल जे सबेर-सकाल नहि गेने काज नहि सम्हरैत, तँए छअ बजैत-बजैत मधुबनी पहुँचैक छल।

काजक संजोग नीक बनल, जहिना ओकील साहैब ब्रशे करैकाल भेट गेला तहिना मुंशियोजी बजारसँ तरकारी कीनि घुमल रहैथ। सभ काजक गप तीनू गोरेक बीच भऽ गेल। सभ अपन-अपन काज दिस झुकि गेलौं। तीन बजैत-बजैत सभ काज निपैट गेल।

ओना, समय दुआरे नहा नहियेँ भेल मुदा सबेर-सकाल होटलमे खा जरूर नेने छेलौं। बिनु नहेनौं बैशाख-जेठ जकाँ देहो आ मनो भरियाएल नहियेँ बुझि पड़ै छल, किएक तँ पूस मास छी किने। पूसे मास ने ओ मास छी जइमे एको दिन–तिलासकराँतिक दिन–नहेने मासो दिनक मिनहा भइये जाइए।

काज निपटला पछाइत मनमे भेल जे ओकील साहैबसँ भेँट करैत निकलिये जाएब नीक हएत। एक तँ जाड़क मास छी, दोसर भोरक जाड़मे घरसँ निकलल छेलौं, जँ सौंझुको जाड़ एतै पकड़ा लेब सेहो नीक नहियेँ हएत। अनेरे जे गपो-सप्पमे आ घुमैयो-फिड़ैमे समय खटिया लेब आ बसमे सिरसिराइत रस्ता काटब तइसँ नीक ने रौद-मुहेँ गाम पहुँच जाएब। रौतुका घूरोक ओरियान करैक समय जँ भेट जाएत तैयो अधहा दिन नीक जकाँ कटैक ओरियान कइये लेब। ऐठाम दिनक माने भेल चौबीस घन्टा, दिन-राति मिला कऽ। दिनेक हिसाबमे रातियो अछि, जँ से नइ अछि तँ रेलबे किए बारह बजे अधरतियेसँ दिनक मिनहा करए लगैए आ ऋृषि-मुनि किए दिनक पहिल पहर तीन बजे भोरसँ मिनहा करै छैथ। ओना, दस बजेक चढ़न्त राति हौउ आकि दू बजे भोरक राति हौउ, जँ सन्तानक उत्पत्ति होइए तँ ओ रातिक मिनहाकेँ काटि दिनेक हिसाब पकैड़ लइए।

लहसैत दिने गामक सीमानपर पहुँच गेलौं। पएरे बस पकड़ैले तीन किलोमीटर जाइते छी, तँए पएरे घुमलो रही। पाछूसँ लबड़दौर भाय सेहो साइकिलसँ अबैत सीमानक कातेमे पकैड़ लेलैन। देखिते पाछूए-सँ टोकैत बजला-

“राधेश्याम, केतौ बाहरसँ अबै छह?”

पाछूक टोक छल, चलब रोकि ठाढ़ भेलौं। ताबे लबड़दौरो भाय दहिना भाग दिस साइकिल रोकलैन, दुनू गोरे गप-सप्प करैत गाम दिस बढ़लौं।

ओना, लबड़दौर भायकेँ भीतरसँ चिन्है छिऐन जे गामक कुटनी करैमे दु:शासने सन महारथ छैथ। एक दिन दुनू गोरेक बीच तेहेन मुहाँ-मुहीं भेल जे ओइ दिनसँ आगूसँ टोकब परहेज कऽ नेने

छी, मुदा लबड़दौर भाय तँ से नहि छैथ। हुनका जिनगीक खेल बुझू कि गमैया राजनीति आकि गामक कटान करैबला महानायक, से तँ छथिए। खाएर जे छैथ, मुदा जखन आगू भऽ टोकि देलैन तखन चुपो तँ नहियेँ रहल जा सकैए। बजलौं-

"हँ, भोरे मधुबनी गेल छेलौं।"

हमर बात सुनि लबड़दौर भाय पाशा बदलैत बजला-

"जीतू तँ गाममे आगि लगा देलक!"

'जीतू काका'क नाओं सुनिते हदास उड़ि गेल। उड़ि ई गेल जे केहेन विसाइन समाचार कहि रहला अछि। मुदा मनकेँ थीर केलौं। थीर ई केलौं जे कोनो समस्या वा कोनो घटनाकेँ पहिल भेल शीर्षक रूपमे सुनब आ दोसर भेल व्याख्या रूपमे बुझब। अपनो विचार यएह भेल जे शीर्षक रूपमे लबड़दौर भाइक विचार मनमे रखि, केवल सुनब आ हुँहकारीसँ इशारा देब नीक हएत। फेर भेल जे हुँहकारियो आ इशारो तँ बेदाग नहियेँ अछि। इशारोपर जघन्य-सँ-जघन्य घटना होइते रहै छइ। तहिना हुँहकारियोपर तँ केतए-सँ-केतए लोक भाँसियो जाइए आ हेलबो तँ करिते अछि।

आगू-पाछू होइत मन बीचमे पहुँचल। बीचमे पहुँचते उठल जे जँ लबड़दौर भाइक विचारमे 'हुँहकारी' भरब तँ बाल-बोध जकाँ चौक-चौराहापर बेचि पान खा लेता, तइसँ नीक हएत जे किछु बजबे ने करब। ओहो बुझता जे नीपल पाटी बुझू कि सिलेट आकि सादा कागज, अंकित होइतो अंकित ताबे तक नहि बनैए जाबे तक ओइपर रोशनाइ-कलमसँ आकि पथलखरीसँ लिखल नइ जाइए।

मुँह उठा लबड़दौर भाइक मुँहपर देइते चिड़ै-चुनमुनीक लोल जकाँ मिलानी तँ भइये गेल। मिलानी होइते लबड़दौर भाय बकए लगला। की बजला की नहि बजला से मोनो ने अछि। चुपचाप सुनैत

रहलौं। जहिना मइटुग्गर बच्चा दोसर बच्चाक संग अपने भाए जकाँ खुशीसँ खुशिया-खुशिया हँसैत-कनैत-खेलैत रहैए तहिना मने-मन अपनो हुअए। मुदा आगूमे पहाड़ जकाँ प्रश्न तँ ठाढ़े छल जे गामक समस्या छी, तँए जाबे अपनाकेँ थितगर नहि बना लेब ताबे किछु बाजब कम-बेसी भइये जाएत।

परती खेत पेब जहिना सुढ़िगर कोदरवाह मन-माफित खेत तमैए, कखनो मनमे ई नइ होइ छै जे काजक कमी अछि तहिना लबड़दौर भायकेँ भेलैन। धाराप्रवाह मार्क्सवाद, गाँधीवादसँ लऽ कऽ दुनियाँक जेते 'वाद' अछि ओ सभटा पाँचे मिनटमे पढ़ा देलैन।

घरसँ कनी पाछूए रही कि दुनू गोरेक आँगनक रस्ता फुट भऽ गेल। लबड़दौर भाइक जेते सुनल बात छल सभकेँ, सुतैकाल जहिना लोक ओछाइन-बिछाइन झाड़ैए तहिना झाड़ए लगलौं, तखने आँगनसँ पत्नी देखि लेली।

आँगनसँ निकैल पत्नी कनियेँ आगू बढ़ली कि हुनको चेहरापर अपन नजैर पड़ल। देखिते मन विसाइन-विसाइन हुअ लगल। जेठ मासक रस्तापर उड़ल गरदा-बाउल जकाँ हकासल-पियासल पत्नी बुझि पड़ली। मुदा कि जानि किछु बाजि नै रहल छेली से तँ ओ जानैथ, मुदा अपना बुझि पड़ल जे कोनो तेहेन चोटक दर्द छैन जे बोलती बन्न केने छैन।

अपन रूपकेँ दैनंदिनक जिनगीमे पीअबैत हाथक बैग पत्नीकेँ धड़बैत किछु बजलौं नहि, तेकर कारण छल जे जखने गामक हाल-चाल पुछबैन तखने विचारक बखारीक मुँह खुलि जेतैन, अनधुन बाजए लगती। तँए, तइसँ नीक जे जाबे अपनो मन असथिर हएत ताबे हुनको बहला-फुसला राखबे नीक...। बजलौं-

"एक गिलास पानियोँ पीआउ आ गामक हालो-चाल कहू।"

ओना, पत्नियोँ एते पतिपाना रखबे केली जे आन स्त्रीगण जकाँ पहिने अपन हकिमानी नइ देखा पानि आनए लगले बढ़ि गेली।

पानिक गिलास हाथमे पकड़बैत ताधैर पत्नी चुप रहली जाधैर आधा गिलास पानि कण्ठसँ निच्चाँ नइ उतैर गेल। ओना, हुनको मन अपन विचार कहैले पेटमे औंढ़ मारैत रहैन, मुदा तेकरा जहिना कियो कोढ़ परक दर्दकेँ हाथसँ ससारबो करैत आ बाकुटसँ पकैड़ असथिरो करैत तहिना बुझि पड़ैत रहए।

तैबीच गिलासक पेनियाएल पानि देखि पत्नी दिस आँखि उठेलौं कि पत्नीक आँखिसँ नोरक टघार टघरैत देखलयैन। हाँइ-हाँइ कऽ गिलासक पानि पीब मनकेँ थीर केलौं। ओना, मनमे लबड़दौर भाइक बात ठहैकते रहए, मुदा तेकरा दाबि-दाबि पेटमे ठेलैत पत्नीक नोरक टघार दिस तकैत पुछलयैन-

“आँखिमे किछु भेल अछि की?”

जहिना गजेरी गाँजा पीब निशाँएल धुआँकेँ मुँहमे ताबे तक घोंटैत रहैए जाबे तक ओकर रस भेटैत रहै छै तहिना विचारकेँ घोंटैत-घाँटैत पत्नी मुँह खोलली-

“जीतू कक्काक..!”

ओना, जीतू कक्काक नाओं लबड़दौर भाइक मुहेँ सुनि नेने छेलौं, मुदा पत्नीक मुँहक रूखि देखि बुझि पड़ल जे भादवक ओ अन्हार मनमे पसैर गेल छैन, जइमे टप-टप अन्हारक संग टप-टप बरखो होइए आ लाल टप-टप ठनको बिजलोकाक इजोतमे खसैले टप-टप करैए। ने पएरे धोने रही आ ने चाहे पीने रही आ ने देहक कोनो कपड़े उतारने रही, मन औनाए लगल।

पुछलयैन-

“एना किए चाउरक मुड़ीकट्टा तम्मा जकाँ बजलौं?”

जहिना अपन बेथा-कथाकेँ कियो कानि-कानि दोसरकेँ कहै छै आ जखन ओइ बेथासँ बेथित भऽ सुननिहारोक मनकेँ कननमुँह देखि बेथाक सन्तरण स्वत: हुअ लगै छै जइसँ बेथाक पीड़ा कमए लगै छै तहिना भरिसक पत्नियोंकेँ भेलैन। बजली-

“जीतू कक्काक परिवार आइ मेटा जइतैन!”

बजैत-बजैत पत्नी बताहि जकाँ बड़बड़ए लगली।

पत्नीक बड़बड़ाइत बोल सुनि मन भड़भड़ा गेल। मनकेँ भड़भड़ाइते बजलौं-

“जीतू कक्काक परिवारमे कोनो तेहेन अनहोनी नइ ने भेलैन जइसँ से..?”

अधहेपर सँ पत्नी बोल लोकैत बजली-

“आइ धर्मक असल परीक्षा भेल। जँ मिसियो भरि जीतू कक्काक मनमे अधरम रहितैन तँ जरूर किछु अनहोनी भइये जाइत।”

पत्नीक विचार सुनिते मनमे उड़ी-बीड़ी लगि गेल। उड़ी-बीड़ी ई लगल जे कखन जीतू कक्काक मुहोँ देखी आ बोलो सुनी।

जीतू काका ऐठाम जाइले विदा होइत बजलौं-

“पहिने जीतू काकासँ भेँट करब अछि, पछाइत बुझल जाएत।”

विदा होइते पएर जेना दौड़ए चाहए, पत्नी सेहो पाछूसँ रस्ता देखैत रहली। अखन तक कोनो एहेन स्पष्ट विचार कानमे आएले ने छल जे मन थीर भऽ विचार करैत। हरिणक बच्चा जकाँ मन चौचंग भइये गेल छल।

सूर्यास्त भऽ गेल छल मुदा दिनुका सभ सिरखार ओहिना छल

जेना सूर्यास्त होइतकाल रहैए।

दरबज्जाक चौकीपर बैसल जीतू कक्काक मुँहक रोहानी ओहने हरियर बुझि पड़ल जेना लड़ाइ जीतला पछाइत लड़निहारकेँ होइए। मुदा अन्हार घर साँपे-साँप जहिना बुझि पड़ैत तहिना अपनो मन जीतू कक्काक मुँहक रोहानी, पत्नीक मुँहक रोहैण आ लबड़दौर भाइक मुँहक लाड़ैनक बीच सकपकाइ छल। संजोग नीक बनल, अपने भरि दिन गाममे नइ रही, तहूमे पहिनेसँ किछु बुझलो ने छल, आ ने जीतूए काका किछु कहने छला। कौल्हकियो साँझमे दुनू गोरे केतेक काल धरि दुनियाँ-दारीक गप-सप्प केनहि छेलौं। जँ कनियोँ भनक लागल रहैत तखन ने कनियोँ दोखी होइतौं, से तँ नहि भेल। मन जेना सक्कत हुअ लगल। बजलौं-

"काका, भरि दिन गाममे नइ छेलौं, कनियेँ पहिने मधुबनीसँ एलौं हेन, अबिते-अबिते पत्नी कहलैन। सुनिते दौड़ल एलौं, तँए जाबे सभ बात नइ बुझब ताबे मन थीर नइ हएत।"

ओना, हमर बात सुनि जीतूओ काका मने-मन विचार करए लगला जे घटना तँ हमरो जानल नइ छल जे राधेश्यामोकेँ जनैबतिऐ। से तँ अचानक भेल।

जीतू काका बजला-

"राधेश्याम, जे होइए ओ नीके होइए। पहिने चाह पीबह पछाइत सभ बात असथिरसँ करब।"

जीतू कक्काक विचार सुनि मन कलशल। कलैशते उठल जे पहिने बिना किछु पुछने जीतूए काकाकेँ बाजए दिऐन। किएक तँ ठेंसल रस्ता जहिना लोकक मनक मुड़ियेपर रहै छै तहिना हेतैन।

तही बीच आँगनसँ चाह आबि गेल, दुनू गोरे पीबए लगलौं।

ओना, भीतरे-भीतर मन घटना सुनैले छटपटाइत रहए मुदा

जीतू कक्काक निचेनीसँ बुझि पड़ए जे किछु भेबे ने कएल छैन। फेर हुअए जे जँ जीतूए काकाकेँ अपना मने बजैले छोड़ि दिऐन आ जँ कहीं गोटे इतिहासक पन्ना उलैट गेलैन तखन तँ आरो बेसी कछमछैनी औत। तैसंग ईहो तँ ऐछे जे भरि दिन कचहरीक लफड़ामे ऐठाम-सँ-ओइठाम करैमे थाकल छीहे, तहूमे नहेलौं नहि से आरो देह भरिया कऽ भँसियाइत अछि।

बजलौं-

“काका, भरि दिन कचहरीक रेवाड़क मारल छी, तँए..?”

ओना, बजलौं इशारामे मुदा जीतू काका बुझि गेला। बाजए लगला-

“राधेश्याम, कोनो घटनाक विवरण ताबे तक नीक जकाँ नइ बुझि सकै छी, जाबे तक घटनाक कारक तत्त्व नहि बुझब।”

वौआइत मन जीतू कक्काक विचार सुनैले असथिर भइये गेल छल। मुड़ी डोलबैत बजलौं-

“हँ, ऐमे के नइ कहत।”

हमर बातमे जीतू काकाकेँ की भेटलैन से तँ ओ जानैथ मुदा साँससँ बुझि पड़ल जे मन सोल्होअना चैन छैन। बजला-

“ई तँ बुझले छह जे फल्लाँ संग फल्लाँक बेटीक संग घरसँ पड़ा केतौ चलि गेल। सेहो कियो देखलक नहि।”

मुड़ी डोलबैत बजलौं-

“हँ, ई तँ सभ बुझैए। रमेश रधियाकेँ फुसला केतौ चलि गेल, आकि रधिये रमेशकेँ फुसला लेलक, से जाबे दुनूक बिसवासू भाँज नहि लगि जाइए, ताबे किछु कहब उचित नहियेँ भेल।”

हमर बात सुनि जीतू काका बजला- “सएह ने!”

हमरो जेना सह भेटल। सह भेटते बजलौं-

"ईहो तँ नहियेँ बुझिमे अबैए जे दुनू संगे गेल आकि फुट-फुट। ईहो तँ भइये सकैए जे रमेश केतौ गेल हुअए आ रधिया केतौ।"

जीतू काका बजला-

"सेहो कोनो असम्भव नहियेँ अछि।"

बजलौं-

"गाममे एहेन ते हवे बहि गेल अछि आ गामे किए कहबै, आनो-आन गाम आ आनो-आन ठाम भइये रहल अछि।"

जीतू काका बजला-

"जइ टोलक लड़की रधिया छी ओइ टोलोक लोककेँ आ जेकर लड़की छी तेकरो तेना कऽ गामक किछु अगिलगौन अगिया देलक जे..!"

गामक लोकक नाओं सुनिते मन उड़ि गेल। बजलौं-

"काका कनी फरिछा कऽ कहियौ। पाँच बजे भोरे गामसँ निकैल गेल छेलौं।"

जीतू काका बजला-

"अपना आँखिये तँ किछु देखल नइ अछि मुदा बिसवासू लोकक मुहेँ कानक सुनल तँ अछिए। भेल ई जे भोरेसँ, ओना पैछला कए-दिनसँ गाममे काना-फुसी होइ छल, मुदा तइसँ हमरा की जे अनेरे अपन काज-धंधा छोड़ि ओइ पाछू वौऐतौं।"

बजलौं-

"हँ, से तँ नीके केलौं किने।"

जीतू काका बजला- "गाममे आकि समाजमे सभ रंगक लोको, सभ रंगक काजो आ सभ रंगक बुधियो-विचार अछिए। बेसी

लोक ओहने अछि जे गामक कटनियेँ पाछू लगल रहैए।”

बजलौं- “की कटनियाँ?”

जीतू काका बजला-

“झूठ-फूस बाजियो आ झूठ-फूस गढ़ियो गामक समस्याकेँ ओझराएब अपन बुधियारियो आ जीवनो बुझैए। जीवन भेल गमैया राजनीति आ पेट-पूजा। आब तोहीं कहऽ जे दुनू गोरे–रमेश आ रधिया–कौलेजमे पढ़ैए, एक गामक ओहन परिवारक छी जइ दुनू परिवारमे नौत-पिहानसँ लऽ कऽ आएब-जाएब तक, सभ तरहक सम्बन्धो अछि। तैठाम एहेन विचार उठब नीक भेल जे लड़काबला लड़को आ लड़कियोकेँ ताकि आनि उपस्थित करह?”

बजलौं- “जँ लड़काबला ताकि कऽ आनह तँ लड़कीबला ओइसँ कम दोखी अछि, वएह ने किए ताकि कऽ आनह? एक तँ अखन एहेन प्रश्ने नहि उठक चाही, जाबे लड़का-लड़कीक सही जानकारी नइ भऽ जाइए। तैठाम जँ एहेन विचार उठल तँ केतौ-ने-केतौ किछु कारण जरूर अछि।”

हमर बात सुनि जीतू काकाकेँ जेना मनसह भेटलैन। मनसह भेटते बजला- “राधेश्याम, सभ दिन तँ एकठाम बैस सबहक करनियोँ आ धरनियोँक गप-सप्प करिते छी। तँए तोरो बुझले छह जे गाममे केते कुकुरचालिक लोक अछि आ केते साँपचालिक...।”

आँखि उठा जखन जीतू कक्काक आँखिपर देलिऐन तँ बुझि पड़ल जे आँखिमे आगिक धधरा धधैक रहल छैन। बजलौं-

“से केकरोसँ चोराएल अछि। तखन तँ एहनो निरलज-पतितक कमी गाममे थोड़े अछि, मुदा...।”

‘मुदा’ सुनि जीतू काका अपन बहैत विचारक धाराकेँ रोकि मुस्कियाइत बजला- “ओना सभ गामक लोकक चालि-ढालि एकरंग

नहियेँ अछि। जइ गामक लोकक जेहेन आचार-विचारक जीवन अछि तइ गामक तेहेन विचारो बेवस्था तँ अछिए। ओना, अधिक गामक लोक ओहने अछि जेकर कोनो ठौरे-ठेकान ने छइ।"

'ठौर-ठेकान' सुनि अपनो मनक विचार उपकल। उपैकते बजलौं- "बेसी गामक बेसी लोक ओहने अछि जे झूठ बाजबकेँ चलाकी आ फसाद बढ़ाएबकेँ राजनीति बुझैए। राजनीतिक समाज ओहन अछि जे झूठकेँ राजनीति कहि पवित्र बना दइए। तैपर तेहेन-तेहेन खिस्सा-पिहानी गढ़ि-गढ़ि तेना झूठक दुनियाँ ठाढ़ केने अछि जे सत्यक नामे-निशान बदैल देने अछि।"

हमर बात सुनि जीतू कक्काक मनमे ठहकलैन। ठहकलैन ई जे राधेश्यामो वएह बात-विचार बुझि रहल अछि जे अपना मनमे अछि..!

विचारकेँ आगू बढ़बैत जीतू काका बजला- "राधेश्याम, दुनियाँमे एहेन कोनो काज नइ अछि जइमे केनिहारकेँ किछु नहि भेटैए। मुदा की भेटैए आ केते भेटैए से जँ बुझैक अबगैत ओकरा रहतै तखने ने बुझत। जँ से रहबे ने करतै ते बुझत की आ जखन बुझबे ने करत तखन भेटतै की।"

मुड़ी डोलबैत समर्थन दैत बजलौं-

"हँ, से तँ अछिए।"

अपन विचारमे सह पबिते काका बजला- "राधेश्याम, तोहूँ भरि दिनक थाकल छह आ हमरो जे दिन बीतल ओ ओहने बीतल, कखनो चैन नहि भेल। मुदा अधखरू बुझने मन औनेतह, तँए संक्षेपेमे जे भेल से कहि दइ छियह।"

जीतू कक्काक बढ़ैत विचारकेँ रोकब उचित नहि बुझि बजलौं-

"हँ, हँ काका, जखन अहूँ जीबै छी आ हमहूँ जीबै छी तखन

जँ कोनो बात बुझैमे नइ औत तँ काल्हियो-परसू बुझि लेब। अखन ताबे मूल-मूल बात बुझा दिअ।”

जीतू काका बजला-

“बेस कहलह। दिन भरिमे जे भेल ओकर समीक्षा अखने करितौं, तइ बिच्चेमे तूँ आबि गेलह, तँए समीक्षात्मक नहि मुदा जे जेना भेल से कहि दइ छिअ।”

जीतू कक्काक सोझराएल विचारो आ बोलियोसँ बुझि पड़ल जे जइले आएल छेलौं से भेटत। तँए दुनू कान ठाढ़ केलौं। कान ठाढ़ होइते मनमे भेल जे कनी आगूसँ चालि देब नीक हएत। बजलौं-

“काका, अहूँकेँ भरिगर काज पछुआएले अछि आ हमरो तेहने जकाँ अछि। तँए तेना कऽ बजियौ जे मनो मानि जाए आ बेसी समेओ ने लगए।”

बजला-

“तोरा ते काल्हि कहनहि रहिहह जे काल्हि बारह बजे बाहर जाएब।”

बुझल बात रहबे करए, तँए मुड़ी डोलबैत बजलौं-

“हँ, से तँ कहनहि छेलौं, बुझले अछि।”

जीतू काका बजला-

“करीब साढ़े दस-एगारह बजेक बात छी। पचास-साठि आदमी बुढ़िया गाछीक बैसारसँ उठि ललकारा दैत आबि चारूकातसँ घरकेँ घेर लेलक।”

बिच्चेमे टोकलयैन-

“बुढ़िया गाछीक बैसार नइ बुझलिऐ?”

जीतू काका- “जइ जातिक रधिया छी तइ जातिक टोल करीब

पचास-साठि घरक अछि। गामक सभ जातिक टोलसँ पढ़ै-लिखैमे पछुआएल अछि। मुदा आर्थिक दृष्टिसँ किछु प्रगति केबे केलक अछि। भोरेसँ सौंसे टोलक लोक ताड़ी-दारू पीब अपनाकेँ आक्रामक रूप तैयार कऽ नेने छल। गामक सेहो–आन-आन जातिक–करीब पनरह-बीस आदमी मिलि बैसारमे विचार केलक जे फल्लाँक (माने जीतू कक्काक) सभ किछु लूटि लेबाक अछि।”

जीतू कक्काक मुहेँ सभ किछु सुनि हदास उड़ि गेल। हदास उड़ैक कारण भेल जे एक तँ जीतू काका झूठ नहि बजै छैथ तैपर सभ किछु कहि देलैन।

बजलौं-

“सभ किछु नहि बुझलिऐ।”

बिकछबैत जीतू काका बजला-

“जहिना आन-आन गामक लोक अछि तेहने ने अपनो गामक अछि। जे केकरो कियो नीक तँ करए नइ चाहैए उनटे अधला करैक पाछू अपनो अधला करैले तैयार रहिते अछि।”

बिच्चेमे बजा गेल-

“हँ, से तँ अछिए।”

एकाएक जीतू कक्काक मन जेना कोनो नमहर पाथरक तर दबा गेल होनि तहिना बुझि पड़ल।

बजला-

“जेते लोक बुढ़िया गाछीक बैसारमे छल, सबहक विचार रहइ जे जीतूक सभ इज्जत-आवरू आइ नष्ट कऽ देब।”

जीतू कक्काक विचार सुनि मन एकाएक तरपल। तरपल ई जे जँ आइ गाममे रहितौं तँ जरूर लहास खसबे करैत, चाहे जेमहरसँ

खसैत। मुदा एहेन घाटपर नइ रहब अवसरक चूक जरूर भेल। मुदा अवसरो अवसरक होइए। जँ बुझल रहैत से आ नइ बुझल रहने अन्तर तँ एबे करत...।

बजलौं-

“काका, इज्जत-आवरूपर जखन आँच पड़त तखन लोक जीविये कऽ की करत।”

हमर बात सुनिते जीतू कक्काक हूबार्कें हजार गुणा मनसूबा मनमे अनलकैन। मनसुबाइत बजला-

“बौआ, जाबे धरि लूटिहारा दुनू पोतो आ दुनू बेटोकेँ मारि कऽ खसा नइ देने छल ताबे तक ठाढ़ भेल देखैत रहलौं। देखैत ई रहलौं जे अखन तक लहास खसैक परिस्थिति नइ बनल अछि मुदा जखन दुनू बेटाकेँ खसलपर मारैत देखलिऐ तखन मन बेकाबू भऽ गेल।”

बजलौं-

“काका, एहेन परिस्थितिमे केकरा नइ हएत जे अहाँकेँ नहि होइत।”

ओना, जहिना जीतू काका तरे-तर उत्साहित होइत रहैथ तहिना अपनो होइते रहए। मुदा दुनू गोरेक बीचक उत्साहमे एते कमी तँ रहबे करए जे जैठाम जीतू काका रणभूमिमे रणक्रिया जीत निवृत्त भेल छला तैठाम अपने रणभूमिसँ बाहर छेलौं।

जीतू काका बजला-

“बौआ राधेश्याम, एक तँ निहत्था छेलौं, दोसर ओकरा सभमे किछु निहत्थो छल जेकरा सभकेँ फाँइट-मुक्काक अनुभव छेलै, जे शहरी छल, बाँकीक हाथमे कोनो-ने-कोनो हथियार छेलैहे।”

जीतू कक्काक बात सुनैत-सुनैत मन बिसमित हुअ लगल। दुनू

आँखिसँ नोरक धार टघरए लगल।

पुछलयैन-

“काका! तखन?”

निधोख आ निधाइख जीतू काका बजला-

“बौआ, जखन लोक अपन जान गमबैले तैयार होइए तखने ने ओकरा जान पबैक शक्तिक सृजन सेहो मनमे होइते छइ।”

जीतू कक्काक मुहेँ विचारक नव बात सुनलौं तँए मन कनी विचार करए लगल, जइसँ नजैर निच्चाँ उतरल। मुदा जीतू काका तँ रणभूमिसँ विजय पेब आएल छला, ओ केना एको क्षण समयकेँ हाथसँ निकलए दइतैथ। रणभूमि तँ ओ भूमि छी जैठाम क्षणमे छनाक आ पलमे पलैक सकैए। तैठामक धारमे जीतू कक्काक उत्साहित मन बहैत रहैन। तँए बजैक क्रम रहबे करैन, बजला-

“राधेश्याम, जइ परिवारमे अपन इज्जत-आवरू-ले लोक अपन जान देत वएह परिवारक इज्जत-आवरू ने अपन शान धेने रहि सकैए।”

बिच्चेमे बजा गेल-

“हँ, एकरा के काटत।”

उत्साहित जीतू काका रहबे करैथ, बजला-

“एक गोरेक हाथसँ लाठी छीनलौं। छिनने लाठी तँ हाथ आबि गेल मुदा ओ चलाएब केना? जँ हाथ-पएर दिस चलाब तँ लाठियो छिना जाएत आ जे रूखि अछि ओ जान मारिए देत। मुदा जहिना सौंसे देहक सभ अंग रणभूमिमे उतैर गेल छल तहिना मनो आ विचारो ने उतैर गेल।”

मुड़ी डोलबैत बजलौं- “हँ, से तँ उतरिये गेल हएत।”

अपन कएल कृत्तिपर जीतू कक्काक मन उतरलैन। बजला-

“बौआ, दुनू हाथे लाठीक एक छोर पकैड़ लूटिहाराक कपारपर मारए लगलौं, जइसँ लाठियो सुरक्षित रहल आ खूनक धार सेहो बहब शुरू भेल।”

बिच्चेमे बजा गेल-

“रणभूमि तँ खूनेक धारसँ पटाओले जाइए।”

जीतू काका बजला-

“पान-छहटाक जखन कपार फुटलै तखन अपन मन विराम लेलक। तैबीच एकाएकी ओ सभ भागए सेहो लगल। धीरे-धीरे चैनक साँस आएल।”

जहिना जीतू काकार्कें चैनक साँस एलैन तहिना अपनो चैनक साँस अनैले बजलौं-

“काका, नहाएब तँ अखन नहि मुदा पानिसँ देह-हाथ पोछि जाबे कपड़ा नइ बदलब ताबे ने खाइ-पीबैमे नीक लागत आ ने रातिमे नीकसँ सुति पएब, तँए अखन जाइ छी। निचेनसँ काल्हि भोरमे आगूक गप-सप्प करब।”

❑

शब्द संख्या : 3115, तिथि : 01 मार्च 2017

कर्ज

अपन समैयक समाजक स्थिति देखैत विद्यापति अपन विचारक कलमसँ लिखने छैथ-

“दुख ही जनम भेल, दुख ही गमाओल, सुख कहियो ने भेल।”

ओना, विद्यापति आइसँ छह-सात साए बर्ख पहिने भेल छला मुदा हुनक लेखनीक महान विचार आइ नइ जीवित अछि से कहब महान आत्माक संग बेइमानी करब हएत। विद्यापतिये जकाँ महान-महान अर्थशास्त्रियो सबहक महान विचार अपन महान लेखनीसँ लिखले गेल अछि-

“लोक कर्जमे जन्म लइए, करजेमे पालल-पोसल जाइए आ करजेमे मृत्यु सेहो होइ छइ।”

ओना, अखन जे समाजक विचारधारा अछि ओहो ऐसँ भिन्न नहियेँ अछि, मुदा सोलहन्नी भिन्ने अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। ओना आइए नहि अदौसँ दू रंगक विचारधारा समाजमे बहैत आबि रहल अछि। पहिल अछि कल्याणकारी–माने अपनो नीक आ दोसरोकेँ नीक–आ दोसर अछि अकल्याणकारी–माने अनका अधला करैमे जँ अपनो अधला हुअए तैयो करब।

जहिना आन गामक समाज अछि तहिना हमरो गामक अछि। ओना, किछु किरिया-कलाप एकरंगाहो अछि आ किछु भिन्न सेहो अछिए।

भोरे आँखि मीड़िते ओछाइनपर सँ उठलौं कि रस्ता परक आवाज कानमे पहुँचल- “रामखेलावन दुनू भाँइक बीच माइयक सराधक भोज-ले तेहेन झंझट उठि रहल अछि जे माइक सराधक किरिया-कर्म कि करत जे अपनो जिनगीक बिटारि करत।”

एक तँ आजुक दिनक पहिल बात समाजक कानमे पहुँचल, दोसर अपन नित्य क्रिया-कर्म सेहो पछुआएले छल। ओना, बेकतीगत आ समाजक बीचक बात छी तँए पहिने केकरा कएल जाए, ई तँ मनमे उठबे कएल। मुदा लगले मन थीर भऽ गेल। थीर ई भेल जे अखन रामखेलावनक माएकेँ छबे दिन मुइना भेलैन, तेरहा सराध होइ छै, तँए दस दिनक पछाइत ने क्रिया-कर्म आकि भोज-भात शुरू हएत। बीचमे चारि दिन समय तँ अछिए, तँए ओइमे बेसी धड़फड़ी नहियेँ अछि। मुदा अपन भोरक जे नित्य-क्रिया अछि ओ तँ पछुआएले अछि।

मन मानि गेल, अपन नित्य क्रिया-कर्म दिस बढ़लौं। मुदा मनमे ई विचार नचिते रहल। ओना जैठामक काज छी तैठाम तेरहा सराधक चलैन अछि मुदा गाममे आरो-आरो सराध नइ अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। अर्द्धमासी, पूर्णमासीक चलैन सेहो अछिए। अर्द्धमासी भेल पनरह दिनक सराध आ पूर्णमासी भेल महिना दिनक।

समाजक काज देखैत अपन क्रिया-कर्ममे सतरकी केलौं। एक घन्टाक काज अधहे घन्टामे पुरा चौक दिस विदा भेलौं। गामक चौक तँ नमहर नहियेँ अछि, पच्चीस-तीसटा दोकान अछि, मुदा चौखरी तँ ओते ऐछे जेते आन गामक नमहर चौकमे रहैत अछि।

चौखरी भेल अपन-अपन विचारो आ बेवहारोनुकूल पाँच-दस गोरे एकठाम बैस परिवारो आ समाजोक क्रिया-कलापक समीक्षो

करैत आ ओइमे नूनो-तेल लगबैत, आगियो पजारैत आ शान्तसँ मिझेबो करैत।

गामक चौकपर बैसनिहार अपन-अपन चौखरीमे बैस अनधुन 'रामखेलावनक भैयारी'क विचारपर धुर-झाड़ भाषण दइये रहल छल। रस्ता धेने अपन चौखरी दिस बढ़ल जाइ छेलौं। अनधुन दुनू दिससँ दुनू भाँइक विचारकेँ अपना-अपना विचारे औंटल-पौड़ल जा रहल छल।

ओना, मनमे ईहो भेल जे नीक हएत रामखेलावने ऐठाम पहुँच दुनू भाँइकेँ पुछिऐ। मुदा बीचमे बाधा उपस्थित ई भेल जे जइ काजे विवाद उठि कऽ ठाढ़ भेल अछि, ओइ विवादक जड़ियेकेँ अपने नइ मानै छी। कहलो गेल छै जे 'जे भोज नइ खाइ, ओइमे पारा मरह।' फेर हुअए जे समाजक समास्या छी, समाजक समस्याकेँ जँ समाज नइ बुझि-सुझि समाधान करत तखन समाजे कि भेल। समाज तँ ओहन बन्धन छी जइमे समाजक सभकेँ अपन-अपन विचार रखैक अधिकार अछि। हमहूँ तँ अही समाजक ने एकटा अंग छिऐ, जखने अंग छिऐ तखने किछु अधिकारो आ कर्तव्यो तँ भइये जाइए। तैबीच मन गुनधुन ईहो करए जे समाजमे जेते लोक अछि ओते विचारक जँ समावेश हुअ लगै तखन तँ जहिना कहबी छै जे 'मुसहरक बीचसँ मूस पड़ा जाएत, तहिना हएत। घमरथने तेते हएत जे काजे नष्ट भऽ जाएत।

गंगाराम आ रामखेलावन सहोदर भाए। गंगाराम जेठ आ रामखेलावन छोट। डेढ़-दू बीघा खेतबला परिवार अछि। डेढ़ दू बीघा खेतबला किसान परिवारक की दशा अछि से सभकेँ बुझले अछि।

पैंतीस बर्ख पूर्व गंगाराम अपन पारिवारिक स्थितिसँ तंग आबि दिल्ली गेल। शहरो-बजारमे पहिलुका अपेक्षा कारोबार बढ़बे कएल अछि जइसँ काजोमे बढ़ोत्तरी आबिए गेल अछि।

दिल्ली जाइते गंगारामकेँ एकटा वेपारी ऐठाम नोकरी भेट गेल। नमहर कारोबारक वेपारी ऐठाम रहने गंगारामकेँ दरमाहाक संग बाइलियो आमदनी हुअ लगल।

शुरूमे गंगाराम अपन दरमाहामे सँ थोड़-बहुत गामो पठबए आ जे बँचि जाइ ओ बैंकमे जमो करए। ओना, ओइ समयमे गंगाराम असगरे–माने बिनु परिवारे–दिल्लीमे रहै छल, पितो जीविते रहथिन। किछु दिनक पछाइत पिता मरि गेलखिन।

पिताकेँ मुइला पछाइत गंगाराम गाम आबि सराध-कर्म केलाक पछाइत अपन बच्चो आ पत्नियोंकेँ नेने दिल्ली चल गेल। दिल्लीमे जमीन कीनि तीन कोठरीक घरो बना लेलक।

रामखेलावनक अपनो परिवार–माने पत्नी, बच्चा–आ माइयो गामेमे रहल। जएह खेत-पथार छेलै तेकरे उपजासँ परिवार चलबए लगल। माएकेँ दमा रोग गरसने। जएह आमदनी रामखेलावनक छल ओहीमे माइयक दवाइयो आ पत्थो-पानि करए लगल।

जहियासँ गंगाराम परिवार लऽ कऽ दिल्ली गेल तहियासँ घरमे रुपैआ पठाएब बन्न कऽ देलक। अपन मकानक एकटा कोठरी अपने रखलक आ दूटा कोठरी भाड़ामे लगा देलक। जइसँ आमदनीमे बढ़ोत्तरी सेहो भेल। तैसंग ईहो भेल जे किछु दिनक काजोक अनुभव भऽ गेलै आ मालिकक–वेपारीक–बिसवासू नोकर–आदमी–सेहो भइये गेल। जइसँ आमदनीमे काफी बढ़ोत्तरी भऽ गेलइ।

किछुए दिनक पछाइत मकानक ऊपर सेहो तीनटा कोठरी बना भाड़ा लगा लेलक।

अपनो चौखरी, जइमे सभ दिन बैसै छी, जमल छल। रंग-बिरंगक गप-सप्प चलि रहल छल। चौखरीक रूखि आ सामाजिक दायित्वक बीच मन घेराएल छल। जेना आन-आन गोरेक मुहसँ सुनि

रहल छेलौं ओहिना जँ अपनो बाजए लगितौं आ ओ जँ समाजक विपरीत होइत तखन तँ अनेरे बखेरा ठाढ़ होएत, तइसँ नीक अपनाकेँ सोलहन्नी अनभुआर बना मुँह बन्न केने चुपचाप सबहक गप सुनए लगलौं। गपक कोनो थाहे ने लगए। कियो गंगारामकेँ विवादक दोखी कहैत तँ कियो रामखेलावनकेँ। तैसंग ईहो देखिऐ जे किछु एहनो लोक रहए जे दुनू दिसक विचारमे ओझरी लगा-लगा बजैत। ओकर मनसूबा रहै जे दुनू भाँइक बीच तेहेन विवाद फँसै जे माइयक सराधे-कर्म बाधित भऽ जाइ। जइसँ भविसमे दुनू भाँइमे कियो मुहेँ ने उठा पाओत। माता-पिताक सराध-कर्म समाजक एकटा पैघ काज छीहे।

संजोग नीक बैसल। संजोग ई नीक बैसल जे दोकानक काजे रामखेलावन चौकपर आएल। ओना, अबिते-अबिते रामखेलावन सकदम भऽ गेल। सकदमक कारण भेल जे जेकरा-तेकरा मुहेँ अपने आ अपन परिवारेक कुट्टी-चालि सुनैत रहए।

कियो रामखेलावनक पक्षमे तँ कियो विपक्षमे अनधुन बजैत। केकरा मुँहमे की जवाब देत से रामखेलावनकेँ फुरबे ने करइ। मुदा मुँहपर अपनो आ अपन परिवारोक अकची-दोकची कियो बजैत रहए आ चुपचाप सुनैत रही, ईहो तँ मतहानि छीहे। केकरा बरदास हेतइ। मुदा सबहक मुँहमे जवाबो देब ओते असान नहियेँ अछि, तँए रामखेलावन दोकानक आगू मे ठाढ़ भेल चारूकातक विचार चुपचाप सुनैत रहए।

नजैर उठा जखन चौकक चौखरी दिस बढ़ेलौं कि दोकानक आगूमे रामखेलावनकेँ ठाढ़ देखलिऐ। मनमे उत्कंठा रहबे करए, तैसंग गरो भेट गेल। रामखेलावनकेँ हाक पाड़लिऐ। जहिना रामखेलावन सुनलक तहिना दोकानपर सँ आगू बढ़ि लगमे आएल। ओना, जेहेन हताएल सुरखी रामखेलावनक मुँहक पहिने छल तइमे

थोड़े हरयरी टपकलै। हरियरी टपकैक कारण भरिसक ई भेलै जे अपन विचार रखैक गर पौलक। लगमे अबिते रामखेलावन बाजल-

"की कहलौं भाय साहैब?"

रामखेलावनक बात सुनि श्रद्धा उपकल। श्रद्धा उपैकते मनमे मीठाँस सेहो आएल। मीठाँस अबिते वाणीक स्वर मिठाइये गेल छल। बजलौं-

"की हाल-चाल रामखेलावन?"

हमर बात सुनिते रामखेलावनकेँ जेना समोह लगि गेलै तहिना बाजल-

"की हाल-चाल रहत भाय साहैब! तेहेन परिवारमे जन्म भेल जे घिनाइ छी..!"

ओना बजैक क्रममे रामखेलावन सोझे मुहेँ बाजल। मुदा बुझि पड़ल जे अस्सी मनक दाबमे वेचाराक विचार दबले छइ। रामोखेलावनक दबैत जिनगीक विचार सुनि अपनो मनमे अस्सी मन पानिक दाब पड़ि गेल।

दाब ई पड़ल जे रामखेलावन सन मातृ-पितृ भक्तकेँ उद्धार केना होइतै, तँ आरो ऐगला जिनगीक दाब पड़ि रहल छइ! कहू जे ई केहेन हएत जे पैंतीस बर्खसँ–जहियासँ जेठ भाय दिल्ली चलि गेलै–असगरे ओहन माइक सेवा केलक। जे कर्महीन भऽ चुकल छेली। अपनो आ अपन परिवारोक पेट काटि रामखेलावन माएकेँ पथ-पानि जुटबैत रहल। तहूमे वेचारी (माए) रोग बढ़ै दुआरे ने परिवारक चिन्ते करै छेली आ ने भरिगर काजे करै छेली। एक माइक सेवा भेल जे शरीरसँ स्वस्थ भरपूर श्रम करैत परिवारमे रहैवाली, जिनका आगू बेटा हुकुमदार जकाँ भक्ति करैए आ दोसर भेली जे उचितो श्रमसँ निच्चाँ उतैर बेटाक भार बनि हुकुमदारी करैत। मुदा से नहि,

रामखेलावन समाजक ओ विचार अँगेजने छल, जइ विचारक समाजमे ओहनो-ओहनो माए भेली जे जहिना वुद्धिसँ छक्का-पंजा नइ जनैत तहिना श्रमो आ स्वास्थोसँ छेली वा छैथ...।

बजलौं-

“रामखेलावन, जखन परिवारे घिनाइक बात छह तखन सोझरा कऽ कहह जे केना-केना की-की बात अछि, जे अपनाकेँ घीनसँ घिनाइत बुझै छह।”

जहिना तरसैत-तलपैत-कनैत कियो अपन बेथा-कथा दोसरक हृदयमे पहुँचा अपन हृदय जुड़बैए तहिना रामखेलावन बाजल-

“भाय साहैब, ई तँ बुझले अछि जे तीन भाए-बहिन छी। तीनू भाए-बहिनक माए छी।”

बिच्चेमे बजा गेल-

“एकरा के काटत।”

मुदा लगले अपसोच हुअ लगल जे धड़फड़ा कऽ बाजि गेलौं। माइक तीनू सन्तान तँ जरूर छी। मुदा दू भाए, एक बहिनक ने बात अछि। अखने सोझामे जे काज उपस्थित भऽ गेल अछि, तइमे बहिन भेल सराध-कर्मक तीन दिनक वा दस दिनक अधिकारी। तीन दिनपर सारा बनिते तुलसी रोपि कठियारीबलाकेँ नौत दऽ खुआ देलिऐ आ पाक-साफ भऽ गेलौं। मुदा से तेरातिक भोज अपने टुटैत दसम दिन पहुँच गेल। आब दसम दिन कठियारीबलाक भोज होइए। भोज तँ जरूर घुसैक गेल मुदा सभ बेवहारो तँ नइ घुसकल। केशकट्टी अछि, अपन परिवारो आ दियादोवाद दस दिनपर केश कटबै छैथ–अखन मासी वा अर्द्धमासी सराध-कर्मक चर्च नइ बुझू–बाँकी जे कठियारीक वरियाती रहै छैथ ओ तेसरे दिनपर अपन केश कटा उरीन भऽ जाइ छैथ। हलाँकि ओ नीके अछि, अनेरे जे

छुतकाबला दाढ़ी-केश रखि गामक सीमा बन्हने रहत तइसँ तँ नीक ने जे ओइसँ जल्दी पिण्ड छुटतै...।

रामखेलावनक विचारपर जेते नजैर जाए ओते ओझराएल जाइत रही। मुदा लगले मनमे भेल जेतए-जेतए रामखेलावन ओझराएल अछि, पहिने ओ बुझी। तँए नीक हएत जे रामखेलावनेक मुहेँ किए ने सुनी। हमहूँ तँ आखिर गामक चौखरीपर दस गोरेक बीच बैसल छी, जँ केतौ किछु विचारकेँ तोड़-जोड़ करए पड़तै, सेहो तँ कइये सकै छी।

रामखेलावन बाजल-

"परिवारमे जखन बहिन-बहिनोइक एहेन किरदानी भऽ गेल जे रोगाएल-टटाएल माएकेँ कहियो देखए नइ आएल तखन मुइलापर आबि सराधक भोज कए लोककेँ देखौत। ओकरा ऐ काजमे टपए नइ दैतिऐ, तेकरा भैया अगुरवारे नौत पठा अगुरवारे बम्बैसँ बजा लेलक, तैकाल हमर परिवार नइ छल।"

रामखेलावनक विचार सुनि मन ठमैक गेल। ठमैक ई गेल जे तीनू भाए-बहिन जँ सालक चरि-चरि मास माएकेँ रखैत, तँ रामखेलावनकेँ आठ मासक आफियत तँ भेटबै करितै। पाइयो बँचितै माने दवाइक खर्च नइ होइतै आ चिन्तामुक्त मेहनतो करितए। से तँ दुनू अन्याय करबे केने अछि। मुदा लगले मनमे ईहो हुअए जे अखन काजक दौड़ अछि, जँ बीचमे उचित कहीं बजैत बलझग्गड़ भऽ जाइ तखन तँ आरो रामखेलावनकेँ पछड़ा पड़ि जाएत, तइसँ नीक जे अखन कोनो प्रश्नकेँ हँ-निहँस बिना केने प्रश्ने सभकेँ तहिया-तहिया किए ने रक्खी। काजक पछाइत बुझल जाएत।

बजलौं- "ई एकटा बात भेल। आब दोसर बाजह।"

मुहसँ 'दोसर' निकलबे कएल कि टपाक-दे रामखेलावन बाजल-

"अहीं कहू जे की उचित होइ।"

भीतरे-भीतर रामखेलावनकेँ अपन कएल कर्मसँ शक्ति अबैत रहै जेकरा ओ तेहाला मुहेँ सुनि अपना मनकेँ जुड़बए चाहैत रहए मुदा हमरो संग तँ विचारणीय प्रश्न अछिए।

विचारणीय प्रश्न ई अछि जे जे काज–माइयक सराध-कर्म–रामखेलावनक छी तेकर नीक-अधलाक भागी ओ बनत, हमरा तँ तइसँ कोनो हानि-लाभ नहि, मुदा जँ अखन किछु एहेन उचितो बात बाजि दी आ तीनू भाए-बहिनक बीच विचारक विवाद फँसि जाइ जइसँ रामखेलावनक माइक सराधे-कर्म दुरि भऽ जाइ तखन ओकर मानि अड़त, आ दोसर-तेसर या तँ अपने विचारे वा आनेक विचारसँ अड़ि जाएत तँ विवाद फँसबे करत, जइसँ सराध-कर्म गड़बड़ेबे करत। ओना, भोज-भात बड़ नीक काज नहियेँ अछि मुदा सामाजिक जइ बेवहारमे रहि रहल छी तइ हिसाबे तँ नीक काज अछिए। बजलौं-

"एना-एकाएकी प्रश्न सबहक जवाब देब धड़फड़ा कऽ देब हएत, तँए पहिने सभ बात खोलह, जइसँ मिला-जुला कऽ एकेबेर जवाब देबह।"

ओना, रामखेलावनक मन कनी घुरियाएल मुदा काल्हि साँझू पहर जे भैयारीक बीच रक्का-टोकी भेल छेलै तइमे तँ किछु जान एबे केलइ। जइसँ मन थोड़ेक निच्चाँ मुहेँ उतैरिये गेल छेलइ।

बाजल-

"बड़बढ़ियाँ भाय साहैब, आब दोसर सुनू।"

अपनो इच्छा छल जे कोनो विचारकेँ निर्णायक दौड़मे आनैसँ

पहिनहि किछु तोड़-जोड़ करैक अवसर रहै छै, मुदा निर्णय केलाक पछाइत तँ ओ बन्हा जाइए, टोकारा दैत बजलौं- “हँ-हँ, जखन सुनियेँ रहल छी तखन सभ बात सुनबह।”

‘सभ बात’ सुनि रामखेलावनकेँ जेना आरो शान्ति मनमे एलै तहिना बुझि पड़ल, जइसँ अपनो मनमे भेल जे किछु उपकार तँ रामखेलावनकेँ भइये रहल अछि।

रामखेलावन बाजल- “भाय साहैब, दोसर बात अछि जे देखिते छी जे डेढ़-दू बीघाबला किसानक जिनगीमे जीब रहल छी, भैया एकोटा पाइ नइ दइए। जखन कि दिल्लीमे पचास लाखसँ ऊपरेक सम्पैत बना सबतूर सुख करैए, तैठाम सवूर केने जेना-तेना दिन काटि रहल छी। पैंतीस सालसँ माइयक सेवा करैत एलौं हेन। अखन अन्तिम काज उपस्थित भऽ गेल अछि। एकरो तँ ओ करह।”

अपना जनैत रामखेलावन अपन मनक सभ बात बाजि गेल मुदा हम नीक जकाँ नइ बुझि पेलौं जे रामखेलावन की कहए चाहैए। बजलौं-

“नीक जकाँ तोहर बात नइ बुझि पेलौं रामखेलावन, तँए कनी फरिछा कऽ बाजह।”

बाजल-

“भाय साहैब, पैंतीस बर्ख जे माइक सेवा केलौं तेकर बदला नइ कहै छिऐ, जँ हम असगरे रहितौं, जेना आन-आन अछि, तखन केकरा कहितिऐ, तँए माए बुझि सेवा केलौं।”

बिच्चेमे बजा गेल-

“माए-बापक सेवा श्रवण कुमारे केलैन आकि तोंही केलह। अनका जकाँ नहि जे माइये-बापकेँ भीन कऽ दिऐ आ अन्न-वस्त्र दुआरे मुँह तकबइये।”

'अन्न-वस्त्र' सुनिते रामखेलावनक मनमे आरो बेसी सेवा-भक्त जगलै। बाजल-

"भाय साहैब, अहीं कहू। अपना जनैत माएकेँ कहियो फाटल वस्त्र देहपर आ खाइ-पीबैक कोनो सेहन्ता रहए देलिऐ?"

रामखेलावनक करमाएल मन देखि बजलौं-

"रामखेलावन, एकटा बात कहऽ तँ जे अपन मन की कहै छह?"

'अपन मन' सुनिते रामखेलावन थकमका गेल। थकमकाइक अनेको कारण मनमे नाचए लगलै। नचैक अनेको कारणमे प्रमुख छल जे जइ समाजक बीच–कोनोमे 'जवार' तँ कोनोमे 'सौजनी' तँ कोनोमे 'मैनजनी' इत्यादि सराधक भोज जे बैस कऽ खाइत एलिऐ, ओकरा केना छोड़ि देबइ। जखन कि लोक हमरा जनैए, जेते भैयाकेँ लोक पाइबला बुझैए, तइ हिसाबे जँ किछु ने करब से केहेन हएत..?

रामखेलावनकेँ ठमकैत देखि बजलौं-

"एना चुप नइ हुअ। चुप्पीसँ नइ हेतह। साफ-साफ, झाड़ि-ओसा सभ बात दस गोरेमे बाजह। बिनु कहनहि पंचो सभ भेटिये गेल छथुन। बुझिते छहक जे दसेमे भगवान बसै छैथ। पंच परमेश्वर होइते छैथ।"

एक्के मनुक्खकेँ दुनू रूप सेहो अछिए। जइसँ मर्तलोकसँ देवलोक तकक धार बहिते अछि। मनुक्खक दू रूप ई भेल जे जखन कियो अपराध वा कोनो विचार दोसरोकेँ कहैए तखन एक रूपमे–माने मानवीय रूपमे–मुदा जखन दोसरक अपराध सुनबो करैए आ ओकर निराकरणो करैए तखन ओ देवलोक-तुल्य भइये जाइए। तहिना विचारो आ विचारक काजोक तँ अछिए।

'पंच परमेश्वर छिया' सुनि रामखेलावनक मन आरो पसीज

गेल। अपनो मन कहए लगलै जे अखन माइयक कर्ज चुकबैक अछि, तँए जँ लोकक पएरो-दाढ़ी पकड़ने नीक जकाँ काज निपैट जाए तँ ओ नीक भेल। गप-सप्पमे कनी टुट-नफा कोनो माने नहि रखैए, मुदा कर्मक टुट-नफा तँ जश-अजशक भागी बनाइए दइए। तहूमे जैठाम माता-पितासँ उतरी उतारि उरीन हेबाक अछि तैठाम जँ कनी लियौन भऽ कऽ काज नहि सम्हारब तँ ओ बुड़िबकी हएत।

रामखेलावन बाजल-

"भाय साहैब, बहिन-बहिनोइ जँ अगुरबारे दरबज्जापर आबिये गेल, अखन तक जे केलक वा नइ केलक तेकर भागी तँ वएह ने भेल। ओकरो साझी माइयक सराध-कर्ममे तँ छइहे, भने समाजो काजे बेरा देने अछि।"

'काज बेरा देने अछि', से बुझबे ने केलौं जे रामखेलावन बिच्चेमे की बाजि देलक। मुदा जखन कोनो समस्या सुनि रहल छी आ समस्याक विषयकेँ नीक जकाँ बुझबे ने करब तखन अपन विचार राखब केते उचित हएत। मनमे कट-कुट हुअ लगल। बजलौं-

"रामखेलावन, कनी एकटा बात फरिछा दएह, समाज की काज बेरा देने अछि?"

रामखेलावनक मनमे गुरुआइक आभास भेल। मुस्की दैत बाजल-

"भाय साहैब, ओना तँ रंग-रंगक सराध-कर्म समाजमे अछि। पहिने बहिनक हिस्सामे तेराति छल, जइ दिन छौरझँप्पी होइए, मुदा आब ओ नह-केश दिन आबि गेल। तँए ओइ दिनक काजक हिस्सा ओकर भेलइ। भने ताबे छुतकेमे रहब। माने ई जे एकादशा दिन सराध-कर्म शुरू भेला पछाइत छुतका कले-कले कमए लगैए जे द्वादशाक कर्मक पछाइत छुटैए।"

अपन पनचैती रामखेलावनकेँ अपने करैत देखि मनमे खुशी एबे कएल, खुशी भेल। खुशी अबैक कारण ई जे जँ कर्ताकेँ कर्मक क्रियागत ज्ञान भऽ जाइ आ जँ ओकर इमानदारीसँ वहन करए तँ जेते विवाद समाजमे पसरल अछि तेते थोड़े रहत। बजलौं- “रामखेलावन तूँ जे हमरा चरियबै छेलह से हमहूँ तँ यएह विचार ने दैतियह जे तोरा बुझले छह।”

हमर बात सुनि रामखेलावनकेँ की भेटलै से तँ ओ जानए मुदा मनक कलशसँ बुझि पड़ल जे जइ समस्यामे रामखेलावन फँसल अछि ओकरा ई अपने फूसि-फटक बना उड़ा देत।

तैबीच रामखेलावन बाजल- “भाय साहैब, कियो करैए अपना-ले। माइयक सेवा बहिन केलक वा नइ केलक तेकर भागी ओ छी, हम अपने भागी ने हएब।”

‘अपन भागी’ सुनि आरो मनमे बिसवास जगल। जगबो केना ने करैत, दुनियाँमे जेते लोक अछि ओ अपन हिस्साक भागी अछि किने...।

बजलौं- “रामखेलावन, हमरा नजैरमे कहाँ केतौ ओझरी छह?”

अपन मनक बात रामखेलावन बाजल- “भाय साहैब, जेते घोल-फचक्का भेलै ओ नीक्के भेल।”

रामखेलावनक बात उनटा बुझि पड़ल। उनटा ई जे लोक अपन परिवारक बातकेँ झाँपि-तोपि रखैए आ रामखेलावन किए एना बाजल..?

बजलौं- “से की रामखेलावन?”

परिवारक विचारवान पुरुख जकाँ बाजल- “भाय साहैब, अहीं कहू जे भाए आकि बहिन माए-बापक सेवामे जँ छक्का-पंजा करत

तँ ओ दोखी भेल किने?”

बजैक साहस तँ नइ हुअए मुदा लगले भेल जे जे अपन इज्जत-आवरूकेँ धोइ-पोछि कऽ साफ-सुथरा राखए चाहै छैथ वएह ने धुअल-पखारल माने साफ-सुथरा मनुक्ख भेला, से तँ रामखेलावनमे जगमगाइते अछि..!

बजलौं- “रामखेलावन, काजक दौड़ छह अगुताएल नइ ने छह?”

“अगुतेने कोनो काज चलैए।” रामखेलावन लगले सुरे बाजि ईहो बाजल-

“जखन काजेमे छी तखन सभ काज करिते चलब किने।”

पुछलिऐ-

“एकबेर चाह पीबह?”

बाजल-

“अखन हम छुतकामे छी, तँए अपना हाथे तँ नहि आनब मुदा पाइ हमहीं देबइ।”

बजलौं-

“बड़बढ़ियाँ।”

रामखेलावनकेँ जेना पछुलका छुटल बात मोन पड़लै तहिना बाजल-

“भाय साहैब, कहै छेलौं जे काजमे जेते घोल-फचक्का होइए तेते नीके होइए।”

हमरो जेना छुटल बात मोन पड़ि गेल। बजलौं- “से की?”

रामखेलावन बाजल- “कोनो काजमे जेते घोल-फचक्का होइए तेते दूर तक ओ पसरैए। जेते दूर तक पसरैए तेते लोकक

जिज्ञासा ओइ दिस बढ़ैए।”

बिच्चेमे बजा गेल-

“हँ, से तँ होइते छइ।”

अपन विचारमे सह पबैत देखि रामखेलावनक मनमे बिसवासक खुशी जगलै। बाजल-

“भाय साहैब, जँ चुपे-चाप अपने सभ–भाए-बहिनक बीच–मे सोलह-सलुकत कैये लैतौं तखन आन थोड़े बुझैत। जखन आन बुझबे ने करैत तखन नीक-अधला बेराइत केना..!”

कहलिऐ-

“बढ़ियाँ विचार बजलह।”

मुस्की दैत रामखेलावन बाजल-

“आब दोसर समस्या कहै छी। देखिते छिऐ जे अपना सभैतीमे जे भोज होइए तइमे खाइले जाइते छी। जेकर माए-बापक सराधक भोज खेलिऐ, तेकरा जँ अपन माए-बापक बेरमे नइ खुएबै तँ कियो नीक कहत?”

रामखेलावन विचार सुनि बजलौं-

“भोज तँ लोक विभवक अनुसारे करैए। जेकरा जेते रहल से तेते केलक आ जेकरा नइ रहल ओ नइ केलक।”

हमर बातक जवाब जेना रामखेलावनक जीहेपर छल तहिना बाजल-

“से तँ अपनो बुझै छी मुदा हम गाममे रहै छी, तेना भऽ कऽ आन गामक लोक नइ चिन्हैए जइसँ भोज नहियोँ करितौं ते ओते चर्च-बर्च लोक नहियोँ करैत, मुदा भैयाकेँ के दस गामक लोकक के कहए जे इलाकाक लोक जनैए।”

बजलौं- “परोछक बात तूँ केना बुझै छहक?”

रामखेलावन बाजल-

“भतीजीक बिआह भैया दिल्लीमे केलक। हमहूँ गेल रही, पाँच साए खण्ड साड़ी हित-अपेछित सभ देने रहइ। कियो एक खण्ड कियो एक जोड़, आब अहीं कहू जे केते भेल?”

रामखेलावनक विचार मनकेँ अँटकौलक। मुदा अपने अँटकलौं नहि, बजलौं-

“बहुत समय भऽ गेल, जल्दी अपन विचार अन्त करह।”

बाजल-

“भैया ऐठाम भोज नइ करऽ चाहैए, ओ दिल्लीए-मे करत।”

हमरा बजा गेल-

“एतए करए आकि ओतए करए, करत तँ माइये नीविते किने?”

रामखेलावन बाजल-

“से तँ अपनो बुझै छी, मुदा ऐठामक समाज थोड़े बुझत। हमरा तँ ऐठामक समाजक कर्ज ने अछि। ओ तँ परिवारेक ने भेल। परिवारो तँ अखन तक सम्मिलिते अछि किने। भलेँ ओ अपन करैए आ हम अपन।”

रामखेलावनक प्रश्नमे दम बुझि पड़ल। मुदा ईहो शंका तँ मनमे रहबे करए जे काजक दौड़ छी जँ कोनो एहेन उट-पटाँग बात बजा गेल आ काजमे कोनो विघनेस भेल तँ दोखी बनब। तँए मनमे ईहो होइत रहए जे सभ बात बुझला पछाइतो निर्णयक सीमापर नहि जाएब। बजलौं-

“रामखेलावन, तोरा सन विचारवान लोक केते परिवारमे

अछि। पहिने अपना ढंगे काजकेँ निमाहह। विचार कि केतौ पड़ाएल जाइए। पछातियो हएत।”

हमर बात रामखेलावनकेँ नीक लगलै। बाजल-

“भाय साहैब, अपना जनैत तँ सामंजसमे लगले छी तखन देखियौ।”

गर पेबिते बजलौं-

“अखन चारि-पाँच दिन बीचमे समैयो अछि। भोजो की केतौ पड़ाएल जाइए। लगला सूढ़मे भेने तेरहे दिनमे पाक-साफ भऽ जाइए, नइ तँ कियो भोज उठा कऽ रखलक, तँ कियो पहिलुक छायामे केलक, नइ तँ बर्ख दिनपर बरखीमे करैए, चाहे तँ तेकर पछातियो करैए।”

रामखेलावन बाजल-

“देखियौ की होइ छइ।”

❑

शब्द संख्या : 3252, तिथि : 07 मार्च 2017

बेटीक लिलसा

बीस बर्ख नोकरी केलाक पछाइत चिन्तू मास्सैबकेँ अपन बाल-बच्चाक पढ़ाइ-लिखाइपर धियान एलैन। ओना, पाँच सालसँ सन्तान नहि भेलैन अछि मुदा नइ होइक संभावना समाप्त भऽ गेलैन सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। सन्तान भाइयो सकै छैन मुदा तइ दिस मास्सैबक नजैर नहि एलैन। अखन जे दूटा बेटी आ दूटा बेटा छैन तेतबेमे विचार अँटैक गेलैन।

हाइ स्कूलमे चिन्तू नोकरी करै छैथ, एम.ए. पास छैथ। बाल-बच्चाक पढ़ाइपर नजैर पड़िते मन पाछू उनैट पितापर गेलैन। पितापर पहुँचते मोन पड़लैन अपन पढ़ाइ। अपन पढ़ाइ मोन पड़िते मन अपन विचारोपर एलैन। जखन पढ़ैत रही तखन कहियो मनमे नहि भेल जे 'इंजीनियर' बनब कि 'डॉक्टर' बनब। गामक स्कूलसँ पढ़ाइ शुरू केलौं आ दरभंगा कौलेजमे समाप्त केलौं। जहिना अपना मनमे इंजीनियर-डॉक्टर नइ आएल छल तहिना पितोजीक मनमे नइ आएल छेलैन। सोझमतिया लोक पिताजीक सोझ विचार छेलैन जे पढ़ल-लिखल लोकक आचार-विचार, क्रिया-कलाप सुधैर कऽ अगुआइत चलत। यएह ने भेल विकासक प्रक्रिया। मुदा लगले चिन्तू मास्सैबक नजैर अपन बाल-बच्चापर पड़लैन। चारि भाए-बहिन अछि चारूकेँ शिक्षित बनाएब...।

ओना, चारि सन्तानमे जेठ बेटी बीचमे माझिल-साझिल दू बेटा आ सभसँ छोट बेटी जे पाँच सालक छैन। जेठ बेटी पनरह सालक

छैन जे मैट्रिकमे परीक्षा देत आ माझिल बेटा नौमामे आ साझिल पाँचमामे पढ़ै छैन। छोटकी बेटी सेहो स्कूल जाइते अछि।

बाल-बच्चाक पढ़ाइ दिस नजैर पड़िते मास्सैबक मनमे विचार उठलैन जे जेकर काज छी–माने जे पढ़ैए–तेकरोसँ एक बेर पुछि लिऐ जे आगू की पढ़ए चाहैए।

अखन तक चिन्तू मास्सैबक मन आन शिक्षकक देखा-देखीक धारामे बहि रहल छेलैन। तीस हजारक नोकरी, परिवारमे समटल काज तँए महिने-महिने किछु बँचिये जानि जे घटैन नहि। एक तँ छोट परिवार माने छह गोरेक आश्रम, दोसर किछु बपौतियो सम्पैत–खेत-पथार–छैन्हे। गामेसँ स्कूल अबै-जाइ छैथ।

जहिना सभ माता-पिताक इच्छा अपन बाल-बच्चाक पढ़ाइ-लिखाइ दिस रहैए तहिना चिन्तू मास्सैबक सेहो छैन्हे। ओना, गामक बगलेक गाममे हाइयो स्कूल आ मिडिलो स्कूल रहने ओहन अभिभावक जकाँ खरचो नहियेँ छेलैन जिनका होस्टलक खर्च आ ट्यूशन फी, स्कूलक खर्चसँ वृहत् जोड़ए पड़ै छैन। डेढ़े किलोमीटरपर स्कूल अछि तँए तीनू गोरे–माने बेटी आ जेठ बेटाक संग अपनो, संगे-संग स्कूल जाइतो छैथ आ अबितो छैथ। गामसँ गेने-एने होस्टलक खर्चो नइ होइ छैन आ साँझ-भोर अपने लग बैसा बेटा-बेटीकेँ पढ़ेबो करै छैथ जइसँ ट्यूशन-फी सेहो नहियेँ लगै छैन। धियो-पुतो चेष्टगर रहने आ अपनो दुनू परानी पैंतीस-चालीस बर्खक रहने बर-बेमारीसँ हटल छथिए। ओना, बर-बेमारीक कोनो ठेकान नहि अछि, तँए उम्रक बात नहियोँ अछि, मुदा ईहो तँ ऐछे जे जेते बर बेमारी बच्चा आ वृद्धकेँ होइए ओइ अनुपातमे बीचक उम्रबला–मोने चेष्टगर बच्चा भेला पछाइत आ वृद्धावस्थासँ पहिने–कम होइते अछि। तहूमे चिन्तूओ मास्सैबक आ परिवारोजनक जे दिनचर्या रहलैन ओ बेमारीक रोधक सेहो छैन्हे। तँए जँ कहियो कोनो मौसमी

छोट-मोट बेमारी होइतो छैन तँ ओहुना माने बिनु इलाजोक वा अपन घरेलू इलाज–जेना सरदीमे तुलसी-पातक करहा–सँ वा छोट-मोट डॉक्टरी इलाजसँ ठीक भऽ जाइ छैन, तँए बेमारीक ओइ रूप दिस नजरियो नहियेँ गेलैन जे भारी बेमारीक केहेन-केहेन भयंकर रूप होइए। जे रूप देखि परिवारोजन आ समाजो भगवानसँ प्रार्थना करए लगै छैथ जे 'हे भगवान! ऐ जिनगीसँ मरबे नीक, तँए धरतीसँ उठा लियौन..!'

जहिना बेमारीक चपेटमे चिन्तू मास्सैब अखन तकक जिनगीमे कहियो नइ पड़ल छला तहिना पढ़ाइयो-लिखाइमे नहियेँ पड़ल छला। तहूमे बीस बर्ख पूर्व अपने पढ़ने छला, जइसँ आजुक पढ़ाइ-लिखाइसँ सोलहन्नी अनभुआर तँ नहि, मुदा अनभुआरो नइ छला सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। अनभुआरो-अनभुआरमे अन्तर अछिए। अन्तर ई जे दोसरकेँ देखलो पछाइत आ गप-सप्पक क्रममे बुझबो-सुझब, मुदा बेवहारिक रूपमे नइ केलहा अनभुआर आ दोसर ओ भेल जे ओहू दुनूसँ अनभुआर रहल। माने ई जे छोट-मोट वा सीमित जिनगी रहने ने दोसरकेँ देखबे करैत आ ने गप-सप्पसँ बुझबे करैत। चिन्तू मास्सैब ऐ दुनू कारणसँ अलग अनभुआर छैथ। अलग ई जे अपनो तँ एम.ए. तक पढ़नहि छैथ। मुदा तइमे भेलैन ई जे एक तँ नवकबरिये लोक छला, दोसर पिताक जुमौल खर्च रहैन, तँए खर्चपर धियाने ने गेलैन। मुदा पढ़ाइपर धियान रहने नीक जकाँ एम.ए. पास तँ कैये नेने छला। तीस हजारक नोकरियो भइये गेलैन जे महिने-महिने बैंकसँ दरमहो भेटते छैन, तँए कहियो एहेन भेबे ने केलैन जे पाइ दुआरे काज मारल गेल होइन। तेतबे नहि, अपनोसँ प्लेन पेपर जकाँ मास्सैबक पत्नी–मनमोहनी–क जिनगी रहलैन। अपन खेतक परियाप्त उपजा, खाली कोठीसँ चाउर-दालि निकालि-निकालि मनमोहनी भानस करैत रहली आ बजारक चाह पत्ती-

चिनीसँ चाह बनबैत रहली, तँए मनमोहनी किए कहियो ई बुझितैथ जे बिनु दूधोक चाह बनै छै आकि चिन्नीक बदला नूनोसँ लोक काज चलबैए वा बिनु चाह पीनहुँ जिनगी जीबैए।

जहिना पढ़ाइ-लिखाइ आ बर-बेमारीक बेवहारिक पक्षक बोध दुनू परानी चिन्तू मास्सैबकेँ नहि छेलैन तहिना पारिवारिक काजक सेहो नहियेँ छेलैन। पिताक अछैत माए मरलैन जइमे सभ क्रिया-कर्म पिते सम्हारने रहैन, अपने खाली माइक मुखाग्निक संग गरदेनमे उतरीटा नेने रहैथ, कहैले तँ एकभुक्त करैत रहैथ मुदा सबेरमे जलखैयो करिते छला आ चाहो पीबते छला। तहिना पितो बेरमे भेलैन, अपने मुखाग्नि दए उत्तरी लेलैन आ बाँकी क्रिया-कर्मक गारजनी मामा सम्हारि देने रहथिन। अपने तँ परिवारक ओहन भारी काज रहितो जे तेरहे दिनमे सम्हारए पड़ैए, जइमे काजक धुमसाही भइये जाइए, तहूमे काजसँ अलग भऽ भरि दिन गरूड़-पुराण पढ़बो करैथ आ सुनबो करैथ, तहीमे समय कटि गेलैन। ओना, खर्च अपने भेल रहैन जे बैंकक हिसाबमे छेलैन तँए ठौर-ठेकान लगले बिसैर गेला। बिसरबो केना ने करितैथ। मासे-मासे तीस हजारक आमदनी रहबे करैन।

दरबज्जापर बैसल चिन्तू मास्सैब हाक दैत मनमोहिनी आ बेटी कामिनीकेँ शोर पाड़लैन। सभ अँगनेमे रहैथ तँए लगले दुनू गोरे लग आबि गेलैन। अबिते पत्नीकेँ कहलखिन-

“ऐबेर कामिनी मैट्रिक पास करबे करत। पढ़ैमे नीक अछिए। कोनो विषय एहेन छइहे नहि जइमे मिसियो भरि शंका फेल करैक छै, तँए आगूक पढ़ाइक विचार पुछब अछि।”

बेटीकेँ आगूक पढ़ाइ सुनि मनमोहिनीक मनमे मोहैन चललैन। मोहैन चलिते मनमे रंग-रंगक विचार जहिना सभ माएकेँ जगैत तहिना मनमोहनीकेँ सेहो जगए लगलैन। जगिते बजली- “लड़का-

लड़की मिला गाममे पनरह गोरे मैट्रिकमे अछि, तइमे अहीं कहू जे हमर बेटी केकरासँ कम चन्सगर अछि। जँ एहेन बेटीकेँ चान्स नहि भेटौ तँ केहेनकेँ भेटउ।”

ओना चिन्तू मास्सैब पत्नीक आगूमे पुरुख पात्र छैथ, मुदा मनमोहनीक जे तर्क भेल ओ चिन्तू मास्सैबकेँ मोहि लेलकैन। मोहैक कारण भेलैन जे सचमुच स्कूलमे कामनी नीक विद्यार्थी अछिए। अहीमे सँ ने जे जेहेन अछि–माने पढ़ैयो-लिखैमे आ आर्थिक दृष्टिसँ सेहो–ओ ओहेन बनबे करत। ओना एम.ए. पास चिन्तू मास्सैब छैथ, मुदा जहियासँ कौलेज छोड़लैन तहियासँ ने एको पाइक किताब कीनि पढ़लैन आ ने समैयेक बचत होनि जे विचारवान लग बैस जिनगीक विचार करितैथ। कौलेजसँ टटका पढ़ि कऽ निकलले छला, हाइ स्कूलक किताब पान-सात साल पहिनहि पढ़ि चुकल छला, तँए ढलानपर जहिना निच्चाँ मुहेँ गाड़ी ढलकैए, जे बिना तेलो-मोबिलक अपना गतिसँ बेसी जोरसँ चलिते अछि, सएह बुझैमे चिन्तू मास्सैब हूसि गेला। हूसि ई गेला जे पैछला इतिहास तँ धियानमे रहलैन जे फल्लाँ साधारण परिवारसँ निकैल अपन उपार्जन करैत नीक डिग्री हाँसिल केलैन, मुदा भविस आ वर्तमानक परिस्थिति नहि आँकि सकला। ई नहि आँकि सकला जे प्रतिभा आइक प्रतियोगितामे पिछैड़ रहल अछि...। चिन्तू मास्सैब बजला- “अहाँक तँ दीब विचार अछि, जे अपनो मन कहैए।”

माता-पिताक विचार सुनि कामिनीकेँ अपन प्रकाशित भविस सोझमे एलइ। अपन उज्वल भविस, चाहे ओ काल्पनिक हौउ आकि वास्तविक, मुदा केकरा अधला लगै छै जे कामिनीकेँ लगैत। मन कलैश गेलइ। कलैशते जेना कामिनीकेँ मनसँ मुस्कुराहटक आवाज फुटए लगलै मुदा मुहसँ निकललै नहि। ओना, बोलीक रूपमे मुहसँ नहि फुटलै मुदा चेहराक रंग-रूपमे जरूर फुटि गेलइ।

लहलहाइत बेटीकक चेहरा देखि मनमोहिनीक मन भँसिया गेलैन। ओना अपना नइ बुझि पड़लैन जे हम भँसिया रहल छी, बिहुसैत बजली-

“अपना दुनू गोरे तँ माए-बाप भेलिऐ, बड़ करबै तँ पढ़ाइक खर्चक पुरती करबै मुदा पढ़ाइक पुरती तँ कामिनी अपने ने करत। तँए नीक हएत जे लगेमे कामिनी बैस सभ बात सुनबे केलक। अपन निर्णय अपने करह।”

पत्नीक विचार चिन्तू मास्सैबकेँ मिसियो भरि अधला नइ लगलैन। पत्नीक विचारमे भँसियाइत बजला-

“बेस तँ विचार अछि। बाजह कामिनी अपने मुहेँ जे माए-बापक विचार केतो अधला बुझि पड़ै छइ।”

तीन मास पहिने कामिनी मात्रिकसँ नानीक सेवा कऽ आएल छल। माने ई जे नानीक टाँग टुटि गेल छेलैन। ओसारपर पीढ़ियामे तेना ठेँस लगि गेल छेलैन जइसँ खसि पड़ली। दहिना पैरक घुट्ठीक कील छिटैक गेल छेलैन, जइ दुआरे दरभंगा डॉक्टर ऐठाम जाए पड़ल छेलैन। ओही इलाजक दौड़मे कामिनी सेहो दरभंगा गेल छल। दुनू परानी डॉक्टर रहने दुनू रंगक रोगीक पहुँच डॉक्टर ऐठाम रहबे करैन। नवतुरिया बच्चा कामिनी, दुनू परानी डॉक्टर, कामिनीकेँ बच्चा बुझि लगेमे बैसा रोगियो देखैत आ इलाजो करिते रहैथ। जइसँ कामिनीकेँ कोनो काज उकड़ू नहियेँ बुझि पड़इ। तैसंग आमदनी सेहो देखने रहए। साओन मासक बरखा जकाँ पाइ झहरैत। हिया कऽ कामिनी डॉक्टरकेँ देखलक तँ बुझि पड़लै जे हमहूँ पढ़ि कऽ डॉक्टर बनि खुशहाली जिनगी जीब सकै छी। जे कामिनीक मनमे गड़ि गेल छल।

ओना, जहिना पहाड़क जलधार हौउ आकि मेघक जलधार,

ओ जखन निकलैए तखन थोड़े कोनो धारक नाओं आकि सरोवर-डबराक रहैए ओ तँ आगू बढ़ला पछाइत होइए तहिना कामिनीक चेतनशक्ति सेहो छेलैहे...। बाजल-

“बाबू, माता-पिताक आसिरवचन बेटा-बेटीकेँ सहज स्वीकार कए लेबाक चाही। जँ अपने दुनू गोरेक एकमुहरी विचार अछि तँ तेही मुहेँ कहै छी। हम डॉक्टरी पढ़ब।”

एक तँ ओहुना लोकक एहेन धारणा बनियेँ गेल अछि जे डॉक्टरी सभसँ नीक पढ़ब छी। ओना अनेको किस्मक डॉक्टरी ज्ञान अछि, से अखन नहि। अखन मनुक्खक चिकित्सक रूपमे डॉक्टर।

कामिनीक मुहसँ विचार खसिते जहिना मनमोहिनी तहिना चिन्तू मास्सैब सेहो ऊपरे लोकि लेलैन। जइसँ जेते खुशी कामिनीक हृदयमे छल तइसँ केते गुणा बेसी दुनू परानी–माता-पिताक–मनकेँ मोहित कए लेलकैन। नोकरीक तीस हजार दरमाहा सोझेमे रहैन तँए पढ़ैक खर्चपर नजैर किए जइतैन। भस्मासूर जकाँ दुनू परानी आसिरवचन दइले मुँह खोलैसँ पहिने एक-दोसरक मुँह दिस तकलैन जे पहिने के बाजब।

अही गुन-धुनमे दुनू परानी–चिन्तू मास्सैब–रहबे करैथ कि तैबीच विवेक बाबू पहुँचला।

विवेक बाबू सेहो हाइये स्कूलमे चिन्तू मास्सैबक संग नोकरी करै छैथ। शिक्षक छैथ। ओना, विवेक बाबू चिन्तू मास्सैबसँ उमेरोमे जेठ आ दू साल पहिने एम.ए. सेहो केने रहैथ।

विवेक बाबूकेँ एला पछाइतो मनमोहिनीक मनमे जेठ-छोटक विचार नइ जगलैन। विचार नइ जगैक कारण छेलैन जे ममियौत भाइक अनेमे विवेक बाबू लगै छेलखिन। बच्चेसँ मात्रिक एने-गेने मनमोहिनी निधोख छथिए।

अबिते विवेक बाबू देखलैन जे परिवारमे खुशीक लहैर दौड़ रहल अछि, किछु बात जरूर अछि। मनमे खुशीक कारण बुझैक जिज्ञासा जगिते रहैन। मुदा मनेमे असथिर चित रहने उठलैन जे जहिना सोग-पीड़ा केकरो छिपौने नइ छिपैए तहिना ने खुशियो-खुशियाइए जाइए। ओना, जिनगी परखैक तीक्ष्ण नजैर विवेक बाबूक तँए जिनगियो तँ हँसी-ठठा नहियेँ छी जे एकबेर कहि देबै जे-जोगिरा सर्र-र्-र्...। आ जोरसँ हँसि देबै तइसँ जिनगी हँसै-जोकर भऽ जाएत, एहेन बुझब बचपना भेल। ओना विवेक बाबूक परिवार चिन्तूए मास्सैब जकाँ छैन। हुनको दू लड़की आ दू लड़का छैन। मुदा जहिना कियो ज्योतिषी अपन जीवन रेखा देखि अपन भविस गुनि लइ छैथ तहिना विवेको बाबूक स्पष्ट सोच छेलैन।

स्पष्ट सोच ई जे आइक परिवेशमे हमरा सन लोककेँ जिनगी बोझिल बनबैक बेवस्थामे पाछू धकेल रहल अछि। जेते बात (विषय) बुझैले पहिने महिना दिन किताब धाँगए पड़ैत तैठाम मशीनी युग भेने आइ घन्टा-सकेण्डक खेल बनि गेल अछि। तैठाम अपने ने विचारए पड़त जे अपन की ओकाइत अछि। हाइ स्कूलक शिक्षक छी, जँ बेटा-बेटी प्रोफेसर बनि जाए, वा कोनो बेवसायी बनि जाए आकि अपन जिगनी समयानुकूल चलबैक लूरि भऽ जाइ तँ वएह भेल जिनगी आ परिवारकेँ आगू बढ़ब। तैठाम जँ तहूसँ आगूक घाटसँ हेलए चाहै छी तँ एक नजैर विचार केलाक पछाइत हेलब।

एक तँ भैयारीक अनेमे विवेक बाबू, दोसर चिन्तू मास्सैब सन पति जिनकर 'गनल कुटिया नापल झोर' सन जिनगी छैन जे भरि दिन विद्यालयक नोकरीक भाँजमे रहै छैथ, तीस हजार पबै छैथ। ने कहियो नूनक दुख होइ छैन आ ने तेलक। तैठाम जेहने चिन्तू मास्सैब बुझैमे अगिया-बताल छैथ, तेहने पत्नियोँ छथिन। एक तँ भैयारीक सम्बन्ध विवेक बाबूक संग मनमोहनीक अछि तैपर बेटीमे

डक्टरक रूप देखैत तँए बजैले मनमोहिनीक मन उबियाइते रहैन। बजली- "भैया, अहाँक भगिनी डॉक्टर बनत, से असिरवाद दियौ।"

बहिनक बात सुनि विवेक बाबूक विचारमे जोरक धक्का लगलैन। मन कहलकैन- मुहसँ असिरवाद देने जँ होइत तँ केकरा के असिरवाद नइ दइए, तखन होइ किए ने छइ? विवेक बाबू बजला तँ किछु नहि मुदा मुस्किया जरूर लगला। खुशीसँ मुस्कियेला कि हँसीसँ मुस्कियेला से तँ विवेक बाबू जनता कि चिन्तू मास्सैब आकि मनमोहिनी बहिन जनथिन, मुदा वातावरणमे थोड़ेक नरमी जरूर आएल।

वातावरणमे नरमी अबिते चिन्तू मास्सैब पत्नीकेँ कहलखिन-

"विवेक भाय अहींटाक भाए नहि छैथ, जे चाह नहियोँ पीएबैन तँ बहिन बुझि केतौ लोक लग नइ बजता।"

खग जानए खगक भाषा, एक तँ मनमोहिनीक मन बेटीकेँ डॉक्टरक रूपमे सीकपर टँगल रहबे करैन तैपर भाइक असिरवाद सेहो लेब छैन किने, तँए मनमे चाहक बदला कॉफी नहि उपकैन सेहो केहेन हएत। तैयो मनमोहनी चाहे बनबए विदा भेली। जहिना चिन्तू मास्सैब विवेक बाबूक विचार सुनैले कान पथलैन तहिना विवेक बाबू चिन्तू मास्सैबक मुहसँ कामिनीक विषयमे सुनए चाहै छला। किएक तँ अखन तक मौगी-मेहरिक बात मनमे नचै छेलैन। नचबो केना ने करितैन, एक तँ सहकर्मी चिन्तू मास्सैब छथिन, दोसर एम.ए. पास सेहो छथिए, तँए विवेक बाबूक अपन मन केना मानितैन जे हम जे बुझै छी से चिन्तू मास्सैब नइ बुझै छैथ। अही द्वन्द्वमे दुनू गोरे लटकल छला। मुदा दू गोरेक बीच जखन गुमा-गुमी पसैर जाइत अछि तँ वातावरणमे किछु मोड़ अबिते अछि।

वातावरणमे मोड़ अबिते चिन्तू मास्सैब बजला- "भाय साहैब,

ऐ साल पाँच हजारक बढ़ोत्तरी शिक्षकक जिनगीमे भारी उछाल आनत।”

ओना, चिन्तू मास्सैब पाशा बदैल बाजल छला, मुदा विवेक बाबू पाशा पैसैकेँ रहलैन। तँए बहटारैत बजला-

“सरकारक बात अखन अखबारेमे आएल अछि, सहर-जमीनपर अबैत-अबैत केते दिन लागत आकि नहियेँ औत, तेकर कोनो ठेकान अछि।”

तही बीच मनमोहिनी चाह नेने पहुँचली। आगूक विचारकेँ जहिना चिन्तू मास्सैब रोकलैन तहिना विवेक बाबू सेहो रोकला। मुदा लगले विवेक बाबूक विचारमे मन धक्का मारलकैन। धक्का ई मारलकैन जे जहिना लगक लोक चिन्तू बाबू छैथ तहिना मनमोहिनी बहिन सेहो छी, आगू दिन जँ कोनो संकटमे फँसता तँ लगक लोक रहने पहिने हमरे ने कहता। तँए परिवारक जे दशा-दिशा अछि ओ अपने जे बुझै छी से जरूर कहबैन। भऽ सकैए जे हमर विचार प्रतिकूले भऽ जाइन। तइले तँ बड़ भारी जवाबदेहियो तँ नहियेँ रहत, कहबैन जे ओइ दिन जे बुझै छेलौं तइ अनुकूल बाजल छेलौं, आइ ओइसँ आगू बुझै छी...।

विचार उठैत-उठैत विवेक बाबूक मन मानि गेलैन जे अपन विचार जरूर दुनू गोरेक बीच रखि दिऐन, भलेँ तीत लगैन आकि मीठ...।

तैबीच तीन-चारि घोंट चाह पीब नेने छला। मनमोहिनी से कान ठाढ़ केने जे भैया थोड़े गड़बड़ असिरवाद कामिनीकेँ देथिन।

शान्तचित्तसँ विवेक बाबू बजला-

“बहिन, केकरा नइ मनमे रहै छै जे परिवार आगू नहि बढ़ए मुदा ओ रब्बड़क बैलून नइ ने छी जे हवा भरि अकासमे उड़ा देबइ।

विवेकशील मनुक्खक डेग तँ अपन पाछूसँ अबैत जिनगीकेँ अँकैत ने आगू उठत।”

ओना, विवेक बाबूक विचारकेँ मनमोहिनी नीक जकाँ नइ बुझली मुदा अधा-छिधा चिन्तू मास्सैब जरूर बुझलैन। ओना मनमोहिनीक मनमे उठए लगलैन जे ई केहेन हएत जे भैयाकेँ कहबैन अहाँक बात नइ बुझलौं! तँए मनमोहिनी चुपे रहब नीक बुझली। पत्नीकेँ चुप देखि चिन्तू मास्सैब बजला-

“भाय साहैब, तेहेन अलंकारमे अपने बजलिऐ जे बहिन बुझने हेती कि नहि। असल तँ हुनका ने बुझाएब अछि। बेटाक बात रहैत तँ कनी जोरो करितौं मुदा बेटीक बात छी किने। ओ तँ माइयेक ने...।”

चिन्तू मास्सैब जइ हिसाबे बाजल होथि मुदा विवेक बाबू अपना हिसाबे बजला- “बहिन, बेटीक प्रश्न अछि, तँए आइक परिवेश की अछि से कहै छिअ। कामिनी डॉक्टरी पढ़त नीक बात, नीक विद्यार्थी अछिए, मुदा आइक परिवेशमे बेटी पैघ समस्या बनि गेल अछि।”

‘पैघ समस्या’ सुनिते मनमोहिनी चौंकैत बजली- “से की?”

बहिनक जिज्ञासा देखि विवेक बाबूक मनमे चैनक हवा लगलैन। बजला-

“बहिन, एक तँ अपना सन-सन परिवारमे डॉक्टरी शिक्षा ओकाइत सँ बहार अछि। जइ हिसाबक खर्च अछि आ जे सामाजिक रूप-रेखा बनि गेल अछि तइमे बेटीकेँ डॉक्टर बनब आरो बोझिल...।”

बिच्चेमे मनमोहिनी बजली- “से की?”

बहिनक बढ़ैत जिज्ञासा देखि विवेक बाबूक मनमे उठलैन जे नीक हएत, एक-एक प्रश्नपर दुनू परानीक विचार लइत चली...।

बजला- “बहिन, जन्मसँ लऽ कऽ जाधैर बेटीक बिआह होइए ताधैरिक भारी बोझ माए-बापक कपारपर ऐछे किने?”

मनमोहिनी-

“से तँ अछि, मुदा बुझलौं नहि।”

विवेक बाबू-

“जेते खर्च आ मेहनत बेटीकेँ डॉक्टर बनबैमे लगेबह, से समाज बुझतह? जेते पढ़ैमे खर्च हेतह तइसँ बेसी बिआहमे दहेज सेहो लगतह। अहू विचारपर ने नजैर राखए पड़तह।”

मनमोहिनी ठमैक गेली, मुदा चिन्तू मास्सैबक मन अखनो पत्नीक विचारमे लटकले छेलैन। बजला-

“कनी सोझरा कऽ बजियौ ने।”

विवेक बाबू-

“बेकती आ परिवार-ले मूल-भूत जे खगता अछि, ओइ सभपर नजैर रखक चाही। जँ से नहि रहत तँ कखनो ढनमना जाएत आ भाग्य-तकदीरकेँ कोसए लगबै। परिवारमे चारिटा बच्चा अछि, चारूक लेल अपन ओहन सोच बनाउ, जइसँ बेटा-बेटीक आगू भविसमे दोखी नइ बनी।”

❑

शब्द संख्या : 2621, तिथि : 11 मार्च 2017

Notes